भारतेन्दुकालीन व्यंग-परम्परा

(व्यंग्य-परिहास युक्त निबंधों का संकलन)

सम्पादक—

ब्रजेन्द्र नाथ पाण्डेय, एम० ए०

प्राप्तिस्थान—

बम्बई बुक डिपो,

१४५।१, हरीसन रोड,

कलकत्ता—७

प्रकाशक—

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स

ज्ञानवापी, वाराणसी

वितरक—

बिहार ग्रंथ कुटीर

खजांची रोड पटना—४

प्रथम संस्करण

बुद्ध जयन्ती

२०१२

मूल्य

ढाई रुपये

मुद्रक—

गौरीशंकर प्रेस,

वाराणसी

यह पुस्तक

श्री पांडेय हिन्दी साहित्य के एक उत्साही और सतर्क अध्येयता हैं। इनमें अच्छी सर्जनात्मक प्रतिभा भी है। प्रस्तुत संकलन में इन्होंने बड़े मनोयोग और विवेक से भारतेन्दु युग की कतिपय उच्च कोटि की व्यंग्य विनोदमयी प्रतिनिधि रचनाओं को इतने थोड़े स्थान में एकत्र कर दिया है। पाठकों के हाथ में हम प्रसन्नता पूर्वक सुयोग्य सम्पादक द्वारा संग्रहीत और संपादित प्रस्तुत रचना दे रहे हैं। हमें पूर्ण आशा है कि उनका इनसे पर्याप्त मनोरंजन होगा। उच्च कोटि की हास्य विनोद-पूर्ण रचनाओं से परिचय होगा और भारतेन्दु युग के साहित्य की जिन्दादिली से उनका साक्षात सम्पर्क स्थापित होगा। उल्लेख्य है कि प्रस्तुत संकलन की सभी रचनाएं परिश्रम पूर्वक भारतेन्दु युगीन पत्र पत्रिकाओं से चुनी गई हैं और संकलन के रूप में पहले पहल हिन्दी जगत् के सम्मुख रक्खी जा रही हैं।

क्रम-सूची

—+—

भारतेन्दु युग की भाषा और शैली

भारतेंन्दु युग में भाषा कि यह विशेषता थी कि जो कुछ बोलचाल में भाषा प्रयोग की जाती उसे उसी प्रकार लिख कर साहित्य का निर्माण भी उसी बोलचाल की भाषा में करते थे। इसलिये भारतेन्दु युग के लेखक इस्का (इसका) उस्का (उसका) सुन्ना (सुनना) इत्यादि लिखते थे।

लेखों में तद्‌भव, प्रातंज या स्थानीय शब्दों का बाहुल्य दृष्टिगोचर होता है तद्‌भव शब्द जैसे ब्राम्हन (ब्राम्हण) थन (स्तन। कोख (कुक्षि) मानुष मनुष्य) गोरू (गाय)।

प्रातंज अथवा स्थानीय शब्द समूह जैसे मुड़ियाना, झपकी, फुदनी, हथकन्डा, रन्जामुन्जा, पहिराय उढ़ाय, मूरत, टिटिलटेटिल, ढच्चर ढच्चर पिन्न पिन्न इत्यादि।

इस समय की भाषा में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ विशेष हैं। भाषा ऐकार ओकार बहुला पाई जाती है जैसे नौ।नौ मोज (मौज) यही खातर (यही खातिर) इत्यादि कहीं कहीं शब्दों को अशुद्ध प्रयोग भी प्राप्त होते हैं। भाषा में शब्द क्रीड़ा भी बहुत स्थानों पर दिखलाई पड़ती है। जैसे मुख्तार (मुख से तार) हाकिम (हा किम्) हाँ क्या करता है, इन निबन्धों में तत्सम, तद्‌भव, देशी शब्द तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग भी प्राप्त होता है।

मुहाविरेदार भाषा, मार्मिक सूक्तियाँ हृदय को आनन्दित कर देती है। संस्कृत की सूक्तियाँ श्लोक भी निबन्धों में पाये जाते हैं विदेशी शब्दों और वाक्यों को भी अपने भाषा के साथ रखने का सुन्दर यत्न हैं जिससे व्यंग और हास्य में सहायता प्राप्त होती है। जैसे उर्दू फारसी अंग्रेजी मिश्रित पद्य तथा दोहे और शेर का बेधड़क प्रयोग करते थे।

शैली

प्रांजल शैली, अलंकारिक शैली, प्रवाह शैली, वार्तालापशैली, प्रदर्शनशैली, वर्णात्मक और व्यङ्गात्मक शैली, नाटकीय कथोपकथन की शैली, स्तोत्र शैली, व्यंगात्मक विनोद पूर्ण चित्र संवाद शैली, इत्यादि का प्रयोग उस युग के निबन्धों में होता था। निबन्धकारों की भाषा और शैली अपने अपने रुचि के अनुसार प्रासंगिक होती थी। निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा निबन्धों की भाषा और शैली के रूप दिखलाई पड़ते हैं—

१—शुद्ध हिन्दी भाषा का रूपः—

"मर्द मर्द लिखे जावे और स्त्रियाँ स्त्रियाँ, तो हीजड़ों को हीजड़ों ही की गिनती में क्यों न लिखा जावे ? ईश्वर ने जब उनका स्त्री पुरुष दोनों ही से विलक्षण बनाया है तो मनुष्य गणना में उनका वह लक्षण लोप क्यों किया जावे ? इसके सिवा जब हीजड़े मर्द लिखे गये तो मर्दों और हीजड़ों में पहचान ही क्या रही ?

२ संस्कृत शब्द युक्त भाषा तथा श्लोक जिसमें वर्तमान है—

"हे ललना ललाम ! हे कुलकामनियों की आदर्श स्वरूप ! हे गुणागरिमाविशिष्ट ! तुम अपने स्वाभाविक सहज गुण से चिराभ्यासी योगियों की सहिष्णुता को सहज ही में जीत लेती हो। हे वंश प्ररोह जननी ! यह लोक परलोक दोनों में सुख देने वाले शुद्ध सन्तान के पैदा होने की बीज भूमि तुम्ही हो।

"सन्तितः शुद्ध वंश्या हि परत्रेहच शर्मणे"

देवी, तुम्हारे संख्यातीव अनगिनत दिव्य गुणों को गिन चुकता कर देने की किसकी सामर्थ्य है।"

३—उर्दू फारसी बाहुल्य शब्दों का प्रयोगः—

"चौबे जी आज आप बड़ी बुजर्गाना बातें करते हैं आप का हौसिला बहुत बड़ा दिखलाई पड़ता है, आज तक आपने कभी मेरे साथ इस तरीके की बात चीत नहीं की थी, आप की बातों से तो कुछ और ही जाहिर होता है।"

"एक बदमाश जो कई बार कैद हो चुका था फिर किसी जुर्म में गिरफ्तार होकर फ़रासीस के एक मजिष्ट्रेट के सामने हाजिर किया गया। मजिष्ट्रेट ने लानती के तौर पर कहा कि "बड़ी शर्म की बात है कि तुम्हें फिर अपनी हर्कतों की बदौलत अदालत में आना पड़ा, अब तुम्हारी इसी में बिहूतरी है कि बुरी सुहबत में वक्त खराब करने के बदले मिहनत की आदत डालो," मुजरिम बोला, "बुरी सुहूबत! भला आप ऐसा फर्माते हैं जब कि आप जानते हैं कि मेरा बहुत जियादा वक्त पुलिस और मजिष्ट्रेटोंके दर्मियान सर्फ होता है।"

४—अंग्रेजी शब्दः—

"यदि यह न हो तो हमको डिनर होम निमन्त्रण करो, बड़ी बड़ी कमेटियों का मिंबर करो सीनट का मिंबर करो, जसटिस करो, आनरेरी मजेष्ट्रेट करो, हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

भारतेन्दु युग के निबन्धकार भाषा के मध्यम मार्ग का अनुसरण करते थे। जिससे संस्कृत युक्त पदावली, विदेशी शब्द तथा प्रांतज भाषा का प्रयोग होता था। भाषा और शब्दों के चलते रूप को ही अपने निबंध में स्थान देते थे। भारतेन्दु ने भाषा की समस्या सुलझा कर हिन्दी को नये चाल मे ढाल दिया।

बुद्ध जयंती २०१३ वि०
औतपुरा, वाराणसी।

—ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय
"दुःखन"

मूषक स्तोत्र

हे गणेशजी के वाहन महागणेशमूषक ! छोटा सा रूप धारण करके कई मन के मोटे ताजे गणेश जी को उठा ले जाना था तो आपका ही का काम है या इष्टीम ऐन् जीन् का ही काम है । यदि गणेशजी हजारो विघ्न नाश करते है तो आप करोड़ो अवश्य नाश करेगें तिसमें अपने ही स्तोत्र में ? इसी से हम आप ही के स्तोत्र में आप ही का मंगलाचरण करते है ! " ओं श्री मन्महा महा गणाधिपतये मूषकेशाय नमः" हे मूसे राम मामा !'बालक जब उनके दुग्ध के दांत गिरते है, तब आपके बिल में रख देते है । और आपसे प्रार्थना करते है कि हमें अपने से दन्त दो, पर आप न उनके लेते न अपने देते, इसी से न आप उधो के लेने में न माधो के देने में अतएव आपको राम राम ।

हे मूसासिंह महाराज ! आप दान करने में तो राजा कर्ण हैं बहुधा बड़े आदमियों कि परम सुकुमारी कुमारी भूषण के भार से इधर उधर अपने आभूषण रख देतीं, आप चट उन्हें डोरा काटने के लोभ से बिल में खींच ले जाते जब कोई भाग्यवान आपके बिल स्वर्ग का मार्जन करता तो उसे सुवर्ण के दाने, मोतियों के गुच्छे, हीरे की कनी मिलती हैं, अतएव आप की बिल्ली पर विजय हो, मुझ दरिद्र ब्राह्मण को भी भिक्षान्देहि कृपावलम्बन करी हे मूषकाधीश्वरी !"

हे मूसामल भगत ! हमने पुराणों से सुना है कि एक दिन आप किसी दीपक की जलती बत्ती मुंह में दाब कर कहीं भगवान मन्दिर में चले

गये, भगवान ने आप को दीपक दिखलाने वाला जान कर बैकुण्ठ दिया, अतएव जय श्री कृष्ण ! जय श्री कृष्ण।

हे मूषक महा मति ? हमने रूक्मिणी मङ्गल में सुना है कि जब श्री कृष्ण ने अपनी बरात में गणेशजी को बहुत मोटे अतएव हास्यास्पद होने के कारण निमंत्रण नहीं दिया, तो तुमने बरात का सारा रास्ता पोला कर दिया ज्योंही बरात चली कि धमाधम गड्ढो में गिर पड़ी, लाचार श्री कृष्ण को गणेश बुलाने पड़े, हम अभी से अपने पड़पोते के विवाह का निमंत्रण दिये देते हैं, जरूर पधारियेगा।

मूसा पैगम्बर ! दुनियां के आधे लोग तुम्हे परमेश्वर का दूत मान कर पूजा करते है, अतएव हमारा भी आदाब अर्ज।

हे मिस्टर रैट् ! एक दफा पूना के निकटस्थ जिलो में आपने हजारो खेतों का नाश कर दिया तब लाचार सरकार ने रैट् कमीशन बिठलाया, पर आप ऐसे बे शरम—कि अब तक जीते है अतएव गुड्मोर्निंग्।

हे चतुर्भुज् ! आप की चारो भुजा धर्म अर्थ काम मोक्ष देती हैं, और दूसरे पक्ष में आप के वह पांव भी हैं इससे आप चतुर्भुज और चतुष्पाद भी हैं केवल शंख चक्र या फिटन की देर है।

हे बगुलाभगत लोग तो बगुला को ही बहुत बदनाम करते हैं पर मेरी बुद्धि में आप उसके भी गुरू है, जैसा आप ध्यान लगाना, निगाह चूकने पर माल उड़ाना, देखते देखते लोप हो जाना जानते हैं। बगुला के सहस्र पुरुष भी नही जानते। इस कर्तव्य में तो आप "तांतिया भील" हैं।

हे गोपाल ! दिन में तो आप बिल रूप ब्रज में बैठे बैठे गोचारण करते, पर जहां रात्रि हुई कि आप अपनी गोपियों को लेकर गृहस्थियों में घरों में रास लीला करते अतएव हे रासबिहारी ! हम आप की नई रास-पंचाध्यायी बनावेगें !

हे राजस की कतरनी यदि चलुकमान हकीम ने आप के पकड़ने के लिये पिंजड़े बनवाये, पर आप उनको भी काट कर निकल जाते, अतएव आप बम्बई कलकत्ते की पिंजरापोल में भी न रहेगें, हा इसी से हम भी मरे, और आप भी मरे!

हे इतिश्री इतिश्री! शास्त्र में खेतो के नाश करने के लिये छः इति लिखी है, उनमें एक नम्बर आप का भी है। हम एग्रीकल्चर डिपार्टमेन्ट के डाइरेक्टर साहब को परामर्श देते है कि आपके लिये कोई जल्दी तजवीज़ करें।

हे अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे! आप के अनेक रूप हैं! कोई छोटे बालखिल्य के समान, कोई मोटे भीमसेन के प्रमान, कोई खोटे रावन की सन्तान, कोई उपद्रव करने में शैतान के शैतान, बस हम आप की स्तुति गान करते है।

हे गुरू गोविन्द। सब जातियों में गुरू, पुरोहित, पादरी होते हैं, आप की जाति में भी पहाड़ी मूसा कुछ गौरवास्पद हैं, उसे देखकर आप कुछ डरते, पर जहां वह आप के साथ घड़ी दो घड़ी किसी गृहस्थ के घर में रहे कि आपने उनका अदब कायदा सब छोड़ा। इससे यह दृष्टान्त सच्च हुआ कि "गुरू गुड़ ही रहे और चेला चीनी हो गये।"

हे शिक्षा गुरू वा परीक्षा गुरू! सब का कोई न कोई गुरू अवश्य है, आप ने भी यह चीरहरण माखन चोरी अवश्य किसीसे सीखी होगी, कृपापूर्वक अपनी भगवद्गीता तो सिखाइये।

हे प्रवाद प्रतिवाद। संसार का यह प्रवाद भी आप ही में घटता है कि जिस हंड़िया में खाय, उसी में छेद करे। बस आप से बढ़ कर और कौन परच्छिद्रान्वेषी है?

हे मुक्तिदाता! जब बिल्ली ने नौ सौ मूसे खा लिये, तब उसे ज्ञान हुआ, वह मक्के को हज करने गई, और उसे मोक्ष हुआ पर यदि वह सौ मूसे और खा लेती, तो फिर सदेह स्वर्ग को ही चली जाती।

हे सिद्धि श्री सर्वोपरि विराजमान सकल गुणनिधानं । आप की कहां तक स्तुति करें । आपके गुण गाते गाते हम तो क्या शेष शारदा भी थक गये, बस आप की प्रशंसा यही समाप्त करते हैं, और यह वर मांगते हैं, कि और सब कुछ चाहे काट डालिए, पर इस मूषकस्तोत्र को न काटिए। यह आप का उन्नीसवीं शताब्दी का सार्टिफ़िकेट् है इसे यत्न से अपने बिल में रखिए, और इसे गले में तगमे की तरह लटका कर निकलिए।

[श्री राधाचरण गोस्वामी]

नापित स्तोत्र

हे हमारे उष्णाता सन्तापित शिर के शीतल करने वाले नापित ! आप को प्रणाम है ! यदि आप न हो तो हमारी बड़ी दुर्दशा हो कि दाढ़ी बढ़कर हमें बकरा बनादे, सिर के बाल बढ़कर जटा हो जायें, प्रेत में और हम में कुछ भी भेद न रहे । लोग न मानें तो सन् १८७७ में जब बनारस में नाई और लुहारों का झगड़ा हुआ था, उस समय की तारीख देखलें । अतएव हे ब्रह्माजी के बाल बगीचे के माली आप को धन्य है ।

हे नापित महाशय ! सरकारी कर्मचारी रविवार को और शौकीन राजा बाबू बुधवार को अवश्य ही आप की पूजा करते हैं अतएव हे गतग्रह, अथवा रवि बुध को प्रकाशित होने वाले अर्द्ध साप्ताहिक पत्र ! आपको धन्य है !

प्रिय नापित ! यद्यपि तुम्हारे सभी यजमान होते हैं, पर धन पात्रों की हजामत दिन में दो दो दफा और गरीब को महीने में एक दफा भी नहीं पूछते, यदि कहीं मिल भी गये तो बहाना बतला दिया, अतएव हे विषम स्वभाव ! तुम्हें धन्य है !

बड़े बड़े मालदार तो गरीबों की हजामत बनाते हैं और तुम उन की भी हजामत बनाते, अतएव हे विष के विष, गुरू के गुरू ! तुम्हें धन्य है ।

आहा नापित! तुम्हारे बिना तो भारत वर्ष में कोई काम नहीं चलता—मुण्डन में तुम जब तक उपस्थित न हो, और अपना मन मानता नेग न धरालो, कभी नहीं हो सकता—यज्ञोपवीत में तुम्हीं से चांद् छुवानी पड़ती, और विवाह के तो तुम आद्याचार्य ही हो। फिर मरने पर काष्ठ चिता की अग्नि भी तुम्हीं लाते, और अन्त में श्राद्ध प्रायश्चित पर्य्यन्त पीछा नहीं छोड़ते, अतएव हे वेदमग्न! तुम्हें धन्य है।

देखो! जब किसी को पुत्र होता, तब तुम्हीं बधाई देते और जब किसी का विवाह होता, बुलावा भी तुम्हारे हाथ है फिर मरने पर गंगा प्राप्ति भी तुम्हीं सुनाते; अतएव हे चिट्ठी के दादे! टेलीग्राफ के पर दादे। और नोटिस के सरदादे! तुम धन्य हो।

प्रयाग राज जो सर्व तीर्थों का राजा है, वहां बिना तुम्हारा आश्रय किये शुद्धि नहीं होती। और सर्व पापों के आश्रय के शोका भी तुम्हीं छेदन करते, अतएव हे पतित पावन! हे तीर्थराज के सकल फल दाता वेणीमाधव! हे प्रयाग वाले पण्डों के रगड़ा! तुम्हें धन्य है।

गया, काशी, पुरुषोत्तम, द्वारिका, मथुरा, माया, जहां कहीं तीर्थ में जाइये, बिना तुम से भेट किये फल नहीं होता, अतएव हे पुराने ऋषियों की हां मे हां मिलाने वाले! हे सब भक्ष्या-भक्ष्य के खाने वाले! हे तीर्थों के सतीर्थ! तुम धन्य हो।

बड़े आदमियों की बैठकों में पंखा हांकना, पैर दबाना, मसखरापन करना तुम्हारा ही काम है, अतएव ऐ बड़े आदमियों के खिलौने! तुम्हें धन्य है।

जब कोई सन्यासी बैरागी, योगी आदि होता है, तब पहिले तुम्हीं से चोटी कटाता है, अतएव हे परमार्थ पथदर्शक! तुम धन्य हो, तुम बड़े पुण्यवान हो!

सम्बन्धी सम्बन्धियों में झूठ सच लगा कर तुम्हीं लड़ाई करा देते, कोई काम पड़ने पर सम्बन्धियों के यहां जा कर तुम्हीं छप्पन भोग उड़ाते,

और जो कोई तुम्हारी अच्छी सेवा न करे तो चट उसका काम बिगाड़ देते हो अतएव हे नारद जी! और हे दुर्वासा ऋषि! तुम धन्य हो!

रात्रि को अमीरों के पैर दाबते दाबते अनेकों की चुगली खाते, अनेक प्रकार की झूठ सच कथा कहकर उनका मनोरंजन करते अतएव हे चुगल खोरों के चचा! हे कथा बांचने वालों के जीविका हारी—तुम धन्य हो।

जिस प्रकार और जातियों ने इस समय उच्च जाति बनने का प्रयत्न किया, इसी प्रकार तुमने भी अपने को "न्यायी" अर्थात्" न्याय करने वाला" क्षत्रिय ठहराया, अतएव हे उन्नीसवीं शताब्दी के उन्नति शाली, हे रिफार्मर तुम धन्य हो!

ऐ विविध विशेष्य विशेषणस्पदी भूत परम प्रिय नापित! ऐ जहां गंगा तहां झाऊ, जहां ब्राह्मन तहां नाऊ। इत्यादि गड़बड़ स्मृति प्रति पादित महादेव! इस स्तोत्र पाठ का यह वर मांगते हैं कि जब हमें क्षौर की आवश्यकता हो, शीघ्र ही मिल जाओ। और हमारे लड़का लड़कियों के वर बधू अन्वेषण के समय ठग विद्या न लगाओ। वरन हमारे परिवार की सच्ची हितैषिता करो। टैक्स घटाओ और—काम आओ!

(राम च० गोस्वामी)

कङ्कड़ स्तोत्र !

कङ्कड़ देव को प्रणाम है देव नहीं महादेव क्यों कि काशी के कङ्कड़ शिव शंकर समान हैं ॥१॥

हे कंकड़ समूह ! आज कल आप नई सड़क से दुर्गा जी तक बराबर छाये हो इससे काशी खण्ड "तिलेतिले" सच हो गया अतएव तुम्हें प्रणाम है ॥२॥

हे लीला कारिन् ! आप केशी शकट वृषभ खरादि के नाशक हो इससे मानो पूर्वार्द्ध की कथा हो अतएव व्यासों की जीविका हो ॥३॥

आप सिर समुह भञ्जन हो क्यों कि कीचड़ में लोग आप पर मुंह के बल गिरते हैं ! आप पिष्ट पशु की व्यवस्था हो कि लोग आपकी कढ़ी बना कर आप को चूसते हैं ॥

आप पृथ्वी के अन्तरगर्भ से उत्पन्न हो । संसार के गृह निर्माण मात्र के कारण भूत हो । जल कर भी सफेद होते हो दुष्टों के तिलक हो । ऐसे अनेक कारण हैं जिनसे आप नमस्करणीय हो ॥

हे प्रबल वेग अवरोधक ! गरुड़ की गति भी आप रोक सकते हो और की कौन कहै इससे आप को प्रणाम है ॥४॥

हे सुन्दरी सिङ्गार ! आप बड़ी के बड़े हो क्यों कि चूना पान की लाली का कारण है और पान रमणी गण के मुख शोभा का हेतु है इससे आप को प्रणाम है ॥५॥

हे चुङ्गी नन्दन ! ऐन सावन में आपको हरियाली सूझी है क्यों कि दुर्गा जी पर इसी महीने में भीड़ विशेष होती है तो हे हठ मूर्त तुमको दण्डवत है ॥६॥

हे प्रबुद्ध ! आप शुद्ध हिन्दू हो क्योंकि शरद विरुद्ध हो आब आया और आप न बर्खास्त हुए इससे आप को सलाम है ॥७॥

हे स्वेच्छाचारित् ! इधर उधर जहां आपने चाहा अपने को फैलाया है। कहीं पटरी के पास पड़े हो कहीं बीच में अड़े हो अतएव हे स्वतंत्र आप को नमस्कार है ॥८॥

हे ऊभड़ खाभड़ शब्द सार्थ-कर्त्ता ! आप कोण मिति के नाश-कारी हो क्यों कि आप अनेक विचित्र कोण सम्मलित हो। अतएव हे ज्योतिषारि आप को नमस्कार है ॥९॥

हे शस्त्र समष्टि ! आप गोली गोला के चचा, छर्रों के परदादा, तीर के फल, तलवार की धार और गदा के गोला है इससे आप को प्रणाम है ॥१०॥

आहा, जब पानी बरसता है तब सड़क रूपी नदी में आप द्वीप से दर्शन देते हो इससे आप के नमस्कार में सब भूमि को नमस्कार हो जाता है ॥११॥

आप अनेकों के वृद्धतर प्रपितामह हो क्यों कि ब्रह्मा का नाम पितामह है उनका पिता पङ्कज है उसका पङ्क है और आप उसके भी जनक हो इससे आप पूजनीयों में एल० एल० डी० हो ॥१२॥

हे जोगा जिवलाल राम लालादि मिस्त्री समूह जीविका दायक ! आप कमानी भञ्जक, धुरी विनाशक, बारनिश चूर्णक हो केवल गाड़ी ही नहीं घोड़े की नाल, सुम बैल के खुर और कंटक चूर्ण को भी आप चूर्ण करने वाले हो इससे आपको नमस्कार है ॥१३॥

आप में सब जातियों और आश्रमों का निवास है। आप वानप्रस्थ हो। क्यों कि जंगलों में लुढ़कते हो। ब्रह्मचारी हो क्यों कि बद्ध हो। गृहस्थ हो, चूना रूप से, सन्यासी हो क्यों के घुट्टमघुट्ट हो। ब्राह्मण हो क्यों कि प्रथम वर्ण होकर भी गली गली मारे मारे फिरते हो। क्षत्री हो क्योंकि खत्रियों की एक जात हो। वैश्य हो क्यों कि कांटा बांट दोनों तुममें है शूद्र हो क्यों कि चरण सेवा करते हो। कायस्थ हो क्योंकि एक तो ककार का मेल, दूसरे कचहरीपथावरोधक तीसरे क्षत्रियत्व हम आप का सिद्ध कर ही चुके हैं इससे हे सर्ववर्ण स्वरूप तुम को नमस्कार है ॥१४॥

आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, अग्नि, जम, काल, दक्ष और वायु के कर्ता हो, मन्मथ की ध्वजा हो, राज पद दायक हो, तन, मन, धन के के कारण हो, प्रकाश के मूल शब्द की जड़ और जल के जनक हो, वरञ्च भोजन के भी स्वादु कारण हो क्यों कि आदि व्यजंन के भी बाबा जान हो इसी से हे कंकड़ तुमको प्रणाम है ॥१५॥

आप अंग्रेजी राज्य में श्रीमती महाराणी विक्टोरिया और पार्लमेण्ट महा सभा के आछत, प्रबल प्रताप श्री युत गवर्नर जनरल और लेफ्टेन्ट गवर्नर के वर्तमान हो साहिब कमिश्नर, साहिब मजिस्ट्रेट और साहब सुपरिनटेनडेन्ट के इसी नगर में रहते और साढ़े तीन-तीन हाथ के पुलिस इन्सपेक्टरों और कांस्टिबलों के जीते भी गणेश चतुर्थी की रात को स्वच्छन्द रूप से नगर में भड़ाभड़ लोगों के सिर पर पड़ कर रूधिर धारा से नियम और शान्ति का अस्तित्व बहा देते हो अतएव हे अंगरेजी राज्य में नवाबी स्थापक ! तुमको नमस्कार है ॥

यह लम्बा चौड़ा स्तोत्र पढ़कर हम बिनती करते हैं कि आप अब सड़ेसिकन्दरी बाना छोड़ो या हटो या पिटो ॥

मिस्टर बूट

गुडमोर्नीङ्ग । गुडनून्ज्ञ । गुडईवनिंग । गुडनाईट ! गुडबाई । बन्दगी। आदाब । तसलीमात दण्डवत् । प्रणाम-पालागन, जुहार ।

आप के विषय में लिखने को हमारी कलम बहुत दिनों से सुरसुरा रही थी दवात महीनों से उधार खा रही थी कागज हसों से झख मार रहा था अखबार दिनों से ताक लगाए था पर बहुत दिनों से अकल को अजीर्ण हो गया था बुद्धि को बुखार चढ़ा था आज जहालत का जुलाब और बे समझी का सिन्कोना खाकर तबियत दुरुस्त की अब भर-सक आप का गुन गावेंगे ।

मिस्टर बूट आप हैं हमारे प्यारे आंखों के तारे, अंग्रेजों के दुलारे, आप हैं काले विलायती खाले, अंधेरे घर के उजाले उनीसवींसदी के साले आप है अनमोल गोलमटोल पोलम पोल खाली ढोल बिलकुल बेबोल आप हैं बड़े-बड़े कड़े सड़े जमीन में पड़े मजबूत तड़े आप हैं पाद रक्षक सर्प तक्षक तैल, भक्षक और जेन्हलू मेनो के लक्षक आप हैं आप थाप तबले की थाप, फुट के नाप और छोटे-छोटे जीवों के सन्ताप साक्षात पाप और सब प्रकार की चरण दासियों के बाप के बाप अतएव अटल अखण्ड अडिग आप का प्रताप ॥

मिस्टर बूट आप का जन्म कभी से क्यों न हो पर वेद में तो आप का उपानहो के मंत्र में थोड़ा सा चर्चा है और स्मृति में भी व्रात्यस्तोम यज्ञ

के प्रकरण में वाले उपानह पहरने की विधि है, अतएव आप प्राचीन तत्वानु संधार्या जनों के सर्वस्व हैं फिर जो कुछ हो, एकोनविंशति शताब्दी के तो आप सूर्य्य है जितनी उन्नति हुई है वह भी आप ही के प्रताप से और आप की उन्नति हुई है वह भी आप ही के प्रताप से फिर देखिये, भारतवर्ष की जो इतनी उन्नति हुई है वह भी आप ही के प्रताप से। और विलायत के बड़े-बड़े सोदागर, दिल्ली के बढ़िया दुकानदार, कलकत्ते के चीना बाजार की जो इतनी उन्नति हुई है वह भी बुरा न मानिये आप ही के (न कहूँगा शरम आती है) प्र-प्र प्रताप से। और हम ऐज्यूकेटेड् लोगों की जो इतनी उन्नति हुई है कि जिसके भार से हिमालय धसका जा रहा है वह भी सच तो यह है कि आप ही के धारण करने से, क्यों कि आप को धारण नहीं किया कि पैर से उन्नति की बेड़ी आपसे आप पड़ गई अतएव जहां जहां चरण पड़त संतन के तहाँ तहां-बन्टा धार और सबूज कदम आप ही हैं। मिस्टर बूट ! यदपि आप की एक ही जाति है पर गधा घोड़ों की भिन्न-भिन्न श्रेणी और रंग रूप है आप के भी तथैवच। बूट, शू, ज गुरगावी मुण्डा, चपरौआ, चढ़ैमा इत्यादि अनेक श्रेणी हैं और रंग भी आप का काला, लाल बैगनी, भूरा, सफेद, गुलाबी आदि विचित्र।

अतएव आप का यथार्थ रूप नहीं कह सकते कि आप काले है या गोरे हैं। या काले गोरे दोनों है मिस्टर बूट। जगत् में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है जो राजदर्बार में प्रवेश कर सकें। सो पार्लामेन्ट आप के चरण तल से मर्दित, प्रिवी कौन्सल आप की चरण रज से रञ्जित, वाईसराय की कौन्सिल् आप की पदधूलि से धूसरित और प्राय सब छोटे बड़े दरबार आप के पदाम्बुजों से परशोभित है अतएव है अन्नभवन्। आप आप ही हैं, आप को हम क्या खिताब दें ? आप ही कोई बढ़िया खिताब पसन्द कर लें। डियर सर बूट, आप कोर्ट और हाईकोर्ट के तो गाईड है बिना आप के क्या मजाल कि वहाँ घुस जावे यदि घुसें तो फिर वही दुर्दशा हो जो एक

मुख्तार राम की हुई थी। हमने सुना है कि आप कानून में पास है तो फिर आप वकालत और बारिष्टरी का क्यों नहीं दावा करते? भाई डियर बूट स्कूल कालिज हास्पिटल् पोस्ट पबलिक् वर्क सबडिपार्टमेन्टों में आप की तूती बजती है और फौज और पुलिस को तो आप ने सर्व ग्राम ही कर लिया है। अतएव आप को रिश्वत का छोटा भाई कहें तो अनुचित नहीं क्योंकि जैसे रिश्वत सर्वत्र वैसे ही श्रीमान् भी सर्वत्र हैं। महाशय बूट हमारा यह अनुमान सत्य है कि जहां अंग्रेजी भाषा अथवा अंग्रेजी राज्य है वहां सर्वत्र आप की उपासना होती है अतएव आप अंग्रेजी शास्त्र समूह के फल और बृटिश गवर्नमेन्ट के राज्य के प्रधान लायल है। श्री श्री बूट हम हिन्दुस्तानी लोग तो आप पर कुर्बान् है और क्यों नहीं जब आप हमारे नेता अंग्रेजों के प्राण समान हैं आप का स्पर्श करते ही हम अपने को बी० ए०, एम० ए० से अधिक विद्वान एफ चाइल्ड से अधिक धनवान और मिष्टर ब्राडला से अधिक बुद्धिमान समझने लगते हैं जब आप हमारी ऐसी शोभा के साधन है तो फिर क्यों न अपने हाथ से आप की धूल झाड़ें और का श्रमनिवारें मिस्टर बूट हम जानते हैं आप का कुछ माहात्म भी कहीं लिखा है न तो हिन्दू विवाह में आप को क्यों पूजते? और अंग्रेज फूलों के समान आप की वर्षा विवाह में क्यों करते? बूट जी, आप के दाम भी दिन-दिन बढ़ते जाते है पचीस रूपये तक तो आप की एक प्रति बिकने लगी। बूट आपके सहयोगी शाकों में रतालू, अन्नों में चना, और पक्षियों में सारस है क्यों कि जैसा सारस का सदा एक साथ जोड़ा रहता है वैसा हुजूर का का भी, मिस्टर बूट एक साहब ने एक बोट के लिये अपने मित्र को एक पत्र लिखा था, पर बोट के बदले "बूट" आप का डाक ह्वाउमारास के पास पहुँचे। भला आपके सम दयालु कौन है? मिस्टर बूट आपके दासानुदास देसी चरनदास तो चोरी बहुत जाते हैं पर आप को लेने में चोर भी डरता है, विशेषतः जब आपके ऊपर नम्बर पड़ने लगेंगे, और दूकान का पता भी रहेगा तब तो जो सजा नोट' वाले को होती है वही

आपको चुराने वाले को होगी। अतएव आप सब तरह से उलटे सीधे भले बुरे आगे पीछे सब तरह से भले हैं अतएव आपको यह ऐड्रस् देते हैं और परमेश्वर से आप की उन्नति की प्रार्थना करते हैं 'Mr boot forget me not"

हम लोग आपके शुभचिन्तक

टठडढण।

[१८८४ ई०]

अथ मदिरास्तवराज ।

हे मदिरे तुम साक्षात् भगवती का स्वरूप हो जगत तुमसे व्याप्त है तुम्हारी स्तुति करने को कौन समर्थ है अतएव तुम्हें प्रणाम करना योग्य है ।। हे मद्य ! तुम्हें सौत्रामणि यज्ञ में तो वेद ने प्रत्यक्ष आदर किया है परन्तु तुम अपने सेव्य रूप प्रच्छन्न अमृत प्रवाह में संपूर्ण वैदिक यज्ञ वितान को प्लावित करती हो अतएव श्रुतिश्रुते तुम्हें—हे वारूणि ! स्मृतिकारों ने भी तुम्हारी प्रवृत्ति नित्य मानी है निवृत्ति केवल अपने पद्धतिपने के रक्षण के हेतु लिखी है अतएव हे स्मृतिस्मृते ! तुम्हें प्रणाम है ।

हे गौडि ! पुराणों में तो तुम्हारी सुधा सारिणी कथा चारो ओर अतिवाहित है निषेध के बहाने भी तुम्हारी विधि ही विधि है इससे हे पुराण प्रतिपादिते ! तुम्हें प्रणाम है ।।

हे सोम सजाते ! चंद्रमा में तुम्हारा निवास, समुद्र तुम्हारी उत्पत्ति का स्थान और सकल देव मनुष्य असुर तुम्हारे पति है अतएव हे त्रिलोकगामिनि ! तुम्हें प्रणाम् है ।।

हे बोतल वासिनी ! देवी ने तुम्हारे बल से शुम्भादि को मारा यादव लोग तुम्हें पी के कट मरे । बलदेव जी ने तुम्हारे प्रताप से सूत का सिर काटा अतएव हे शक्ति ! तुम्हें प्रणाम है ।।

हे सकलमादकसामग्रीशिरोरत्ने ! तन्त्र केवल प्रचार ही को बनाए है और इनका कोई प्रयोजन नहीं था केवल तुममय जगत् करने को इनका अवतार है अतएव हे स्वतन्त्रे ! तुम्हे प्रणाम है ।।

हे ब्राँडि ! बौद्ध और जैन धर्म की तुम सारभूत हो । मुसलमानों में मुफ्त के मिल हलाल हो । क्रिस्तानों में भी साक्षात् प्रभु की रूधिर रूप

हो और ब्राह्मोधर्म की तो तुम एकमात्र आड़ हो। अतएव हे सर्वधर्ममर्मरूपे, तुम्हें प्रणाम है ॥

हे शाम्पिन्! आगे के लोग सब तुम्हारे सेवक थे यह श्लोकों के प्रमाण सहित बाबू राजेन्द्र लाल के लेकचर से सिद्ध है तो अब तुम्हारा कैसे त्याग हो सकता है अतएव हे सिद्धे! तुम्हें प्रणाम है ॥

हे ओल्डटाम! तुम्हें भारतवर्षियों ने उत्पन्न किया रोम चीन इत्यादि देश के लोगो को कुछ परिष्कृत किया अब अंग्रेजों और फ्रान्सीसियों ने तुम्हें फिर से नए भूषण पहिराए। अतएव हे सर्व विलायत भूषिते! तुम्हें प्रणाम हैं ॥

हे कुल मर्य्यादा संहार कारिणी! तुमसे बढ़कर न किसी का बल है न आग्रह, न मान तुम्हारे हेतु तुम्हारे प्रेमी कुल, धन, नाम, मान, बल, मेल रूप बरञ्च प्राण का भी परित्याग करते है अतएव हे प्रणयेक पात्रे तुम्हें—

हे प्रेजुडिस विध्वंसिनी! तुम्हारे प्रताप से लोग अनेक प्रकार की शंका परित्याग करके स्वच्छन्द बिहार करतें हैं जिनके बाप दादा हुक्का भांग सुरती से भी परहेज करते थे वे अब सभ्यों की मजलिस में तुम्हारा सेवन करके जाना ऐब नहीं समझते! अतएव हे बोल्डनेस जननि तुम्हें—

हे सर्वानन्दसार भूते। तुम्हारे बिना किसी बात में मज़ा ही नहीं मिलता। रामलीला तुम्हारे बिना निरी सुपनखा की नाक मालुम होती है नाच निरे फूटे कांच और नाटक निरे उच्चाटक बेवकूफी के फाटक दिखाई पड़ते हैं अतएव हे मजे की पोटरी तुम्हें प्रणाम है ॥

हे मुखकज्जलान्नलेपके! होटल, नाच, जाति-पांति, घाट बाट, मेला तमाशा, दरबार, घोड़दौड़ इत्यादि स्थान में तुम्हें लेकर जाने से लोग देखो कैसी स्तुति करते है अतएव हे पूर्वपुरुषसंचितविद्याधनराजसंपदकीर्दि जन्यकठिनप्राप्यप्रतिष्ठासमूहासत्यानाशनि! तुम्हें बारंबार प्रणाम ही करना योग्य है।

स्त्री सेवा पद्धति

इस पूजा से अश्रु जल ही पाद्य है, दीर्घ श्वास ही अर्घ्य है, आश्वासन ही आचमन है, मधुर भाषण ही मधुपर्क है, सुवर्णालङ्कार ही पुष्प हैं, धैर्य ही धूप है, दीनता ही दीपक है, चुप रहना ही चन्दन है, और बनारसी साड़ी ही बिल्वपत्र है, आयुरूपी आँगन में सौन्दर्य तृष्णा रूपी खूँटा है, उपासक का प्राण पुञ्ज-छाग उसमें बंध रहा है, देवी के सुहाग का खप्पर और प्रीति की तरवार है, प्रत्येक शनिवार की रात्रि इसमें महाष्टमी है और पुरोहित यौवन है।

पाद्यादि उपचार करके होम के समय यौवन पुरोहित उपासक के प्राण समिधों में मोहाग्नि लगाकर सर्वनाश तन्त्र के मन्त्रों से आहुत दे "मान खण्डन के लिये निद्रास्वाहा" "बात मानने के लिये माँ बाप बन्धन स्वाहा" "वस्त्रालङ्कारादि के लिये यथा सर्वस्व स्वाहा" "मन प्रसन्न करने के लिये यह लोक परलोक स्वाहा" इत्यादि, होम के अनन्तर हाथ जोड़कर स्तुति करै।

हे स्त्री देवी संसार रूपी आकाश में तुम गुब्बारा हो क्योंकि बात बात में आकाश में चढ़ा देती हो पर जब धक्का दे देती हो तब समुद्र में डूबना पड़ता है। अथवा पर्वत के शिखरों पर हाड़ चूर्ण हो जाते है, जीवन के मार्ग में तुम रेलगाड़ी हो जिस समय रसना रूपी एन्जिन तेज करती हो एक घड़ी भर में चौदहो भुवन दिखला देती हो, कार्य क्षेत्र में तुम इलो-

क्ट्रिक टेलीग्राफ हो, बात पड़ने पर एक निमेष में उसे देश देशान्तर में पहुँचा देती हो, तुम भवसागर में जहाज हो, बस अधम को पार करो ॥

तुम इन्द्र हो, श्वसुर कुल के दोष देखने के लिये तुम्हारे सहस्त्र नेत्र हैं, स्वामी शासन करने में तुम वज्रपाणि हो। रहने का स्थान अमरावती है क्योंकि जहाँ तुम हो वही स्वर्ग है ॥

तुम चन्द्रमा हो, तुम्हारा हास्य कौमुदी है उससे मन का अन्धकार दूर होता है तुम्हारा प्रेम अमृत है जिसकी प्रारब्ध में होता है वह इसी शरीर से स्वर्ग सुख अनुभव करता है और लोक में जो तुम व्यर्थ पराधीन कहलाती हो यही तुम्हारा कलङ्क है ॥

तुम वरुण हो क्योंकि इच्छा करते ही अश्रुजल से पृथ्वी आर्द्र कर सकती हो ! तुम्हारे नेत्र जल की देखा-देखी हम भी गल जाते हैं।

तुम सूर्य्य हो तुम्हारे उपर आलोक का आवरण है पर भीतर अन्धकार का वास है, हमें तुम्हारे एक घड़ी भर भी आखों के आगे न रहने से दसों दिशा अन्धकारमय मालूम होता है पर जब माथे पर चढ़ जाती हो तब तो हम लोग उत्ताप के मारे मर जाते हैं। किम्बहुना देश छोड़कर भाग जाने की इच्छा होती है ॥

तुम वायु हो क्योंकि जगत की प्राण हो। तुम्हें छोड़कर कितनी देर जी सक्ते हैं ? एक घड़ी भर तुम्हें बिना देखे प्राण तड़फड़ाने लगते हैं, जल में डूब जाने की इच्छा होती है पर तुम प्रखर बहती हो किससे बाप की सामर्थ्य है कि तुम्हारे सामने खड़ा रहे ॥

तुम यम हो यदि रात्रि को बाहर से आने में विलम्ब हो, तो तुम्हारी वक्तृता नरक है। यह यातना जिसे न सहनी पड़े वही पुण्यवान है उसी की अनन्त तपस्या है ॥

तुम अग्नि हो क्योंकि दिन रात्रि हमारी हड्डी हड्डी जलाया करती हो ॥

तुम विष्णु हो तुम्हारी नथ तुम्हारा सुदर्शन चक्र है उस के भय से पुरुष असुर माथा मुड़ा कर तटस्थ हो जाते हैं एक मन से तुम्हारी सेवा करे तो सशरीर वैकुण्ठ को प्राप्त कर सकता है।

तुम ब्रह्मा हो तुम्हारे मुख से जो कुछ बाहर निकलता है वही हम लोगों का वेद है और किसी वेद को हम नहीं मानते, तुमको चार मुख हैं क्योंकि तुम बहुत बोलती हो। सृष्टिकर्ता प्रत्यक्ष ही हो पुरुषों के मनहंस पर चढ़ती हौ चारो वेद तुम्हारे हाथ में है इस्से तुमको प्रणाम है।

तुम शिव हो। सारे घर का कल्याण तुम्हारे आधीन है भुजंग वेनी धारिणी हौ (२) तृशूल तुम्हारे हाथ में है कोप में और कंठ में विष है तौ भी आशुतोष हो।

इस दिव्य स्तोत्र पाठ से तुम हम पर प्रसन्न हो। समय पर भोजनादि दो। बालकों की रक्षा करो। भृगुटी धनु के सन्धान में हमारा बध मत करो और हमारे जीवन को अपने कोप से कंटकमय मत बनाओ।

"अंगरेज़ स्तोत्र"

हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

तुम नानागुण विभूषित, सुन्दर कान्ति विशिष्ट, बहुत संपद युक्त हो; अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

तुम हर्ता—शत्रुदल के; तुम कर्ता आईनादि के; तुम विधाता—नौकरियों के, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

तुम समर में दिव्यास्त्रधारी — शिकार में बल्लमधारी, विचारागार में अर्ध इञ्चि परिमित व्यासविशिष्ट बेत्रधारी आहार के समय कांटा चिमचधारी अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

तुम एक रूप से पुरी के ईश होकर राज्य करते हो, एक रूप से पराय वीथिका में व्यापार करते हो, और एक रूप से खेत में हल चलाते हो, अतएव हे त्रिमूर्तें ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

आप के सत्वगुण आप के ग्रन्थों से प्रगट, आप के रजो गुण आप के युद्धों से प्रकाशित, एवं आप के तमोगुण भवत्प्रणीत भारतवर्षीय सम्बाद पत्रदिकों से विकसित, अतएव हे त्रिगुणात्मक ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

तुम हो अतएव सत् हो, तुम्हारे शत्रु युद्ध में चित्, उम्मेदवारों को आनन्द, अतएव हे सच्चिदानन्द हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

तुम इन्द्र हो—तुम्हारी सेना वज्र है, तुम चन्द्र हो—इनकम् टैक्स तुम्हारा कलंक है, तुम वायु हो—रेल तुम्हारी गति है, तुम वरुण हो—

जल में तुम्हारा राज्य है, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

तुम दिवाकर हो— तुम्हारे प्रकाश से हमारा अज्ञानांधकार दूर होता है, तुम अग्नि हो—क्योंकि सब खाते हो, तुम यम हो—विशेष करके अमला वर्ग के, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

तुम वेद हो—और रिग्यजुस्साम को नहीं मानते, तुम स्मृति हो—मन्वादि भूल गये, तुम दर्शन हो—क्योंकि न्याय मीमांसा तुम्हारे हाथ हैं, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हे श्वेतकांत—तुम्हारा अमलधवल द्विरद रद शुभ्र महाश्मश्रु शोभित मुखमण्डल देख करके हमे वासना हुई कि हम तुम्हारा स्तव करें, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हे वरद ! हमको वर दो, हम सिर पर शमला बांध के तुम्हारे पीछे पीछे दौड़ेंगे, तुम हमको चाकरी दो हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

हे शुभंकर ! हमारा शुभ करो, हम तुम्हारी खुशामद करेंगे, और तुम्हारे जी की बात कहेंगे, हमको बड़ा बनाओ हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हे मानद ! हमको टाईटल दो, खिताब दो, खिलत दो, हमको अपना प्रसाद दो हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हे भक्तवत्सल ! हम तुम्हारा पात्रावशेष भोजन करने की इच्छा करते हैं, तुम्हारे कर स्पर्श से लोकमण्डल में महामानास्पद होने की इच्छा करते हैं, तुम्हारे स्वहस्तलिखित दो एक पत्र बाक्स में रखने की स्पर्द्धा करते हैं, हे अंगरेज ! तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको नमस्कार करते हैं ॥

हे अन्तरयामिन् ! हम जो कुछ करते हैं केवल तुमको धोखा देने को, तुम दाता कहो इस हेतु हम दान करते हैं तुम परोपकारी कहो इस हेतु

हम परोपकार करते हैं, तुम विद्यावान् कहा इस हेतु हम विद्या पढ़ते हैं अतएव हे अंगरेज ! तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको नमस्कार करते हैं ।

हम तुम्हारी इच्छानुसार डिस्पेंसरी करेंगे, तुम्हारे प्रीत्यर्थ स्कूल करेंगे, तुम्हारी आज्ञा प्रमाण चन्दा देंगे, तुम हम पर प्रसन्नहो हम तुमको नमस्कार करते हैं ॥

हे सौम्य ! हम वही करेंगें जो तुमको अभिमत है, हम बूट पतलून पहिरैंगे, नाक पर चश्मा देंगे, कांटा और चिमिचे से टिबिल पर खायेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

हे मिष्टभाषिण ! हम मातृभाषा त्याग करके तुम्हारी भाषा बोलेंगे, पैतृक धर्म छोड़ के ब्राह्म धर्मावलंब करेंगे, बाबू नाम छोड़कर मिष्टर नाम लिखवावेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

हे सुभोजक ! हम चावल छोड़कर पावरोटी खायेंगें, निषिद्ध मांसबिना हमारा भोजन ही नहीं बनता, कुक्कुर हमारा जलपान है, अतएव हे अंगरेज ! तुम हमको चरण में रक्खो हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हम विधवा विवाह करेंगे, कुलीनों की जाति मारेंगे, जातिभेद उठा देंगे—क्योंकि ऐसा करने से तुम हमारी सुख्याति करोगे, अतएव हे अंगरेज तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको नमस्कार करते हैं ॥

हे सर्वद ! हमको धन दो, मान दो, यश दो, हमारी सब वासना सिद्ध करो, हमको चाकरी दो, राजा करो, राय बहादुर करो, कौंसिल का मिम्बर करो हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

यदि यह न हो तो हमको डिनर होम में निमन्त्रण करो, बड़ी बड़ी कमेटियों का मिंबर करो । सीनट का मिंबर करो, जसटिस करो, अनरेरी मजेस्ट्रेट करो, हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हमारी स्पीच सुनों, हमारा ऐसे पढ़ो, हमको वाहवाही दो, इतना ही होने से हम हिन्दू समाज की अनेक निन्दा पर ध्यान न करेंगे, अतएव हम तुम्हीं को नमस्कार करते हैं ।

हे भगवन ! हम अकिञ्चन हैं और तुम्हारे द्वार पर खड़े रहेंगे, तुम हमको अपने चित्त में रक्खो हम तुमको डाली भेजेंगे, तुम अपने मनमें थोड़ा सा स्थान मेरी ओर से भी दो, हे अंगरेज ! हम तुमको कोटि कोठि साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं ।।

तुम दशाअवतारधारी हो, तुम मत्स हो क्योंकि समुद्रचारी हो और पुस्तक छाप छाप के वेद का उद्धार करते हो, तुम कच्छ हो, क्योंकि मदिरा, हलाहल वारांगना धन्वन्तर और लक्ष्मी इत्यादि रत्न तुमने निकाले हैं पर वहां भी विष्णुत्व नहीं त्याग किया है अर्थात् लक्ष्मी उन रत्नों में से तुमने आप लिया है तुम श्वेत बाराह हो क्योंकि गौर हो और पृथ्वी के पति हो, अतएव हे अवतारिन् ! हम तुमको नमस्कार करते हैं ।।

तुम नृसिंह हो क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनोंपन तुम में हैं टैक्स तुम्हारा क्रोध है और परम विचित्र हो, तुम वामन हो क्योंकि तुम वामन कर्म्म में चतुर हो, तुम परशुराम हो क्योंकि पृथ्वी निक्षत्री कर दी है अतएव हे लीलाकारिन् ! हम तुम को नमस्कार करते हैं ।।

तुम राम हो क्यों कि अनेक सेतु बाँधे है तुम बलराम हो क्योंकि मद्य-प्रिय और हलधारी हो, तुम बुद्ध हो क्यों कि वेद के विरुद्ध हो, और तुम कल्कि हो क्योंकि शत्रु संहारकारी हो, अतएव हे दशविधिरूप धारिन ! हम तुमको नमस्कार करते हैं ।।

तुम मूर्तिमान् हो ! राज्य प्रबन्ध तुम्हारा अंग है न्याय तुम्हारा शिर है, दूरदर्शिता तुम्हारा नेत्र है, और कानून तुम्हारे केश हैं अतएव हे अंगरेज हम तुमको नमस्कार करते हैं ।।

कौंसिल तुम्हारा मुख है, मान तुम्हारी नाक है, देश पक्षपात तुम्हारी मोछ है और टैक्स तुम्हारे कराल दंष्ट्रा हैं अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं हमारी रक्षा करो ।।

चुंगी और पुलिस तुम्हारी दोनों भुजा हैं अमेल तुम्हारे नख है, अन्धेर तुम्हारा पृष्ठ है और आमदनी तुम्हारा हृदय है, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

खजाना तुम्हारा पेट है, लालच तुम्हारी क्षुधा है, सेवा तुम्हारा चरण है, खिताब तुम्हारा प्रसाद है, अतएव हे विराटरूप अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानयागादिकांःक्रियाः ।
अंगरेजस्तव पाठस्य कलां नार्हति षोडशीम् ॥ १ ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
स्टारार्थी लभते स्टारम् मोक्षार्थी लभतेगतिं ॥ २ ॥
एक कालं द्विकालं च त्रिकालं नित्य मुत्पठेत् ।
भव पाश विनिर्मुक्तः अंगरेजलोकं स गच्छति ॥३॥

—:o:—

पाँचवें पैगम्बर !

लोगों दोड़ो, मै पाँचवां पैगम्बर हूँ, दाऊ, ईसा, मूसा, मुहम्मद ये चार हो चुके मेरा नाम चूसा पैगम्बर है, मैं विधवा के गर्भ से जन्मा हूँ और ईश्वर अर्थात् खुदा की ओर से तुम्हारे पास आया हूँ इससे मुझपर ईमान लाओ नहीं तो ईश्वर के कोप में पड़ोगे ।।

मुझ को पृथ्वी पर आए बहुत दिन हुए पर अब तक भगवान का हुक्म नहीं था इससे मैं कुछ नहीं बोला ! बोलना क्या बल्कि जानवर बना आत लगाए फिरता था और मेरा नाम लोगों ने चूहा, बन्दर, लंका का सेना और म्लेच्छ रक्खा था पर अब मैं उन्हीं लोगों का गुरू हूँ क्यों कि ईश्वर की आज्ञा ऐसी है इससे लोगों ईमान लाओ ।।

जैसे मुहम्मदादि के अनेक नाम थे वैसे ही मेरे भी तीन नाम हैं ! मुख्य चूसा पैगम्बर दूसरा डबल और तीसरा सुफैद और पूरा नाम मेरा श्रीमान् आनरेबल हज़रत डबल सुफैद चूसा अलैहुस्सलाम पैगम्बर आखिर कुल जमां है ।।

मुझ को कोह चूर पर खुदा ने जल्वा दिखलाया और हुक्म दिया कि मैंने पैग़म्बर किया तुझ को तू लोगों को ईमान में ला । दाऊद ने बेला बजा के मुझे पाया तू हारमोनियन बजावैगा, मूसा ने मेरी खुदाई रौशनी से कोहतूर जलाया तू आप अपनी रौशनी से जमाने को जला कर काला करैगा, ईसा मर के जिया था तू मरा हुआ जीता रहैगा, मुहम्मद ने चांद को बीच से काटा तू चांद का कलंक मिटा अपनी टीका बनावैगा ।

(खुदा कहता है) देख मूर्तिपूजन अर्थात बुत परस्ती को जमाने से उठा देना क्योंकि मैंने हाफ् सिविलाइज्ड किया दुनियां को पूरा तुझ को, जो शराब सब पैगम्बरों पर हराम थी मैंने हलाहल किया तेरे पर, बल्कि तेरे मज़हब की निशानी है जो तेरे आसमान पर आने के बाद रूए ज़मीन पर क़ायम रहैगी क्योंकि यद्यपि "तेरा राज्य सर्व्वदा न रहैगा पर यह मत यहां सर्व्वदा दृढ़ रहैगा ॥"

(खुदा कहता है) मैंने हलाल किया तुझ पर गऊ, सूअर, मेढ़क, कुत्ता वगैरह सब जानवर जो कि हराम हैं, मैंने हलाल किया तुझ पर, अपने मज़हब के वास्ते झूठ बोलना, और हुकुम दिया तुझ को औरतों की इज्ज़त करने, और उनको अपने बराबर हिस्सा देने की, बल्कि यारों के संग जाने की, और सिवाय पब्लिक प्लेसो के कोहे तूर पर जहां मैंने जलवा दिखाया तुझ को तीन आरामगाह फ़रिश्तों से बनवा कर तुझे बख्शी और तुझ पर हलाल की जिन तीनों का नाम कुर्सी, कुर्सी और दगली है ॥

(खुदा कहता है) देख, खबरदार, मुँह वगैरह किसी बदन को साफ़ न रखना नहीं तो तुझे शैतान बहका देंगे, लिबास सियाह हमेशः पहिरना और मेरी याद में सिर खुला रखना ॥

मैं खुदा के इन हुक्मों को मान कर तुम्हारे पास आया हूँ, मेरा कहा मानो और ईमान लाओ मैं खुदा का प्यारा पुत्र, माशूक, जोरू, नायक नहीं हूँ बल्कि खुदा का दूसरा हूँ । यह इज्ज़त किसी पैगम्बर को नहीं मिली थी ॥

लोगों ! मेरा कहा मानों खुदा मुझसे डरता है क्योंकि मैं प्रच्छन्न नास्तिक हूँ पर पैगम्बरिन के डर से आस्तिक हो गया हूँ इससे खुदा को हमेशः हमारी दलीलों से अपने उड़ जाने का डर रहता है तो जब खुदा मुझ से डरता है तब उसके बन्दो तुम मुझसे बहुत ही डरो ॥

मेरे प्यारे अंगरेजो ! तुम खौफ मत करो मैं तुमको सब गुनाहों से बरी कराऊँगा क्योंकि नाशिनैलिटी बड़ी चीज़ है पैगम्बरिन और तुम्हारा रंग एक है इस्से मै तुम्हारे पापों को छिपा दूंगा ॥

प्यारे मुसलमानों ! में कुछ तुम से डरता हूँ क्योंकि तुमको मार डालने में देर नहीं लगती इस्से मैं तुम्हारी बेहतरी के वास्ते अपनी धर्म पुस्तक में लिख जाऊँगा कि हमारे सकसेसर लोग तुम्हारी खातिर करैं तुम्हारे न पढ़ने पर अफसोस करैं और तुम्हारे वास्ते स्कूल और कालेज बनावैं ॥

मगर मेरे मेमने हिन्दुओं ! तुम को मैं सब प्रकार नीच समझूंगा क्योंकि यह वह देश है जो ईश्वर के क्रोध रूपी अग्नि से जल रहा है और जलैगा और ईश्वर के कोप से तुम्हारा नाम जीते हुए, हाफ सिविलाइज्ड, रूड, काफिर बुतपरस्त, अंधेरे मे पड़े हुए, बारबरस, वाजिबुल कत्ल होगा ।

देखो हम भविष्य बानी कहते हैं तुम रोते और सिर टकराते भागते भागते फिरोगे, बुद्धि सीखते ही नहीं बल नाश हो चुका है एक केवल धन बचा है सो भी सब निकल जायगा, यहाँ महँगी पड़ेगी पानी न बरसैगा, हैजा डैंगू वगैरह नए नए रोग फैलैंगे, परस्पर का द्वेष और निन्दा करना तुम्हारा स्वभाव हो जायगा, आलस छा जायगी, तब तुम उसके कोप अग्नि से जल के खाक के सिवा कुछ न बचोगे ।

पर प्यारों ! जो मुझ सच्चे पैगम्बर पर ईमान लावेगा वह छुड़ाया जायगा क्योंकि मै खुशामद पसंद और घूस लेने वाला जाहिरा नहीं हूँ मैं ईश्वर का सच्चा पैगम्बर और दुनियां का सच्चा बादशाह हूँ क्योंकि सूरज को खुदा ने रौशनी मेरे लिये इनायत की, चांद में ठंढक सिर्फ मेरे लिए बख्शी गई और जमीन आस्मान मेरे लिए पैदा किया बल्कि फरिश्ते भी मेरे लिए बनाए गए ।

ईमान लाओ मुझ पर, डाली चढ़ाओ मुझको, जूता उतार के आओ मेरी मजारेपाक पर, पगड़ी पहन कर आओ मेरे मकबरे में, इनाम दो

इनको और धक्का खाऊँ उनका जो मेरे मुजाविर है क्योंकि वे मूजिब होंगे तुम्हारी नजात के, और जो कुछ मैं कहूं उसे सुनकर हुजूर, साहब बहुत ठीक फरमाते है, बजा इरशाद, बेशक, ठीक है, सत्त वचन जा आज्ञा, जे आज्ञा, जो आज्ञा, इसमें क्या शक, ऐसा ही है, मेरे मालिक, मेरे बाबाजान सब सच फरमाते हो—क्योंकि जो मैं कहता हूँ वह ईश्वर कहता है; और मेरे अनादरों को सहो अगर मेरी दरगाह में तुम्हें गरदनिया दी जाय तो उसकी कुछ लाज मत करो फिर घुसो क्योंकि मेरी दरगाह से निकलना दुनियां से निकल जाना है।

देखो शराब पिय, विधवाविवाह करो, बालपाठशाला करो आगे से लेने जावो, बाल्यविवाह उठाओ, जातिभेद मिटाओ, कुलीन का कुल सत्यानाश में मिलाओ, हौटल में लव करना सीखो, स्पीच दो, क्रिकेटखेलो, शादी में खर्च कम करो, मेमबर बनो, मेम्बर बनो, दरबारदारी करो, पूजा पत्री करो, चुस्त चलाक ब नो, हम नहीं जानते को हम नहीं जानता कहो, चक्कर दार टोपी पहिनो, वासिर खुला रक्खो पर पौशाक सब तंग रक्खो, नाचवाल थियेटर अंटा गुड़गुड़ बंक डिबी सिवी में घरों में लाओ क्योंकि ये काम मूजिब होंगे खुदा और मेरी खुशी को।

शराब पियो, कुछ शंका मत करो, देखो मैं पीता हूँ क्योंकि यह खुदा का खून है जो उसने मुझे पिलाया और मैंने दुनियां को और यह उसके दोनों बादशाहत की निशानी है जो बाद मेरे बहुत दिन तक कायम रहैगी क्योंकि उसने हुक्म दिया है कि औरों की तरह तू मकान बहुत पक्का न बनवाना क्योंकि दुनिया खुद नापायदार है मगर मेरे खून के बोतलों के टुकड़े जो कि (खुदा कहता है) मेरी हड्डियां है बहुत दिनों तक न गलैगी और मेरे सच्चे राज की निशानी कायम रहैगी।

देखो मेरा नाम चूसा है क्योंकि मैं सब का पापरूपी पैसा चूस लेता हूँ क्योंकि खुदा ने फरमाया है कि मेरे बन्दे पैसा के बहकाने से गुनाह करते

हैं अगर उनके पास पैसा न रहै तो खुदा गुनाह न करें इस्से तू सब से पहिले इनका पैसा चूस ले।

मेरा दूसरा नाम डबल है क्योंकि डबल हिन्दी में पैसे को कहते है और अंगरेजी में दूने को और पच्छिम में उस बरतन को जिस्से घी वा अनाज निकाला जाता है और मेरा तीसरा नाम सुफैद है क्योंकि मैं रोशनी बख्शने वाला हूँ और दिल मेरा साफ चिह्ना चमकीली चीनी की जात है और चमड़ा मेरा गोरा है और भी मैं सफैद करूंगा लोगों को अपने दीन की चांदनी से इनलाइटेन्ड करके।

मेरे पहाड़ का नाम कोहेनूर है क्योंकि मैं सब के पापी दिलों को और पापों को तथा प्रैजुडिसों को लोगों के बल और धन को चूर करूंगा, और मेरी पहली आरामगाह कुर्सी है क्योंकि अब वहां की आबहवा साफ होकर बेवकूफी की शिकायत रफ़ा हो गई और दूसरी कुरसी है जहां जलती आग पर मेरे से पैगम्बर के सिवा दूसरा नहीं बैठ सकता और तीसरी दगली है उसमें चारो ओर दगल भरा है और बाच में मेरा सिंहासन है।

जहां पर खुदा ने हलाल किया है शराब, बीफ, मटन, बग्गी, दगल, फसल, नैशानीलटी, लालटैन, कोट, बूट, छड़ी, जेबीघड़ी, रेलधुआंकस, विधवा, कुमारी, परकीया, चाबुक, चुरुट, सड़ीमछली, सड़ी पनीर, सड़े अचार, मुँह की बू, अधोभाग के केश, बिना पानी के मल धोना, रूमाल मौसी, मामी, बुआ, चाची मैं अपनी बेटी पोतियों के, कजिन, फ्रैंड लेपालक की बहू, खानसामा खान सामिन, हुक्का, धुक्का, लुक्का, बुक्का, और आजादी को हराम किया बुतपरस्ती, बेईमानी, सच बोलना, इन्साफ करना, धोती पहरना, तिलक लगाना, कंठी पहरना, नहाना, दतुअन करना, स्वच्छन्द होना, उदार होना, निर्भय होना, कथा पुराण, जातिभेद बाल्यविवाह, भाई वा मा वा पिता के साथ रहना, मूर्तिपूजन तथा आर्थोडाक्स की सुहबत सच्ची प्रीति, परस्पर उपकार, आपस का मेल बुरीं बातैं, घातैं, फातैं, छातैं और प्रेजुडिस को।

लोगों ! दौड़ो ईमान लाओ मुझ पर, देखो पीछे पछताओगे और हाथ मलते रह जाओगे मैं ईश्वर का प्यारा दूसरा और पाँचवाँ पैगम्बर केवल तुम्हारे उद्धार के वास्ते पृथ्वी पर आया हूँ ईनामो लाओ मुझपर हुकम मानो मेरा, मेरा दाहिना हाथ जो तुम लोगों के सामने उठा है खुदा का हाथ है इस को सिजदा करो, झुको, अदब करो, ईमान लाओ और इस शराब को खून समझकर पिओ पिओ पिओ ॥

[सन् १८७३ ई०]

सर्वजात गोपाल को

[एक पंडित और एक क्षत्री आते हैं।]

क्ष०—महाराज देखिये बड़ा अन्धेर हो गया कि ब्राह्मणों ने व्यवस्था दे दी कि कायस्थ भी क्षत्री हैं, कहिए अब कैसे काम चलैगा।

पं०—क्यों इसमें दोष क्या हुआ ? "सर्व जात गोपाल की" और फिर यह तो हिन्दुओं का शास्त्र पनसारी की दुकान है और अक्षर कल्प वृक्ष है इसमें तो सब जात की उत्तमता निकल सकती है पर दक्षिणा आप को बाएं हाथ से रख देनी पड़ेगी फिर क्या है फिर तो सर्व जात गोपाल की।

क्ष०—भला महराज जो चमार कुछ बनना चाहै तो उस (को) भी आप बना दीजियेगा।

पं०—क्या बनना चाहै

क्ष०—कहिये ब्राह्मण।

पं०—हां चमार तो ब्राह्मण हई हैं इसमें क्या सन्देह है ईश्वर के चर्म से इनकी उत्पत्ति है इनको यमदंड नहीं होता चर्म का अर्थ ढाल है इससे ये दंड रोक लेते हैं चमार में तीन अक्षर हैं 'च' चारो वेद 'म' महाभारत (र) रामायन जो इन तीनों को पढ़ावै वह चमार पद्म पुराण में लिखा है इन चर्मकारों ने एक बेर यज्ञ किया था उसी यज्ञ में से चर्मरावती निकली

है अब कर्म भ्रष्ट होने से अन्त्यज हो गए हैं नहीं तो है असिल में ब्राह्मण देखो रैदास इनमें कैसे भक्त हुए हैं लाओ दक्षिणा लाओ सवै०

च०—और डोम

पं०—डोम तो ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों कुल के हैं विश्वामित्र वशिष्ठ वंश के ब्राह्मण डोम हैं और हरिश्चन्द्र और वेणु वंश के क्षत्रिय डोम है इसमें क्या पूछना है लाओ दक्षिणा सवै०

च०—और कृपानिधान! मुसलमान!

पं०—मियां तो चारो वर्णों में हैं वाल्मीकि रामायण में लिखा है जो वर्ण रामायण पढ़े मीयां हो जाय!

पठन् द्विजो वाग् ऋषभत्वमीयात् ।
स्यात् क्षत्रियो भूमिपतित्वमीयात् ॥

अल्लहोपनिषत् में इनकी बड़ी महिमा लिखी है द्वारिका में दो भाँति के ब्राह्मण थे जिनको बलदेव जी (मुशली) मानते थे उनका नाम मुश-लिमान्य हुआ और जिन्हें श्रीकृष्ण मानते उनका नाम कृष्णमान हुआ अब इन दोनों का अपभ्रंश मुशलमान और कृस्तान हो गया।

क्ष०—तो क्या आप के मत से कृस्तान भी ब्राह्मण हैं?

पं०—हई हैं इसमें क्या पूछना—ईशावास उपनिषद में लिखा है कि सब जग ईसाई है।

च०—और जैनी?

पं०—जैनी ब्राह्मण "अर्हन्नित्यपि जैनशासनरता" जैन इनका नाम तब से पड़ा जब से राजा अलर्क की सभा में इन्हें कोई जै न कर सका।

च०—और बौद्ध?

पं०—बुद्धिवाले अर्थात् ब्राह्मण।

च०—और धोबी।

पं०—अच्छे खासे ब्राह्मण जयदेव के जमाने तक धोबी ब्राह्मण होते थे। "धोई कविः क्ष्मापतिः" ये शीतला के रज से हुए हैं इस से इन नाम रजक पड़ा।

क्ष०—और कलवार ?

पं०—क्षत्रिय हैं शुद्ध शब्द कुलवर है भट्टी कवि इसी जाति में था।

क्ष०—और महाराज जी कुँहार।

पं०—ब्राह्मण-घट खर्प्पर कवि था।

क्ष०—हां हां वेश्या।

पं०—क्षत्रियानी–रामजनी, कुछ बनियानी अर्थात् वैश्या।

क्ष०—अहीर।

पं०—वैश्य–नन्दादिको के बालकों को द्विजाति संस्कार होता था "कुरु द्विजाति संस्कारं स्वस्तिवाचनपूर्वकं" भागवत में लिखा है।

क्ष०—सुनहार

पं०—ब्राह्मण

क्ष०—दूसर

पं०—ब्राह्मण, भृगुवंश के ज्वालाप्रसाद पंडित का शास्त्रार्थ पढ़ लीजिये।

क्ष०—जाट

पं०—जाठर क्षत्रिय।

क्ष०—और कोल।

पं०—कौल ब्राह्मण

क्ष०—धिरकार

पं०—क्षत्रिय शुद्ध शब्द धैर्यकार है।

क्ष०—और कुनबी और भर और पासी

पं०—तीनों ब्राह्मण वंश में हैं भरद्वाज से भर, कन्व से कुनबी, पराशर से पाशी।

क्ष०—भला महाराज नीचो को तो आपने उत्तम बना दिया अब कहिये उत्तमो को भी नीच बना सकते हैं ?

पं०—ऊँच नीच क्या सब ब्रह्म है सब ब्रह्म है। आप दच्छिणा दिये चलिए सब कुछ होता चलैगा सचै०।

क्ष०—दच्छिणा मैं दूँगा भला आप इस विषय में भी कुछ परीक्षा दीजिए।

पं०—पूछिए मैं अवश्य कहूँगा।

क्ष०—कहिये अगरवाले और खत्री।

पं०—दोनों बढ़ई हैं जो बढ़ियाँ अगर चंदन का काम बनाते थे उनकी संज्ञा अगरवाले हुई और जो खाट बीनते थे वे खत्री हुए वा खेत अगोरने वाले खत्री कहलाए।

क्ष०—और महराज नागर गुजराती !

पं०—सपेरे और तेली नाग पकड़ने से नागर और गुल जलाने से गुजराती।

क्ष०—और महराज भुइंहार और भाटिये और रोड़े।

पं०—तीनों शूद्र भूजा से भुइंहार, भट्टी रखने वाले भाटिये, रोड़ा ढोने वाले रोड़े।

क्ष०—(हाथ जोड़कर) महाराज आप धन्य हो। लक्ष्मी वा सरस्वती जो चाहैं सो करैं चलिए दक्षिणा लीजिए।

पं०—चलो इस सबका फल तो यही था।

(दोनों गए)

[सन् १८७३]

बधुस्तवराज

हे ललना ललाम—हे कुल कामनियों की आदर्श स्वरूप—हे अनेक गुणगारिमा विशिष्ट—तुम अपने स्वाभाविक सहज गुण से चिराभ्यासी योगियों की सहिष्णुता को सहज ही में जीत लेती हो। हे वंश प्ररोह जननी यह लोक परलोक दोनों में सुख देने वाले शुद्ध सन्तान के पैदा होने की बीज भूमि तुम्हीं हो" सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे" देवी तुम्हारे संख्यातीत अनगिनत दिव्यगुणों को गिन चुकताकर देने की किसकी सामर्थ्य है। हे बड़े कुनबे वाले गृहस्थों के घर की दीप-शिखा-सी समुज्वल वेशधारिणी विविध वेशभूषा विहारिणी। बेटी के भाव में जब तक तुम अपने बाप के घर को सुशोभित करती रहती हो तब तक पिता के घर का तुम्हारा अखण्ड स्वर्गीय राज्य को भला किसकी सामर्थ्य की. खण्डित कर सके? भौजाईयों पर तुम्हारी सतत हुकूमत उद्धत स्वच्छन्द विहार और तुम्हारी अठखलियों का निरूपण लेखिनी की शक्ति के बाहर है। पर ससुराल के लिये देहली से बाहर पांव रहते ही एक बारगी पतोहूपन संक्रामित हो न जानिये, पहले की बातें किस कन्दरा में जा छिपती है, औद्धत्य सहसा विनीतभाव में परिणत हो जाता है स्वच्छन्दता भूत के आवेश सी उतर कौन जाने कहाँ गायब हो जाती है। देवी यदि तुम्हें लोकोत्तर सहिष्णुता "बरदाश्त" का बल या भरोसा न होता तो थोड़ी थोड़ी बात में खांव खांव कर दौड़ने वाली सास तथा ननदों का हठ और जोर जुल्म कैसे सहज में सहने के लायक होता—दुर्गा पाठ में लिखा है।

"विद्याः समस्तास्तवः देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु"

जितनी विद्यायें सब तुम्हारे रूप हैं संसार मे जितनी स्त्रियां ये भी सब तुम्हारी ही प्रतिकृति हैं प्रश्नकर्ता मार्कण्डेय ऋषि इतना ही गोल-मगोल कह चुप हो गये, आगे साफ-साफ कहने की हिम्मत न कर सके। हम कहते हैं देवियों में भी कई तरह की है। जिनमें एक महाकाली होती है। जो जितना सौम्य और सद्‌गुण-वाली है वे सब महालक्ष्मी और सरस्वती हो बहू के रूप में घर की लक्ष्मी बन आती हैं और घर को देव मन्दिर बना देती है। पर जो चण्डी कर्कशा नित्य कलहकारिणी फूहर मैली कुचैली है वह महाकाली के रूप से घर में प्रवेश कर घर को श्मशान तुल्य कर देती है —एक एक आदमी की जिन्दगी उभारू कर दी जाती है "जन्माद्य' कुमार्या" तस्मात् हे चण्डी तुम अपना चण्डरूप का संकोच कर सौम्य दृष्टि से हमें आप्यायित करती रहो तो इसी से हमारा कल्याण है बहुधा जो गृहस्थ हैं जिनकी अपने कुल की लाज निभाने का बड़ा ख्याल है वरन् सदा इसी चिन्ता में व्यग्र रहते हैं कि चादरे के चार खूंट है न हो किसी खूंट में दाग लग जाय, इसलिये उद्धत हो जाने से मुंह मोड़ सदा सबसे नम्र रहते हैं मानो शील-संकोच के बोझ से दबे जाते हो ऐसे ही के घर को देवी तुम बहू बन सुशोभित करती हो। जिनमें ये पूर्वोक्त भाव नहीं आये अपनी हर एक बातों ते घमण्ड से तीनों लोक को तिनका तुल्य समझते हैं वहां उनके संहार के लिये तुम काली सी कराल काल रात्रि हो प्रवेश करती हो। तुम्हारे चण्ड रूप का प्रकाश वहां पहुँचते ही सब छिन्न-भिन्न होने लगता है और जल्द उस घराने की इतिश्री हो जाती है। इससे हे देवी। यह शक्ति आप ही की प्राप्त है चाहे सोने के पांव से घर में प्रवेश करो चाहे लोहे के। आपका स्वर्णपद गृहस्थी में समस्त अभ्युदय दायक है भाग्यवानों के घर की लक्ष्मी बनने को आप सुवर्ण पद से प्रवेश करती हो, दरिद्रों के यहां आप लक्ष्मी की बड़ी बहन बन कर आती हो। जहां आलसी निरुद्यमियों का दल मैले कुचैले भेष से

पेट की अग्नि के मारे कांव-कांव मचाये हुये लड़ रहे हैं, जहां पुंवत प्रगल्भा कर्कशाओं का दल अष्ट प्रहर कलह और दांत किर्रने का पुरश्चरण कर रही है वहां तुम पहुँच उन कराल चण्डियों की चण्डीश्वरी बन बड़ी शोभा पाती हो और तुम्हारे समुचित समागम से उस घर की बुराई के लिये सुख्याति में भी कुछ कसर बाकी नहीं रहती। देवी आज इस स्तव राज के द्वारा तुम्हारा गुण कीर्तन कर फल स्तुति में यही प्रार्थना करते है कि हमारे पढ़ने वालों को अपने प्रचण्ड कराल भेद के दर्शन से बचाये रहो और जिनके यहां कोई ऐसी कराला हों उनको तो इस स्तोत्र का पाठ बहुत ही सामयिक है ॥

[जून १९०६ ई०]

—x—

पत्नीस्तव

हे महारानी पत्नी तुम्हे नमस्कार है तुम संसार का बन्धन महा-जगड़वाल की मूलाधार हो। एक बार विवाह कर तुम्हारे जाल में फँस जाना चाहिये फिर क्या सामर्थ्य कि इस छंदान को तोड़ कोई कहीं भाग सके! यह तुम्हारी ही कृपा है कि आदमी एक जोरू कर खुद संसार भर की जोरू आप बनाता है अति अल्प वय दस ही बारह वर्ष की उम्र मे तुम्हारे जाल मे फंसने से हिन्दू जाति की कमजोरी, ही बल चीण, वीर्य हीन-सत्व हो जाने का तुम्ही मुख्य कारण हो। हम लोग अल्प बुद्धिवाले किस गिनती मे हैं त्रिकालज्ञ पाणिनि ऐसे महार्षियों ने भी तुम्हारी कदर की है "पत्युर्नो यज्ञ संयोगे" पति शब्द को नुक् का आगम हो यज्ञ के संयोग मे। तात्पर्य यह कि धर्मशास्त्र मे "पत्न्या सहाधिकारात्" के आधार पर यज्ञ दान आदि बड़े-बड़े धर्म के कामों में तुम्हे अपने संग ले तभी पुरुष को उन उन धर्म के कृत्यों का अधिकार है।

शास्त्रवालों ने तुम्हारा महत्व और गौरव यहाँतक माना है कि "अना-श्रमी न तिष्ठेत्" बिना गृहस्थ हुये न रहै ऐसा लिख गये हैं, जो इस कारण संयुक्तिक भी मालुम होता है कहा है:—

"ऋणानित्रीण्यपाकृत्यमनो मोक्षे निवेशयेत्"

विद्या पढ़, पुत्र पैदा कर, बड़े बड़े यज्ञ और दान के उपरान्त तब मन को मोक्ष मे लगावैं अर्थात संन्यासग्रहण करै। ऐसा न होता तो कितने

ऐसे सभ्य समाज के सिरमौर संशोधन और देश हित का बीड़ा उठाये महा महन्त माननीय मान्यवर क्यों सदैव पत्नी-पत्नी रटते' उनके बद्धांजलि वशंवद रहते और बिना उनकी आज्ञा एक कदम आगे पाँव न रखते। तस्मात् हे पत्नि। लोक और वेद दनों तुम्हारी नमस्या और अपचिति मे सावधान और प्रवण है। हे पत्नि! तुम्हारे कोमल अंग-सौष्ठव का संपर्क, तुम्हारे अधरामृत का पान, वाचाल कोकिला लाप, कुहू-नाद को तिरस्कार करने वाला तुम्हारे कोकिल-कण्ठ-निर्गत शब्दों को जिसने अपने कानो का अतिथि न किया उस लंडूरे का जीवन ही क्या? कारण रस घन द्व्यक्षरात्मक पत्नी शब्द सुन और तुम्हारा मोहिनी रूप देख कौन ऐसा यु क है जो अभ्यार्थित हो आनन्द निर्भर न हो जाता हो।

हे आदि रस की अधिष्ठात्री। शूर-वीर साहब लोग मुल्क के इन्तिज़ाम की चतुराई मे कहीं से नहीं चूकते पर तुम्हारे समस्त नाज़ नखरों पर अपना अधिकार जमाना तो दूर रहा एक साधारण गौन के इन्तिज़ाम मे उनकी सबभूल जाती है छोट-भइये औसत दर्जे की तनखाह पाने पर भी सदा कर्ज़दार बने रहते हैं।

जिस घर में तुम अपना सौम्य-रूप धारण किये हो वहाँ समग्र संपत्ति हँस रही है जहां तुम्हारा भयंकर प्रचण्ड और उदण्ड रूप घर के एक-एक प्राणी को विकल किये है वहां दरिद्रता का वास रूदन और क्रदन का सहकारी हो हाहाकार मचाये हुये है। सेवा करने में दासी, एकान्त मे सलाह देने वाली मित्र, घर-गृहस्थी की बातों में उपदेश देनेवाली गुरू, पति-भक्ता, पति प्राणापत्नी उन्हीं को मिलती है जिन्होंने किसी पुण्य तीर्थ में अच्छी तपस्या कर रक्खा है। गजगामिनी जिसकी चाल के आगे हंसो की अपनी चाल का घमंड चला जाता है, जिस पिक वैनी की बचन माधुरी सुन कोकिला लज्जित हो मौन-व्रत धारण कर लेती है जिसके नव-नीत कोमल अंगों के साथ होड़ होने में चमेली की कोमलता पत्थर-सी

कड़ी मालुम होती है, शोभा और सौन्दर्य की अधिष्ठात्री लक्ष्मी जिसके लावराव जलधि की लहरी में अचम्भे में आप गोता खाने लगती हैं:—

"एक नारी सुन्दरी वा दरी वा"

भर्तृहरी की इस उक्ति ऐसी ही रुद्द वामिणी के मिलने से सुघटित होती हो। इत्यादि, इस पत्नी के गुणाणवि को कहाँ तक पल्लवित करते जाँय। इसकी फल स्तुति में विश्वगुणादर्श का यह श्लोक उपयुक्त मालुम होता है:—

व्यापारान्तरमुत्सृज्य वीक्षमाणो वधुमुखम्।
यो गृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः॥

सब काम काज छोड़ जो वनिता-भक्त पत्नी के मुख की छबि निरखता हुआ घर में सोया करता है वह मूर्ख अवश्यमेव दरिद्र का दास बन जाता है।

[हि० प्र० मार्च १९०४]

कौआपरी और आशिकतन

आज हमारे पंचमहाराज गोपियों में कन्हैया के परतो पर कौअपरियों के बीच आशिकतन बनने की ख्वाहिश मन में ठान भोर ही को घर से चल पड़े—

"मन लगा गधी से तो परी क्या चीज़ है"

यह मत समझो हमारे पंचमहाराज आशिकतनी में किसी से पीछे हटे हुये है घर में चाहे भूँजी भांग न हो दिल दिमाग तो सात ताड़ की ऊंचाई से भी अधिक ऊँचा है। नेउले का सा मुँह सूरत में साक्षात् आया गुल, किन्तु सौन्दर्य और हुस्न में कोटि कन्दर्प लजावन तरहदारी में मटियाबुर्ज के नौबाब किस हक़ीकत में। अबे ओ खडूडेदार बुल्ले। क्या तुझे भी आशिकतन बनने का हौसिला चर्राया क्या? सूरत लंगूर मगर दुम की कसर है। दुम न हो दुमदार सितारे को नोच कर ला दूँ। अरे ओ बीबुहो! अञ्चनगिरि पर्वत की श्यामता का अनुहार करने वाले तुम्हारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग की छवि पर तन मन सब वारे ये मुफलिस कल्लाच होकर भी आशिकतनों में नाम लिखाये तुम्हारे पीछे खराब खस्ता हैं, तुम्हारे लिए बेकल हैं। इश्क के फन्दे में गिरफ्तार बेबस हैं, असीर हैं, बेकल इतनेकि कलकत्ता को कौन कहे कालापानी छान आने पर भीतुम उन्हें अपना दासानुदास चरण सेवक कर लेने को राजी हो तो उन्हें कोई उजर नहीं हैं। अब तो इस कूचे में पाँव रख चुके हैं। आशिकों की फिहरिश्त में

नाम दर्ज हो गया। लोकदिन्दा और बदनामी को कहाँ तक डरै। ओखली में सिर दै मूसलो की धमक से कहां कोई बच सकता है। शरम को शहद समझ चाट बैठे। बिना बेहयाई का जामा पहिने आशिक के तन जेब नहीं—

"गादे इश्क् के है हम आशिक।
तेरी जुदाई मे मल मल के हाथ रहते हैं॥"

हाय मेरी कोआपरी - कौआपरी - कौआपरी - अफसोस जर दिया जनानो के पास माल न हुआ नहीं तो कौआपरियों की पलटन खड़ी कर हम उसके कपतान बनते या तो शाहवाजिद अली किसी जमाने में हुये थे या अब हमी इस वख्त देख पड़ते। अच्छा तो क्या बिलाई से भैंस लगती है किसी मालदार को चलकर फंसावै ओ हो! आप है-पण्डिअमुक! अमुक! अमुक। बाबू फला। फला। फला। मिस्टर सो ऐण्ड सो। सो ऐण्ड सो। सो एण्ड सो! लाला साहब वगैरह। वगैरह। ओः खोः। आप क्या है—बला है। करिश्मा है। तिलस्मा हैं। फिनामिना है आश्चर्य और अद्भुत तथा लोकोत्तर वस्तु का सन्दोह है। उठती उमर और जग जानी जवानी के जोश के उफान में बीबी लोकमोहिक के नवासे हैं।

"चुलबुल चालाक चतुर चरपर छिन-छिन में होत।
छैले छबीले छिछोरे ओर छोर के"॥

क्या कहना आप ही तो हैं। भला यह तो कहिये आपने कितने करा-टाप और पदाघात के पश्चात पदाधिरूढ़ हो अनङ्ग अखाड़े की पहलवानी प्राप्त कीः—"सदा शठः शठापालं मल्लो मल्लाय शक्ष्यति"

सींक से पतले आप के भुजदण्ड आप की पहलवानी की गवाही दे रहे हैं! मुरछल आप हाथ में क्यों लिये रहते हैं? नहीं नहीं यह तो नीम की टेहनी है क्या कौआपरियों में नवधाभक्ति के साधन का योग सिद्ध हो गया?

"स्मरणं कीर्तनं विष्णोरर्चनं पादसेवनम्"

धनुषकार कमान सी झुकी हुई कमर से भी बोध होता है आप की तपस्या सिद्ध हो गई महाप्रसाद पाय गये—

लज्जाणामब्दमेकन्तु धूम्रपानमधोमुखी ।

उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम ॥

सुमुखी नहीं सुमुखो कहिये—सुमुख, दुर्मुख, कृष्णमुख, घोड़मुख,

लोखरी मुख, बीघमुख, मुख के जितने विशेषण जोड़ते जाइये हम सब का एक-एक उदाहरण आप को देते जांयगे। गरज कि पञ्चमहाराज आशिकतनी के महकमे को बीच तक टटोल इसे अथाह और वे ओर छोर पायऊब गये और निश्चय किया कि इन कौआपरियों के फन्दे में पड़तन और धन दोनों का तहस-नहस है। ईश्वर शत्रु को भी इनसे बचाये रक्खे यही सब सोचते-विचारते घर लौटे।

[हि॰ प्र॰ अप्रैल १८९८]

मेला-ठेला

मसल है—

"काज़ी काहे दुबले शहर के अन्देशे"

ज़माने भर की फिकिर अपने ऊपर ओढ़े कुढङ्गों के कुढङ्ग से कुढते हुए मनीमन चूरंचूर नहूसत का बोझ सिर पर लादे पंच महाराज उदासीन घर बैठे रहा करते थे। आज न जानिये क्यों मेला देखने का शौक चर्राया तो दो घड़ी रात रहते भोर ही को खूब सजधज पुराने ठिकरे पर नई कलई के भाँति तेल और पानी से बदन चुपड़ घर से निकल चल खड़े हुये। मेला क्या देखने गये मानों अपना मेला औरों को दिखाने गये खैर पढ़ने वाले जैसा समझें। एक ओर निपटते चलिये—"बचो हटो बचो" "सभा में दोस्तों इन्दर की आमद है" "मस्तो सम्हल बैठो जरा हुशियार हो जाओ।" भिंगुरू साब की सवारी है! खड़ूडेदार वुक्षा सेर भर मास हो तो रफ़ू हो, उस पर खूबसूरती और नज़ाकत के नखरे किससे देखे जाँय! अबे ओ। कोचवान सोता है क्या! जरा चेतकर जोड़ी हाँक। जानता नहीं, मेला है झमेला है, तमाशबीनों की भीड़ का रेला है। यह दूसरे कौन है-राय दुर्लभचन्द के पोते राय सुलभचन्द।

"नाम लखन चन्द मुंह कुकरे काटा!"

मानों मांस का लोदा थूहा सा रक्खा हुआ। विधाता की अद्भुत सृष्टि का एक नमूना। किस मतलब से गढ़ा गया, कौन बतला सकता है!

कुम्हार का बर्तन होता, बदल लिया जाता। हाँ आना, ब्रह्मा महाराज इस को गढ़ते समय दो चित्ते हो दुविधे में पड़े थे या—

"लुक एँड लाफ"—हाथ में लिये रहे हो।

अब यह दूसरे कौन आये-रियासत की गठरी का बोझ सिर पर लादे राय कंबख्तचन्द के बली अहद बदबख्त बहादुर। जरदी मुंह पर छाई हुई सीकिया पहलवान क्यों हो रहा है? क्या इसको बदन सुखाने वाला रोग हो गया है? नहीं नहीं ऐयाशी और शराब ने इसका यह हाल कर डाला कुन्दे नातराश यह दूसरा इसके साथ कौन है—नरकू महराज के सगे नाती, अक्षर से भी कभी भेंट हुई है, कौन काम है? न हम पढ़े न हमरे आजा पढ़ै-लिखैं क्या सुआ-मैना हैं, पढ़ा लिखा तू पंच।

"बह बह बहै बैलवा बैठे खांय तुरंग।"

हमारे कुल में पढ़ना-लिखना नहीं सोहता। हमारे बाप के छोटे ताऊ गठरी भर पोथी पढ़ डालिन। रहा जवानै उजीह गये। तब से हमारे ताल चरण का सिद्धान्त हो गया है—

"हम पंचन के वंश में कोई नहीं विद्वान।
भांग पियैं गांजा पियैं जय बोलैं जिजमान॥"

"चपलान् तुरगान्परिनर्तयतः पथि पौर जनान्परिमर्दयतः।"

ये कौन हैं—सींग पूछ कटाय बछड़ों में दाखिल अहल योरप। पूरे जेन-टिलमेन शाह पनारूदास।

"बाबू न कहना फिर कभी मिस्टर कहा जाता है हम।
कोट पतलून बूट पहने टोकपी सिर पर धरे।
साथ में कुत्ते को लै के सैर को जाता है हम।
दियानतदार अपनें कौम में मशहूर हैं।
सैकड़ों लोगों से चन्दा लेके खा जाता है हम।
खाना-पीना हिन्दुओं का मुझको खुश आता नहीं।

बीफ, काँटा, चमचा से होटल में जा खाता है हम।
भांग, गाँजा, चरस, चंडू घर में छिप छिप पीते थे।
अब तो वे खटके हमेशा ह्विस्कि ढरकाता है हम।"
"पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा पतित्वा धरणी तले।
उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।"

"एकेन शुष्क चणकेन घटं पिबामि गंगा पिबामि सहसा लवणार्द्रकेण।"

सच है—

"एकां लज्जा परत्यज्य त्रैलोक्य विजयी भवेत्।"

शाबास गाज़ी मर्द! अच्छे वंश उजागर कुल की कलंगी पैदा हुये।

"वंशस्याग्रे ध्वजो यथा।"

लू लू, है जाने दो, इस मुछन्दर को। लो इधर ध्यान दो छल्लेदार बालों में तेल टपकता हुआ, पान के बीड़ो से गाल फूका मानों बतौड़ी निकली हो, आड़ा तिलक मुंह चुचुका, आशिकतन, हिमाकत नज़ाकत शानोशौकत में लासानी। घर में भूँजी भाँग भी नहीं, पर बाहर मानों दूसरे नौवाबशाह वाजिदअली। अरे खिलौनेवाले बाबू साहब को खेलौना दे। चट्टुआ भी तेरे पास है? दे बाबू साहब चट्टुआ चाटेंगे। चरखी है। क्या लेगा? ऊः पाकेट खाली।

"दान पुण्य को कौड़ी नाहीं शिवकोटी को घोड़ा।"

जाने दो। छोड़ दे बालक का पिण्ड, औ खेलौनावाला जा। क्यों किसी की पोल खोल फजीहताचार करता है? आहा कहीं सुर्ख कहीं बैगनी कहीं नीली कहीं पीली भाँति भाँति के रंग की बदली घटा की घटा किधर से उमड़ी चली आ रही है। यह कौन है—बी० हुस्नो और यह दूसरी बी० बानो। बी० खानो, मखानो, ग़ुमानो, कमानो, अमीरों की इमारत, शहर के शहरीयत की शान, बिसनी आशिक तनों की मान और यह दूसरी कौन है बी० चुहड़ो। अरे ओ बी० चुहड़ो अंजनगिरि पर्वत की श्यामता का

अनुहार करने वाले तुम्हारे अंग प्रत्यंग की शोभा पर तन मन धन सब वारे हुये ये मुफलिस कल्लांच खराब खस्तह मुहब्बत के फन्दे में गिरफ्तार, अपना सब कुछ समर्पण कर ठिकरा हाथ में ले दर दर भीख माँगने लायक हो गये। अब और क्या चाहती हो ? शरम को शहद बनाय चाट बैठें, बिना बेहयाई का जामा पहने आशिक़ के तन जेब नहीं, गाढ़े इश्क के आशिक़ है, जुदाई में मलमल के हाथ रहते हैं। अफ़सोस जर दिया ज़नानों को माल पास न हुआ, नहीं तो कौआ परियों की फौज खड़ी कर आप उसके कपतान बनते। या तो किसी समय मटियाबुर्ज के नौवाब थे या इस समय यही देख पड़ते। आहा आप हैं—पण्डित अमुक-अमुक-अमुक! पण्डित जी नमस्कार। यह दूसरे कौन हैं—बा-कान्त देव कि महाशय भाला वासेन! और यह बाबू फलाँ-फलाँ-फलाँ। मिस्टर सो एण्ड सो! गुड मार्निंग मिस्टर जान बुल! हो डू यू डू? और यह सेठजी। जै गोपाल सेठ जी और यह आप। ओः खो! आर क्या हैं, बला है करिस्मा है तिलिस्मा हैं - फिना मिना है—आश्चर्य अद्भुत तथा लोकोत्तर वस्तु का सन्दोह हैं। उठती उमर जग जानी जवानी के तूफान में अन्धे न जानिये कितने कटाप और पदाघात सह तब अनंग के अखाड़े की पहलवानी प्राप्त की हैं। गरज कि ऐसे कितने कुढंगों का ढङ्ग देख पंच महराज उब गये और मन में दृढ़ संकल्प कर लिया कि मेले ठेले के कभी डाँके न आना। पछताते हुए घर लौट आये!

[सन् १८९६ ई०]

प्रेरित-पत्रः—

एडीटर महाशय,

आप यह तो जानते ही है कि मिष्टर शुक्राचार्य हमारे पुराने मित्र हैं-- उन्होंने मुझे एक पत्र भेजा है--वह मैं ज्यों का त्यों नीचें लिखे देता हूँ-- यदि आपको अपने पाठकों पर कुछ दया हो तो उनके हितार्थ छाप दीजिये—

मिष्टर शुक्राचार्य मुझको लिखते हैं:—

मित्रवर,

आप से मै अपनी कोई बात छिपा नहीं रखता विशेष कर ऐसी बात जिससे आप लाभ उठा सकैं--चार दिन की बात है कि मैं शहर अबोधनगर की अन्धी गली में घूम रहा था कि एक बड़ा भारी साइन बोर्ड मुझे दिखलाई पड़ा, उसमे लिखा था Dr. A. P. Block head M. B. F. R. C. S. Edinburgh. F. M. K. C. S. I.C. London and New york etc.

इन लम्बी चौड़ी उपाधियों को देख मेरे जी मे उक्त महाशय के दर्शन की अभिलाषा उत्पन्न हो गई--मैं चट पट खट खट कर ऊपर चढ़ गया, तो सबके पहले जो वस्तु द्वार पर मुझे देख पड़ी वह एक मनुष्य के शरीर का पंजर था। पहले मैं देखकर ही चौंका और पीछे हट गया,

परन्तु यह सोच कर कि यह तो डाक्टरो की कारवाई का चिन्ह ही हैं और यही याद दिलाने के लिये द्वार पर रक्खा गया है कि हमारी देहली (ड्योढ़ी) जिसने नांघा और हमारे फेर में आया उसका यही हाल होता है मैं साहस कर अन्दर घुसा--अन्दर देखने में आया कि कोट पतलून डांटे एक युवा पुरुष एक कुर्सी पर दो एक शीशी सामने मेज़ पर धरे बैठें है और वह एक शीशी के लेबिल को बड़े ध्यान से देख रहे थे। मैं जूता खटखटाया आप के पास तक चला गया परन्तु डाक्टर साहब ने यद्यपि एक कनक्खी से मुझे देख लिया था फिर भी अपने शीशी के ध्यान में लगे रहे मानो बड़े मर्म की बात सोच रहे हों और किसी बात का ध्यान ही न हो-- मैं कुछ देर तक तो चुपके खड़ा रहा कि देखें डाक्टर साहब कब आँख उठाते हैं-और वहाँ कोई कुर्सी भी न थी जिस पर मैं बैठ जाता--निदान यह विचार कि इस भाँति का Dumb show कब तक रहेगा, मैं बोल उठा, "डाक्टर साहब मैं........"

इतना कहते ही डाक्टर साहब इस तरह चौंके मानों उन्हें हमारे आने की कुछ खबर ही न थी पहले तो आप ने मुझे सिर से पैर तक देखा और कदाचित् यह देखा कि मैं फैशन के तौल में उन से भौंभी बराबर भी कम न था उठ खड़े हुये और इधर उधर देखने लगे-मैं समझ गया कि यह कुर्सी ढूंढ़ रहे हैं-डाक्टर साहब को जब कुछ देख न पड़ा तो कुछ सिटपिटाये से मालूम पड़े-मैं यह देख झट टेबिल पर बैठ गया और बात छेड़ दिया--डाक्टर भी कुर्सी पर बैठ गये और हमें ऐसा जान पड़ा मानों बड़ा भारी बोझा उनके सरसे उतर गया--मैंने पूछा "क्या डाक्टर ब्लाकहेड आप ही है ?

डा०--वेल। यस। जी हाँ मैं ही हैं-आप कुछ काम--

मैं--क्या आप ने विलायत में डाक्टरी सीखा है ?

डा०--हम विलायत बहुत दिन रहा पर सीखना, पढ़ना कैसा-हम अकल का जोर से डाक्टरी करता-सीखता बेवकूफ लोग--

मैं—तो क्या जितने लोग वर्षों सिर पचा कर पढ़ते हैं और मेहनत करते हैं सब बेवकूफ है ?

डा०—आलवट-जो अकल रखटा उसको सीखना क्या काम दुनियाँ में कोई बिमारी नहीं जो हम अकल का जोर से नहीं आराम करने सकटा, हमारा नूसखा किसी को शूझने नहीं शकटा।

मैं—क्यों डाक्टर साहब ! जब आपने पढ़ा नहीं तो आपने M. B. F. R. C. S. इत्यादि उपाधियां कहां पा लीं।

डा०—(बड़े जोर हंस कर) ओह हाः। हाः। हाः। आप कूश नहीं शमझटा—यह सब दिखलाने का बाट—हमारा काम का नेईं—लेकिन जैसे हम बहुत चीज दिखलाने को खरीदा, यह भी खरीद लिया, जिससे नाम में लगा रहे। ओ हो हो हो अब आप समझा—यह सब कूरा बात नहीं—हमारा अकल सब कूरा है, आप कोई बिमारी बटावै हम अभी नूसखा लिखटा—देखिये हम कैसा कैसा बिमारी अच्छा करटा है।

यह कह कर उन्होंने टेबिल के दराज से एक कागज निकाल कर मुझे दिया—यह डाक्टर साहब का Advertisrement, था—इसमें आप की बड़ी प्रसंशायें लिखी थी—इसमें एक बात भी लिखी थी कि Dr. A. P. Blackhead, ORIGINAL Doctor हैं—आप आयुर्वेदिक यूनानी और विलायती ढंग सब ही कुछ जानते है—और आपने आज तक ६००० रोगियों को अच्छा किया है—यह पढ़ मैं बोला "क्यों डाक्टर साहब आपने ६००० रोगियों को अच्छा किया है ?"

डाक्टर बोले—अलबट—यह कह आप ने एक किताब निकाली जिसमें बहुत से पुरुष और स्त्रियों के नाम थे।

मैंने पूछा—"क्यों डाक्टर साहब आपने इतनों का इलाज किया है या इतनों को अच्छा किया है ?"

डा०–वो एक ही वात, हमारे यहां जो आया वह आप ही अच्छा हो जाता–आप अपना नाम बतलाइये हम लिखें।

मैं–मेरा नाम तो मिष्टर शुक्राचार्य है परन्तु क्यों साहब आपने तो मेरा इलाज किया नहीं जो मेरा नाम लिखते हैं।

डा०–(रजिष्टर में मेरा नाम लिखकर) ओह हमारा यहां आप आया है तो जरूर कूछ बिमारी होगा, और हम अच्छा कर देगा। जो बिमार न हुआ तो भी हमारे यहां से अच्छा जायगा।

मैंने यह सोचा कि अब डाक्टर का इम्तिहान लेना चाहिये–यह विचार कर मैं बोला–"डाक्टर साहब आपने कहा कि मैं हर तरह की बीमारी दूर करता हूँ मुझे इश्क की बिमारी है आप इसकी क्या दवा बतलाते है।"

डाक्ट साहब सर पर हाथ धर कर सोचने लग और थोड़ी देर बाद एक कागज पर कुछ लिखने लगे और बोले अच्छा मैं आप के वास्ते नुशखा लिखटा, आप इससे अलबट अच्छा हो जायगा–उन्होने कागज़ मुझे दे दिया उसकी नकल मैं नीचे देता हूँ।

वास्ते मिष्टर शुक्राचार्य।

इश्क़ का नुशख़ा।

घृणा—८ औंस
दृढ़ प्रतिज्ञा—८ पौंड
बुद्धि—२ ग्रेन
धैर्य—२ पौण्ड
लापरवाही—२ औंस

इन सब द्रव्यों को बीस पौण्ड जीवटका पानीमें मिलाकर उसमें २ पौण्ड लापरवाही का मिश्री डालकर, बदचलनी का आँच का जोश दो-आधीरात के वखत रोज उसका २ औंस के हिसाब से सेवन करो सालभर में बिमारी दूर होजायेगा।

यह कुल दवाईयाँ अबोध नगर मोहल्ला अन्धीगली Dr Blockhead के यहां मिल सकती है।

मैं इसको ले विदा हुआ और यह सोचा कि कदाचित् आप इस्में इश्क़ आज नये जवानों के इश्क़ की बिमारी के लिये कुछ भला कर सकें, आप के पास भेजता हूँ—

आप का पुराना मित्र शुक्राचार्य A. S.

[सन् १६०४ ई०]

पञ्च महाराज

माथे पर तिलक पाँव में बूट चपकन और पायजामा के एवज कोट और पेंट पहने हुये पञ्च जी को आते देख मैं बड़े भ्रम में आया कि इन्हें मैं क्या समझूँ पंडित या बाबू या लाला या क्या ? मैंने विचारा इस समय हिकमत्त अमली बिना काम में लाये कुछ निश्चय न होगा, बोला— पालागन, प्रणाम्, बन्दगी, सलाम, गुडमार्निंग पंच महाराज—

पञ्च—न-न-नमस्कार नमस्कार-पु-पु-पुरस्कार-परिस्कार,

मैंने कहा—मैं एक बात पूछा चाहता हूँ बताइयेगा—

पं०—हां हां पू-पू पूछोना-ब-ब-बताऊँगा क्यों नहीं,

आप अपने नाम का परिचय मुझे दीजिये जिससे मैं आप को जान सकूँ कि आप कौन हैं—

पं०—प-प-परिचय क्या ह-ह-हमतो कु-कुलीन है न,

मैं अचरज में आय कहने लगा एँ कु-कुलीन कैसा ?

पं०—हां अ-अ-और क्या,

तो क्या व्याकरण के अनुसार कुकुत्सितः कुलीनः कुकुलीनः अर्थात् कुलीनों में सब से उतार—अथवा कुत्सितः प्रकारेण कुपृथिव्यांलीनः—क्या इस मनुष्य जीवन में आप को क्या लोग अतिनिन्दित समझते है ?

पं०—अजी तुम तो बड़ी हिन्दी की चिन्दी निकालते हो-हम कुलीन है एक कु को बतौर ब्याज के समझो—

मैंने फिर कहा—अजी ब्याज कैसा बड़े-बड़े सेठों के समान क्या कुलीनता में भी कुछ ब्याज देना होता है—मेरे मन में कुछ ऐसा आता है कि यह कुलीन कुलियों की जमा है तो यहाँ आपका क्या काम है जाकर कुलियों में शामिल हो बोझा ढोओ—

पं०—नहीं नहीं तुमतो बड़े कठ हुजती मालुम होते हो अरे कुलीन के अर्थ हैं, अच्छे वंश में उत्पन्न-अबतो समझ में आया—

मैं फिर बोला—तो क्या अच्छे वंश में पैदा होने ही से कुलीन हो गये कि कु [illegible]नता की और भी कोई बात आप में सद्वृत्त अथवा विद्या इत्यादि भी है—

पं०—हम तो नहीं हमारे पूर्वजों में कोई एक शायद ऐसे हो गये हो विद्या वद्या तो हम कुछ जानते नहीं न सद्वृत्त जाने क्या है—हां पुरुखों के समय से जो वित्तं भूर दक्षिणा बंध गया आज तक बराबर पुजाते हैं। और अङ्गरेजी फेशन भी इख्तियार करते जाते हैं और फिर अब इस संसार में कौन ऐसा होगा जो मिलावटी पैदाइश का न हो वैसा ही मुझे भी समझ लो—पैदाइश की आप क्या कहते हो पैदाइस कमल की देखिये कैसे मैले और गंदले कीचड़ से उसकी उत्पत्ति है तो जब हम कुलीन है तो हमें अपने कुल का अभिमान क्यों न हो—

मैं—पंच महाराज यह तो वैसी ही है कि बाप ने घी खाया हाथ हमारा सूँघलो खाली पैदाइश से कुछ नहीं होता "आचारः कुलमा ख्याति" कुछ आचार विचार भी जानते हो—

पं—डैम आचार विचार इसी की छिलावट में पड़े हुये लोग अपनी जिन्दगी खोये देते हैं तरक्की तरक्की चिल्लाया करते हैं और तरक्की खाक नहीं होती—इसी से तो इन सब बातों को हम फिजूल समझ आजाद बन गये हैं और इस समय के जेंटलमेनों में अपना नाम दर्ज करा लिया—

सच पूछो तो शराब और कबाब यही दोनों सामयिक सभ्यता और कुलीनता का खास जुज़ है–हां इतनी होशियारी ज़रूर रहै कि प्रगट में बड़ा दंभ रचे रहै ऐसा कि कदाचित् 'कभी कोई देख भी ले तो रोब में आ किसी को मुंह-खोलने की हिम्मत न रहे—

मैं०—हां यह ठीक कहते हो पर कुछ गुण की पूंजी भी तो होनी चाहिये—

पं०— None sense) दुनियाँ में कौन ऐसे होंगे जो अपने पुरखों के कुलीनता का दम न भरते हों और गुण तो वे सीखें जिनको कहीं दूसरा ठिकाना न हो यदि गुण सीखकर पेट चला तो कुलीनता फिर कहाँ रही—

मैंने अधिक अपने माननीय मित्र की पोल खोलना मुनासिब न समझा इससे उनसे दो चार इधर उधर की बात कर रफूचक्कर हुआ।

(हि० प्र० १९०३)

—×—

रंगीला दृश्य

अपने कमरे में जाकर थोड़ी देर गपशप कर पलंग पर लेटा-बिस्तरों ने मुझे अपनी गोद में पड़े देख बड़े प्रेम के साथ अपने शीतल अङ्गों से मुझे आलिंगन करते करते तुरन्त अपनी प्रिय सखी निद्रा के हवाले कर दिया—अब वही हरे लाल पीले आदि रङ्ग जिनका अक्स या प्रतिच्छाया मेरे दिमाग पर अब तक पड़ रहा था अपनी-अपनी सूरत बदल कर चक्कर खाने लगे—

देखता हूँ कि एक बहुत उत्तम स्वच्छ हरियाली से घिरा हुआ एक स्थान है। वहां एक स्फटिक शिला पर बैठी एक युवती अठला-अठला कर अपनी अज्ञानता जताने के बहाने अपनी धानी साड़ी का आंचल खिसकाकर रसिकों का दिल निचोड़ रही है--मैं भी अपने चश्मे की अकड़ में आंख खून लगाय शहीदों में जा मिला और पास जाय पूंछा-आप कृपा कर अपना नाम बता सकती है? वह चंचला अचला अपना अंचला सम्हाल बोली आप मेरा नाम इन्हीं (अपने चाहने वालो की ओर इशारा कर) लोगों से पूछिये—मैंने फिर कहा, मैं तो आपही के श्री मुख से आपका सुधा स्पन्दी नाम सुन करणकुहर पवित्र किया चाहता हूँ—तब उसने बड़े नाजो नखरे के साथ कहा यों तो मेरे नाम अनेक हैं। किन्तु मेरा प्यार का नाम विजया है और लोग मुझे सदाशिव की अर्द्धांगिनी पार्वती की प्रिय सखी भी कहते हैं।

यह सुन कर मुझे कुछ अचरज सा हुआ और अब मैंने इसके चाहने वालों की ओर दृष्टि फेर देखा तो मुझे उसमें सब हिन्दू ही हिन्दू देख पड़े उन में भी ब्राह्मण तो तनमनसे इसपर अपने को न्यौछावर किये थे—कोई बगल में पोथी दबाये मुहबाये बिलार सा ध्यान लगाये इसकी ओर देख रहे हैं—कोई स्वच्छ मांजा हुआ जनेऊ धारण किये माथे में भस्म का त्रिपुण्ड पोते बड़ी-बड़ी चुटिया रखाये आंख फैलाये ताक रहे हैं—एक ओर सडे मुसंडे पंडे गले में गंडे बांधे कूड़ी सोटा हाथ में लिये अलगही ढाई चावल पका रहे हैं और यह भी मुझे मालुम हुआ कि ये सब उनके पाने को ऐसा ललचा रहे थे कि मानो यदि वश चले तो उसी दम उठाकर घोल के पी जांय—ये लोग यह देख कि मैंने उस धानी साड़ी वाली अलबेली को न तो प्रणाम किया न उनके समान मेरे मुँह में पानी भर आया, मुझ पर कुछ क्रुद्ध सा हुये और मेरी ओर आ खड़े हुये उसमें से एक तो रूमाली कसे हुये था उपर से जोगिया रङ्ग का एक अगोछा लपेटे ऐंठते हुए पास पहुँचा और कहने लगा, ओ अन्धे आंख पर की ठिकड़ी हटा कर इधर ताक, तू नहीं जानता, यह सदाशिव की विभूति है "इसका नाम कमलावती रहे नैनभरपूर, ऊधो खाई सन्तो खाई, खाई कुंवर कन्हाई—जो विजया की निन्दा करै उसे खाय कालिका माई—बंअगड़ बं दे तीन-छिट्टे भूंजी के नाम—" इस प्रकार की इनकी भोंड़ी कविता और महा असभ्य आचरण देखकर मुझे गुस्सा आया तो बड़ा पर "कमजोर का गुस्सा मार खाने को निशानी" मन में सोचा कुछ भी बोलता हूँ तो ये सबके सब मेरे उपर टूट पड़ेगें और ये संडे मुसंडे डंडे से पलेथन निकाल डालैगें—यही सब सोच तुरन्त दुम दबाय खीसें (दाँत) काढ़ दी और कहा "वाह महाराज क्या ही उत्तम कविता है हम लोग बन्दर के समान क्या जाने आदी का स्वाद, हम को उसके जानने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी आप ठंढे रहैं हम तो आप लोगों के चेले हैं"—इतना कह मैंने विजया

देवी को दूर ही से प्रणाम् किया और जाना ही चाहता था कि एक ओर से कहकहे के शब्द ने मुझे चौंका दिया--

जिधर कहकहे का शब्द सुन पड़ा था उसी ओर मैंने मुख मोड़ा भागने को तो था ही कि चित्तने मेरी अगाड़ी (आगे) पिछाड़ी (पीछे) खोल दी और २० मील की घंटे की चाल के अनुसार उसी ओर को छूटा जिधर से शब्द आया था और डेढ़ या दो मिनट में वहां पहुँच अपना दम ठिकाने करने लगा--जब जामे में आया तो एक नये किस्म का तमाशा देख पड़ा--बहुत से मनुष्यों के कई झुण्ड नजर पड़े इनमें पहिला झुण्ड फेशन परस्त कोट पैंट वाले जेंटिलमेन आफ दि नाइंटींथ सेंचुरी था ये सब एक नाज़नीन सुर्ख पोशाक वाली जो साफ और सुथरे फर्श पर शीशे जड़े हुये कमरे में उछल कूद रही थी, चाहने वाले जो मनमें आता था भकुआ आय बाय शांय बक रहे थे--मैंने कई बार ध्यान दे कानफटफटाय कर सुनना चाहा कि ये क्या बक रहे हैं और किस विषय पर अपनी बुद्धि को गोठिल किये डालते हैं पर सिवाय AhAh once more her health......oh.......a.......you.......Bara को जाद तुम इधर आ.......ना.......भागे......के आगे कुछ न सुन पड़ा --- इनमें से बहुत से महाशयों को तो मैं खूब जानता हूँ--अरे रे रे यह तो बड़े प्रसिद्ध रईस....ओह I am यह यहां क्या कर रहे हैं; इस तरह के टूटे फूटे शब्द सहसा मेरे मुख से निकल पड़े-- मैं पास तो था ही एक महाशय मेरी ओर बढ़ते हुये देखाई पड़े परन्तु वे पैर रखते कहीं थे और जूता कहीं था तीन चार कदम चलने के बाद, ऐसी ठोकर ली कि धड़ाम से गिर पड़े और बड़ बड़ाने लगे "oh genmen what.......name........ Ple" यह बक गड़ गाय हो गये--एक महाशय को अभी गाड़ी से उतर उधर आते देख मैं उनके पास गया और नम्रता से पूछा--क्यों सरकार अगर आपका कोई हर्ज न होता हो तो मुझे इस मतवाली लाल परी का नाम दीजिए,--" अहहह (हंस कर) आप इनका नाम मुबारक मुझसे

दरियाफ्त करते है आइये मैं आपको इनसे Introduce कर दूँ—मगर तबियत अपनी काबू में कर लीजिये, अहहह ऐसा न हो कहीं कि आप भी अंगुली पकड़ते पहुँचा थाम (पकड़) लें"

तब तो मैं सिटपिटाया और कहा, "मैं अंग्रेजी तरीके से न मिलूंगा क्यों कि मैं न तो बूट पहिने हूँ और न फेल्ट, क्या आप भला दो पल्ली टोपी, धोती और सलीम साही से तो काम चले हीगा नहीं तो आप हिन्दुस्तानी तरीके पर मुझे उनसे मिलाइये और केवल नाम मात्र का परिचय दिला दीजिए—वह इस बात पर राजी हो गये और मुझे उसके सन्मुख लाकर खड़ा कर दिया—मैंने तीन बार झुक कर तसली-मात अर्ज की और हांथ पर हांथ धर चुप-चाप खड़ा हो गया—तब हमारे उक्त महा-शय ने मेरा नाम बतलाया और उनका नाम मुझे बतलाया कि आपका "इस्म शरीफ अहहह (हंसकर) अरे भाई कौन सा बतलाऊँ इनकी एक हमशीरा है उन सबों में हाला की रङ्ग में फर्क है लेकिन नाम एक ही है! हाँ नाम बतलाना तो भूल ही गया, अरे इनके नाम का पहला हर्फ शीन है—मेरी समझ में सींग आया। मैंने कहा—क्यों साहब इनके तो सींग मुझे नजर नहीं आती, यह सुन वे बहुत बिगड़े और बोले "तुम तो बिलकुल काठ के उल्लू हो ऐसे बदतमीज बेतहजीब को नाम न बतलाया जायेगा—" मैं चुप हो गया, इस पर वह लाल परी ने मैं (यही नाम उनका रक्खे देता हूँ) ऐसे चुलबुलाहट के साथ मुसकिरा कर प्यार भरी निगाह से देखा कि मैं पत्थर हो गया इस समय मेरी दशा बहुत ही डमाडोल हो रही थी कि अकस्मात् "न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीरा" जो मुझे याद न आया होता तो बेतहाश मैं भी उस युवती से लिपट कर एकबार उनका चुम्बन अवश्य ही कर लेता। धन्य है सच्चिदानन्द तूही ऐसी ऐसी कठिन विषम अवस्था में बचाने वाला है नहीं तो मैं भी उस सुधा के बनावटी धोखे में आय अपनी शुद्ध परिपाटी, बाप दादों के नाम, उच्चकुल के जन्म पाने की प्रतिष्ठा, आदि सब बहुमूल्य रत्नों को एक सेकेण्ड में

क्षार में मिलाय, मुंह में करखा पोत जीते ही नरक में ढकेला जाता। इतने में मेरे बांई ओर लगभग २० गज के फासिले पर लोगों ने बड़ा कोलाहल मचाना आरम्भ किया इस कारण मेरा ध्यान बंट गया, देखता हूँ तो अमुक, अमुक बड़ी लम्बी उपाधि धारी शर्मा, अमुक लाला साहब या बाबू साहब, अमुक प्रसाद, इत्यादि आपस में इस बात पर लड़ रहे हैं कि रूपये की कै चवन्नियां होनी चाहिये, कोई कहता है सात, तो कोई कहता है नहीं पांच और यह कह बार-बार हाथ जोड़ते हैं फिर गाली घूँसे और जूते इन सबों का यथा योग्य व्यवहार कर पीछे बेहोश हो पृथ्वी पर ऐसे हिसाब से गिरे कि मियां युक्लिद होते तो भी वे भी न बतला सकते कि युक्लैदिस की बारहो किताब में कौन से प्रपोजिसन की शकल इन लोगों ने बनाया है एक हजरत पड़े हुये बर्रा रहे हैं—

"शराब थोड़ी सी होती तो हम बजू करते—खुदा के सामने पैदा कुछ आबरू करते"—यह सब तमाशा देख मुझे पुराने लोगो की युग व्यवस्था का ध्यान आया और सोचने लगा हमारे धर्म ग्रन्थो में जो कुछ कलियुग के सम्बन्ध में लिखा गया है सब सत्य है बहुत ही सटीक उतरते हुये पाया जाता है—उनकी भविष्य वाणी हर्फ बहर्फ सच्च मालुम होती है हाय संसारार्णवलंघनक्षम बुद्धि और विवेक सम्पन्न मनुष्य जाति की यह दुर्गति अब नहीं देखी जाती, इनसे तो पशुओं को मैं बहुतअधिक श्रेष्ठ मानता हूँ—क्या सत्य ऐसों को भी हम मनुष्य कहैं ? भाई हम से तो ऐसी भूल कदापि न होगी वरन् हम तो ऐसों को जोंक और खटमल के किस्म के कहते तो बहुत सन्तुष्ट होते—

"अरे ओ गँडेरी वाले इँधर इँधर"

हैं क्या यह किसी भूत की आवाज है—अरे रे यह क्या मेरे हाथ पांव क्यों ठंडे होते जाते हैं। मैं तो अपने को बड़ा निडर माने हुये था आज क्या हो गया फिर भी तबियत में ढाढ़स बांध जी मजबूत कर मैंने अपने आँख की पुतली दाहिनी ओर घुमाई, जब कोई भयानक वस्तु को

न देखा तो बड़ी फुर्ती के साथ उसी ओर को झुक पड़ा—"ओ हो आदाबअर्ज मीर साहब है फरमाइये आप यहां आज किसकी खोज में आ पहुँचे-मेरे इतने पूछने पर मीर साहब बोले—"अरे यार इस काली बेगम ने तो नाक में दम कर दिया—मरे न माँचा छोड़े और हमारे ऐसे बेहयाओं को मौत भी तलब नहीं करती"

उनकी ये बातें सुन मैं अचम्भे में आ गया (मन में कहने लगा) यह काली बेगम कौन है और उससे इस बुढ्ढ की कैसे भेंट हो गई, क्या वास्तव में कोई स्त्री है—जब इन प्रश्नों का उत्तर मेरी मन्द बुद्धि में न आया तो मैंने मीर साहब से पूछा—"क्यों हजरत यह काली बेगम का मुअम्मा मेरी समझ में नहीं आया—"मीर साहब बोले—"अरे खाँ साहब जरा इन्हें बतला तो देते यह क्या पूछते हैं"

खाँ साहब—"वल्लाह तुम भी क्या मजे के आदमी हो काली बेगम की शकल से नहीं तो क्या उसके नाम से भी आशना नहीं हो" मैंने कहा—"भाई तुम लोगों के नाम भी तो पेचीदा होते हैं, कैसे समझ में आवे" तब मुझे इन्होने एक रकाबी की ओर देखने को कहा,

"देखो इस चांदी की कुरसी पर आप ही तशरीफ रखती है"

"वाह जी अन्धा बनाते हो यह तो अफीम है"

"तोबा तोबा अरे! यह नाम तो दुश्मनों ने इनका रक्खा है—भाई इस नाम की याद मुझे मत दिलाओ—इतने में मुझे जमुआई आई तो जितने मेरी ओर देख रहे थे, सब मेरी ओर दौड़ मेरा मुँह बन्द करने लगे, साँस के रुकने से मेरा दम घुटने लगा, इसी घबराहट मे मेरी नींद खुल गई—सब झगड़ा समाप्त हुआ पर इसका असर जो मेरे दिल में नकशा सा हो गया, अब तक बना है—

[सन् १९०१ ई०]

—x—

दो चग्घड़ों की बातचीत

किच्चू चौबे—(लम्बी लम्बी मूछों पर ताव देकर) मुन्शी जी ! जैदाऊ जी की यमुना मइया सदा जै रक्खे, कहो आज उदास कैसे बैठे हो ?

मुंशी कमला प्रसाद—कुछ नहीं आओ चौबे जी, कहो आज कहाँ चले, आज तो बड़े खुश दिखलाई पड़ते हो कहीं न्योते में जाते हो क्या ?

चौ०—हम तो तुम्हारेई घर नेवते जैमने की आशा में आये है। हमने आज घाट पर यह खबर उड़ती भई सुनी कि थोड़े दिन बीते तुम्हारी नानी मरगई। सो या बात कूँ ठीक करवेके ताँई आये हैं, सो तुम्हारी चेष्टा और मूछ मुड़ी देख के निश्चय होगयो कि वो बात ठीक है।

मुं० कमला०—नहीं नहीं यह बात बिलकुल गलत है हमारे दुश्मनों ने यह खबर उड़ाई होगी। इधर कई दिन से कुछ तबियत ढीली थी मकान से हवा खाने तक के वास्ते नहीं निकला। इसी सबब से चेहरा कुछ उतरा हुआ है। और कुछ नहीं।

चौ०—(मुसकरा कर) क्यों उस्ताद, "गुरुन से गुरुआई" हम से अब क्यों छिपाते हो, तुम जानते होगे कि हमें कुछ खबर नहीं मिली, तुम तो हमारे जिजमान सूं हमारी बड़ी बड़ी बुराई कीनी और उलटी सीधी समझाय के अपनी बात बनानी चाही। पर याद रक्खो "जो काऊ के ताँई कूआ खोदे हैं वाके लिये खाई पहलें बनजाय है" क्यों है पते

मुं०—(शरमा कर) चौबे जी ! आज बूटी ज्यादः छागई हो तो कुछ देर आराम करलो। जी सावधान हो जायँ तब बातें करना।

चौबे०—हमारो जी तो श्री दाऊजी की कृपा सूं हमेशा सावधान रहे है। पर तुम्हें जां छै सात वर्ष से अकल को अजीर्ण ह्वै रह्यो है सो वाको कछू यत्न करो नाय तो अब जान जायबे को डर है।

मुं०—यह आप क्या बक रहे हैं उजड्डई से आप बाज नहीं आते !

चौ० बाज तुम और तुम्हारे घर के, हम तौ आदमी हैं सीधे से बोलनो होय तो बोलो हम तुमसे कछु कम नाय हैं जैसी इज्जत तुम्हारी वैसी हमारी, धन दौलत तुम ने अपनी लुगाई की बदौलत पायो, हमारो बाप छोड़ गयो। तुम्हारी और हमारी दोनों की जीविका एकई घर सूं चले है फिर तुम जवानी जमा खर्च से झूठी साँची कह के अपने मालिक कूं खुश करते हौ, हम अपनी जान हथेरी पर धरे जहाँ वाको पसीना गिरे वहाँ अपनो खून गिराय वे कूं तइयार हैं तुम कहो कछु और करो कछु, हम मर्द की जबान एक समझे है तुम अपनी ऐंठ में आप जिसकू जो चाहैं सो भला बुरा कह डालते हौ, सच्चे से सच्चे आदमियों कू अपनी अकल के घमंड में झूठो दगाबाज फरेबी साबित कर डालो हो और अपने ऐब कू नेक भी नाय देखो हो. हमें उन विचारेन पै दया आवे है तुम अपनी कलम दवात के जोर में चूर हौ हम अपनी कूंडी सोटा पै पूरे वीर हौं हाँ एक बात में हम तुम सूं जरूर कम हैं तुमारी लुगाई की बड़ाई देस देशान्तर में फैली है लुगाइन सूं ऐसी घिन है कि व्याह लाँई नाय कियो।

मुं०—चौबे जी आज आप बड़ी बुजर्गाना बातें करते हैं आप का हौसिला बहुत बड़ा दिखलाई पड़ता है, आज तक आप ने कभी मेरे साथ इस तरीके की बातचीत नहीं की थी, आप की बातों से तो कुछ और ही जाहिर होता है।

चौ०—सुनो मुंशी। जबसे तुम कूं हमारे भोलेभाले जजमान ने अपने इलाके को मुख्त्यार कीयो तब सूं तुमने सीवाय खर्चा बढ़ायवे के

कोन सो अच्छो काम कीयो ! तुम्हारे इन्तजाम सू जमिदारन ने टाट उलट कर सब छोड़ छाड़ दियो खेती करने वाले भूखे मरने लगे, पटवारी अपनो अलग सिर पटके डारे है पर तुम जब कैफियत लिखवे बैठे हो तो झूठ-मूठ यही लिखते हो कि हमारे गाँव की प्रजा बड़े आनन्द सू है। और जो काऊ ने गलती निकासी तो वाय काऊ हेर फेर सूं जहन्नुम मिलवाय दियो। सब छोटे बड़े तुम्हारे मारे दुःखी है। फिर दुधार गाय की दै लातउ सही जाय है सो तुम ने सबन कू इतनो फजीहत कियो उनसूं मनमानतो रुपया भी लियो और ताऊ पर भी उनको पीठ पीछे गाली दिया। जो कभी वे बेचारे अपने रिस्तेदार या कुटुम्बी की शिफारस करबे गये तो उन्हें फाटक बाहर सूं फटकार बताई और अपनी बिरादरी के लोगन कूं दीवान, मुसद्दी, भंडारी, मुंशी, बनाय दियो। धन्य हो ! लोगन को जैसो तुमने सुख दियो और आत्मा ठंडी कीनी वैसीई दाऊ बाबा तुमारी करै।

मुं०—खैर लोगों के साथ हमने जैसा किया उस से आप को क्या गरज। जमीदार वगैरः भूखे मरे इसमें हमारा क्या नुकसान था मालिक क क्या घाटा, इसकी हम कुछ परवाह नहीं करते भलाई बुराई जो हमारी तकदीर में थी मिली। बहुत सी तदबीरें जो हमनें लोगों की बेहतरी के लिये की उलटी पड़ी या उनमें लोगों को नुकसान हुआ तो हम क्या करें उन्हीं की बदनसीबी। एक बड़ा जलसा कर डाला या यों कहिये कि बगैर दूलह के बरात निकाली जिसमें लाखों रुपयों की आतशबाजी फूंक दी अपने इलाके के एक कोने से दूसरे कोने तक के सब बड़े आदमियों को बुलाया और बड़ी धूमधाम की तो इसमें हमारे या हमारे मालिक का नुकसान ही क्या हुआ। बेवकूफ बने वही जो करजा करके तमाशे में शामिल हुये। आप खूब जानिये कि इसमें भी मैंने बहुत बड़ी चाल खेली थी। और जो जो मैं जानना चाहता था जान गया। ऐसी बातें आपकी ऐसी मोटी अकल के आदमियों की समझ में इसकी बारीकियाँ नहीं आ सकती। और मैं इन सब बातों का जिक्र करना भी

उसूल के खिलाफ समझता हूँ। खैर जाने दो। मगर तुम यह बतलाओ कि अपने ही होकर क्यों बिगड़ गये।

चौ०—याही पै कि तुमने अपनी अकल के जोम में आके मेरी बातन को और को तौर झूठों सांचो मतलब समझ लियो और वाय अपनेई तक नांय मालिक तांई भेज दियो पर याद राखो हम भी तुमारे गुरू। चौबे जी ठहरे हमने भी एक दाँव आजई के लिये बचाय राखो हो जासूं तुमें चारो खाने चित पछाड़ दियो।

मुं०—हाँ मैं खूब जानता हूँ कि आपने वाला वाला कारवाई मेरे खिलाफ खास मालिक से की थी। मगर आप खूब समझिये कि मैंने आप की बातों से वही मतलब निकाला जो आप की मंशा थी अब आप किसी के बहकाये में आगये हो यह दूसरी बात है। खैर जब मेरी बात का कुछ ख्याल नहीं हुआ तो मैं भी ऐसी नौकरी में दो लात मार कर अपने वतन को चल देता हूँ मैंने मालिक के वास्ते जो भलाइयां की वह उनका जी जानता होगा। मगर मेरी बात का कुछ ख्याल न हुआ। इससे मुझे ऐसा रंज है जैसा कि उस शख्श को होता है जिसके सब घर के आग के के सुपुर्द हो जायें। मेरा दिल हरदम घबड़ाता रहता है खाना पीना सोना नाचना गाना यहाँ तक कि बीबी से बोलना तक हराम मालुम होता है क्या करूँ अब मैं सोचता हूँ कि मैंने नाहक ऐसी भारी नौकरी जरा सी बात पर छोड़ दी। हाय। मैं तो इस इलाके का सोलह आने मालिक था। सच है "खुद कर्दरा चे इलाज"।

चौ०—(हंसकर) "सदा न काहू की रही, सदा न बाजी बंम" मुंशी जी। "अब पछताये का होयगो जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत" हमने झूठीं सांचीं कारवाई कछू नाय कीनी मालिक तो तुम सूं या बात पै खफा भयो कि एक तो तुमने वाके गाम के कई हिस्सा कर डारे जा सूं विशेष फायदा नाय दीखे है। दूसरे तुमने हमारी बात का खयाल न कियो।

हमकूं जो न्योतो देदेते तो सब बात ठीक होय जाती! तुम जानो नाय के "अग्रे अग्रे विप्राणाम्"।

मुं०--अजी क्या कहें अब जो होना था सो हो चुका आप हमारे जख्मों को हरा न कीजिये हमने जो कुछ किया बुरा किया। अब हम पर मेहरबानी कर आप अपने डेरे पर तशरीफ लेजायें हमारे सर में दर्द होने लगा बुखार सा आया चाहता है!

चौ०--बढ़ती होय, दिन दूनो रात चौगुनो होय ले अब हम जाते हैं।

मुं०--बहुत अच्छा। आखिरी सलाम।

[सन् १६०५ ई०]

वाजिदअली शाह

हाय ! आज हमीं नहीं रो रहे हैं हमारी लेखनी का भी हृदय विदीर्ण हो रहा है। हँसी मत समझो, मारे दुःख के उन्माद हो रहा है, इससे रक्त काला पड़ गया है, और आंसुओं के साथ नेत्र द्वारा बहा जाता है। हमारा कानपुर यवनों का नगर नहीं सही, पर लखनऊ यहां से दूर नहीं है, वरञ्च यहां से सहस्त्रों सम्बन्ध रखता है। फिर क्यों न लखनऊ के साथ इसे भी शोक हो। सम्पादक और उसके मित्र श्री बाबू राधेलाल आदिक कई लोग प्रत्यक्ष, अश्रु-वर्षा कर चुके हैं। यह बात किसी के देखाने को नहीं, वरंच हृदय के सच्चे संताप से थी। हाय शाह वाजिदअली। हा सुलताने आलम ! हा अख्तर ! हाय सूबे अवध के कन्हैया ! तुम हमारा शासन न करते थे, तुम हमारी जाति के न थे तो भी, हमारा बादशाह कलकत्ते में बैठा है, यह स्मरण हमारे लिए सन्तोषजनक था। तुम्हारा अंतःकरण हमसे ममता रखता था, इसमें कोई सन्देह नहीं।

पर हाय ! दुष्ट दैव से इतना भी न देखा गया, मूर्ख खुशामदी और और अपने दुर्गणों मे भी पराए सद्गुण तक को तुच्छ समझने वाले चाहे जो कुछ झख मारें, पर हम भली भांति जानते हैं कि तुम्हारे दोष भी मनुष्य-जाति की अपूर्ण शक्ति से अधिक कुछ न थे। तुमने अपनी प्रभुता के समय हिन्दू-मुसलमान दोनों को अपनी प्यारी प्रजा समझा है। यह तुम्हारा एक गुण ऐसा है कि यदि तुम में सचमुच के सहस्र दोष भी होते

तो भस्म कर देता। जो मुर्ख और दुष्ट लोग अपने मतवालेपन से दूसरों के पूज्य पुरुषों की निन्दा और उनसे घृणा किया करते हैं उनसे तुम लाखों कोस दूर थे! सहस्रों लोगों का रक्त बहेगा, सहस्रों ललनाओं का अहिवात जाता रहेगा, इस भय से अपने तईं प्रसन्नतापूर्वक दूसरों के हाथ में सौंप दिया। यह गुण तुम्हारा हमारे हृदय को प्रफुल्लित करता है। गुण-ग्राहकता आश्रित-पोषकता और दुःख सुख दोनों में एक रसता आदि के कारण तुम प्रेम समाज के प्रातस्मरणीय हो।

सितम्बर की २१ तारीख तुम्हारे वियोग का दिन है, अतः सहृदयों को दुःखदाई होगी। कहां तक लिखें, शोक के मारे तो अधिक विषय सूझते ही नहीं। इस दशा में भी सहस्रों के पेट तुम्हारे अनुग्रह से पलते थे, हाय! आज उनके चित्त की क्या दशा होगी।

कलिकोष !

कचहरी—कच माने बाल और हरी मानी हरण करने वाली, अर्थात् मुंडन (उल्टे छूरे से मूड़ने वाली) जहाँ गये मुँड़ाये सिद्ध !

दर्बार—दर्ब द्रव्य का अपभ्रंश और अरि अर्थात् शत्रु जैसे सुरारि मुरारि इत्यादि। भाषा में अन्तवाली ह्रस्व इ की मात्रा बहुधा लोप हो जाती है।

अदालत—अदा अर्थात छबि, उसकी लत। पोशाके चमका चमका के जा बैठने वालों का स्थान। अथवा होगा तो वही जो भाग में है, पर अपनी दौड़ने धूपने की लत अदा कर लो! अथवा अदा बना के जाओ लाते खा के जाओ इत्यादि।

हाकिम—दुःखी कहता है हा! (हाय) तो हजूर कहते हैं किम् अर्थात् क्या है बे! अथवा क्यों बकता है।

वकील—वः कील, जो सदा कलेजे में खटकै, अथवा बंग भाषा में वोः की, क्या है, अर्थात् वह तुम्हारे पास क्या है, लावो!

मुख्तार—जिसके मुख से तार निकले, अर्थात् मकड़ी (जाल फैलाने-वाला) अथवा मुक्त्यारि (मुक्ति का अरि जो फंदे में आवै सो छूटने न पावै।)

मुअक्किल—मुआ अर्थात् मरा किल इति निश्चयेन (जरूर मरो)

मुद्दई—ग्राम्य भाषा में शत्रु को कहते हैं, (हमारा मुद्दई आहिउ लरिका थोरैं आहिउ।)

मुद्दालेह—मुद (आनन्द) आ। आ! ले दोत! अर्थात् आव आव मजा ले अपने कर्मों का!

इजलास—अंगरेजी शब्द है, इज (है) लास (हानि) अर्थात् जहाँ जाने से अवश्य हानि है, अथवा ई माने यह, जलासा अर्थात् कोयला सा काला आदमी। अथवा फारसी तो शब्द ही है जेर के बदले जबर अर्थात् अजल (मौत) की आशा (आशा) अथवा बिना जल (पानी) के आस लगाए खड़े रहो।

चपरासी—लेने के लिए चपरा के समान चिपकती हुई बातें करने वाला! न देनेवालों से चप (चप) रासी अर्थ फारसी में हुआ नेवला है तू'—अर्थात 'चुप रह, नेवला की तरह तू क्या ताकता है।

कहनेवाला—अथवा फारसी में चप के माने बायां अर्थात् अष्टि के हैं (विधि बाम इत्यादि रामायण में कई ठौर आया है) अर्थात् तू बाम नेवला है, क्योंकि काल डालता है।

अरदली—अरिवत् दलतीति भावः।

स्त्री—(शुद्ध शब्द इसस्तरी) अभितस लोह के समान गुण जिसमें। (धोबी का एक औजार)

मेहरिया—जिसकी आँखों में मेह (बात-बात पर रोना) और हृदय में रिया (फारसी में कपट को रिया कहते हैं) का वास हो!

लोगाई—जिसमें नौ गौवों की सी पशुता हो। बंगाली लोग बहुधा नकार के बदले लकार और लकार के बदले नकार बोलते हैं जैसे नुकसान को लोकशान, निर्लज्ज को निरनज्ज।

जोरू—जो रूठना खूब जानती हो!

पुरुख—पुर कहत हैं जेह में खेत सींचा जाथै, और 'ख' आकाश (संस्कृत में) अर्थात शून्य। भावार्थ यह हुआ कि एक पानी भरी खाल जिसके भीतर अर्थात् हृदय में कुछ न हो। 'मूर्खस्य हृदय शून्यं' लिखा भी है।

मनसवा—मन अर्थात् दिल और शव अर्थात मुरदा (आकारान्त होने से स्त्रीलिंग हो गया) भाव यह कि स्त्री के समान अकर्मण्य, मुर्दा दिल बेहिम्मत।

मर्द—मरदन किया हुआ, जैसे लतमर्द।

खसम—अरबी में खिस्म शत्रु को कहते हैं।

सन्तान—जो सन्त अर्थात् बाबा लम्पटदास की आन से जन्मे।

बालक—बा सरयूपारी भाषा में 'है' को कहते हैं। जैसे ऐसन बा अर्थात् ऐसा ही है, और लक निरर्थक शब्द है! भाव यह कि होना न होना बराबर है।

लड़का—जो पिता से तो सदा कहै लड़, अर्थात् लड़ ले और स्त्री से कहै, का (क्या आज्ञा है!)

छोरा—कुलधर्म छोड़ देनेवाला (रकार ड़कार का बदला)

पुत्र—पु माने नर्क (संस्कृत) और त माने तुझे, (फ़ारसी, जैसे जवाबत् चिदिहम्—तुझे उत्तर क्या दूँ।) और रदाने धातु है, अर्थात् तुझे नर्क देने वाला!

"होली है"

तुम्हारा सिर है। यहां दरिद्र की आग के मारे होला (अथवा होला-भुना हुआ हरा चना) हो रहे हैं उन्हें होली है, हैं!

अरे कैसे मनहूस हो! बरस बरस का त्योहार है, उसमें भी वही रोनी सूरत! एक बार तो प्रसन्न होकर बोलो, होरी है!

अरे भाई हम पुराने समय के बंगाली भी तो नहीं हैं कि तुम ऐसे मित्रों को जबरदस्ती होरी (हरी) बोल के शान्त हो जाते। हम तो बीसवीं शताब्दी के अभागे हिन्दुस्तानी हैं, जिन्हें कृषि, वाणिज्य, शिल्प सेवादि किसी में भी कुछ तत्त नहीं है। खेतों की उपज, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जंगलों का कट जाना, रेलों और नहरों की वृद्धि-इत्यादि ने मट्टी कर दी है। जो कुछ उपजता है वह कटके खलिहान में नहीं आने पाता, ऊपर ही ऊपर लद जाता है। रुजगार-व्यौहार में कहीं कुछ देखी नहीं पड़ता। जिन बाजारों में, अभी दस वर्ष भी नहीं हुए, कंचन बरसता था वहां अब दूकानें भांय भांय होती हैं! देशी कारीगरी को देश ही वाले नहीं पूछते। विशेषतः जो छाती ठोंकठोंक वाली बजवा बजवा कागजों के तख्ते रंग रंग देशहित के गीत गाते फिरते हैं वह और भी देशी वस्तु का व्यवहार करना अपनी शान से बईद समझते हैं। नौकरी बी० ए०, एम० ए० पास करने वालों को भी उचित रूप में मुश्किल से मिलती है। ऐसी स्थिति में हमें होली

सूझती है कि दिवाली। यह ठीक है। पर यह भी तो सोचो कि हम तुम वंशज किनके हैं? उन्हीं के न, जो किसी समय वसन्त पंचमी ही से --

"आई माघ की पांचैं बूढी नाचैं डोकरिया"

का उदाहरण बनजाते थे, पर जब इतनी सामर्थ्य न रही तब शिवरात्रि से होलिकोत्सव का आरम्भ करने लगे। जब इसका भी निर्वाह कठिन हुआ तब फागुन सुदी अष्टमी से---

"होरी मध्ये आठ दिन ब्याह मांह दिन चार।
शठ पण्डित, वेश्या बधू सबै भए इकसार"

का नमूना दिखाने लगे। पर उन्हीं आनन्दमय पुरुषों के वंश में होकर तुम ऐसे मुहर्रमी बन जाते हो कि आज तिवहार के दिन भी आनन्द-बदन से होली का शब्द तक उच्चारण नहीं करते। सच कहो, कहीं होली बाइबिल की हवा लगने से हिन्दूपन को सलीब पर तो नहीं चढ़ा दिया?

तुम्हें आज क्या सूझी है, जो अपने पराये सभी पर मुँहँ चला रहे हो? होली बाइबिल अन्यधर्म का ग्रंथ है, उसके मानने वाले बिचारे पहिले ही से तुम्हारे साथ का भीतरी-बाहरी सम्बन्ध छोड़ देते हैं। पहिली उमंग में कुछ दिन तुम्हारे मन पर कुछ चोट चला दिया भी करते थे, पर अब बरसों से वह चर्चा भी न होने के बराबर हो गई है? ऐसी ही उदास लगी हो तो उनसे जा भिड़ो जो अभी तुम्हारे ही कहलाते हैं, तुम्हारे ही साथ रोटी-बेटी का व्यौहार रखते हैं, तुम्हारे ही दो चार मान्य ग्रंथों के माननेवाले बनते हैं, पर तुम्हारे ही देवता पितर इत्यादि की निन्दा कर करके तुम्हें चिढ़ाने में ही अपना धर्म और अपने देश की उन्नति समझते हैं। अरे राम राम! पर्व के दिन कौन चरचा चलाते हो? हमतो जानते थे तुम्हीं मनहूस हो, पर तुम्हारे पास बैठे सो भी नसुढ़िया हो जाय। और बाबा दुनियां भर का बोझ परमेश्वर ने तुम्हीं को नहीं लदा दिया। यह कारखाने हैं, भले बुरे लोग और दुख सुख की दशा होती ही हुआती रहती है। पर

मनुष्य को चाहिए कि जब जैसे पुरुष और समय का सामना आ पड़े तब तैसा बन जाय। मनको किसी झगड़े में न फँसने न दे।

आज तुम सचमुच कहीं से भांग खाके आये हो। इसी से ऐसी बेसिर पैर की हांक रहे हो। अभी कलतक प्रेम सिद्धान्त अनुसार यह सिद्ध करते थे कि मन का किसी ओर लगा रहना ही कल्याण का कारण है और इस समय कह रहे हो कि "मन की किसी झगड़े में फँसने न दें।" वाह! भला तुम्हारी किस बात को मानें?

हमारी बात मानने का मन करो तो कुछ हो ही न जाओ। यही तो तुमसे नहीं होता। तुम तो जानते हो कि हम चोरी चमारी सिखावेंगे।

नहीं यह तो नहीं जानते। और जानते भी हों तो बुरा न मानते। क्योंकि जिस काल में देश का अधिकांश निर्धन, निर्बल निरुपाय हो रहा है, उसमें यदि लोग "बुभुक्षितः किं न करोति पापम" का उदाहरण बन जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है। पर हां यह तो कहेंगे कि तुम्हारी बातें कभी कभी समझ में नहीं आती। इससे मानने को जी नहीं चाहता।

यह ठीक है, पर याद रखो कि हमारी बातें मानने का मानस करोगे तो समझ में भी आने लगेगी, और प्रत्यक्ष फल भी देगी।

अच्छा साहब मानते हैं, पर यह तो बतलाइये जब हम जानने योग्य नहीं हैं तो कैसे मान सकते हैं! छिः क्या समझ है! अरे बाबा! हमारी बातें मानने में योग्य होना और सकना आवश्यक नहीं है। जो बातें हमारे मुँह से निकलती हैं वह वास्तव में हमारी नहीं हैं—और उनके मानने की योग्यता और शक्ति हमको तुमको क्या किसी को भी तीन लोक और तीन काल में नहीं है। पर इसमें भी सन्देह करना कि कोई चुपचाप आखें मीच के मान लेता है वह परमानन्द-भागी हो जाता है।

हि हि! ऐसी बातें मानने तो कौन आता है, पर सुनकर परमानन्द तो नही, हाँ, मसखरेपन का कुछ मजा जरूर पा जाता है। भला हमारी बातों में तुम्हारे मुँह से हि हि तो निकली। इस तोबड़ा से लटके हुए मुँह

के टाकों के समान दो तीन दांत तो निकले। और नहीं तो मसखरेपन ही का सही मजा तो आया। देखो, आखें मट्टी के तेल की रोशनी और कुल्हिया के ऐनक की चमक से चौंधियांन गई हों तो देखो! छत्तिसो जात, बरंच अजात के जूठे गिलास की मदिरा तथा भच्छ अभच्छ की गन्ध से अक्किल भाग न गई हो तो समझो। हमारी बातें सुनने में इतना फल पाया तो मानने में न जाने क्या प्राप्त हो जायगा। इसी से कहते हैं, भैया मान जाव, राजा मान जाव, मुन्ना मान जावो। आज मन मार के बैठे रहने का दिन नहीं है। पुरखों के प्राचीन सुख-सम्पति को स्मरण करनेका दिन है। इससे हँसो, बोलो, गाओ बजाओ, त्योहार मनाओ और सबसे कहते फिरो —होली है।

हो तो ली ही है। नहीं तो अब रही क्या गया है। खैर जो कुछ रह गया है उसी के रखने का यत्न करो पर अपने ढंगसे न कि विदेशी ढंगसे। स्मरण रक्खो कि जब तक उत्साह के साथ अपनी ही रीति-नीति का अनुसरण न करोगे तब तक कुछ न होगा। अपनी बातों को बुरी दृष्टि से देखना पागलपन है। रोना निस्साहसों का काम है। अपनी भलाई अपने हाथ से हो सकती है। मांगने पर कोई नित्य डबल रोटी का टुकड़ा भी न देगा। इससे अपनापन मत छोड़ो। कहना मान जाव। आज होली है। हां हमारा हृदय तो दुर्दैव के बाणों से पूर्णतया होली (होल अंगरेजी में छेद को कहते हैं, उससे युक्त) है। हमें तुम्हारी सी जिंदादिली (सहृदयता) कहां से सूझे?

तो सहृदयता के बिना कुछ आप कर भी नहीं सकते, यदि कुछ रोए पीटे दैवयोग से हो भी जायगा तो "नकटा जिया बुरे हवाल" का लेखा होगा। इससे हृदय में होल (छेद) हैं उनपर साहस की पट्टी चढ़ाओ। मृतक की भांति पड़े पड़े कांखने से कुछ न होगा। आज उछलने ही कूदने का दिन है। सामर्थ्य न हो तो चलो किसी होली (मद्यालय) से थोड़ी सी

पिला लावें, जिसमें कुछ देर के लिए होली के काम के हो जाओ, यह नेस्ती काम की नहीं।

वाह तो क्या मदिरा पिलाया चाहते हो?

यह कलयुग है! बड़े बड़े वाजपेयी पीते हैं। पीछे से बल बुद्धि, धर्म, धन, मान, प्रान सब स्वाहा हो जाय तो बला से। पर थोड़ी देर उसकी तरंग में "हाथी मच्छर, सूरज जुगनू" दिखाई देता है! इससे, और मनो-विनोद के अभाव में, उसके सेवकों के लिए कभी कभी उसका सेवन कर लेना इतना बुरा नहीं है जितना मृतचित्त बन बैठना। सुनिए! संगीत, साहित्य, सुरा और सौन्दर्य के साथ यदि नियम-विरुद्ध वर्ताव न किया जाय तो मन की प्रसन्नता और एकाग्रता कुछ न कुछ लाभ अवश्य होता है, और सहृदयता की प्राप्ति के लिए इन दो गुणों की आवश्यकता है, जिनके बिना जीवन की सार्थकता दुःसाध्य है। बलिहारी है, महराज इस क्षणिक बुद्धि की। अभी तो कहते थे कि मन को किसी झगड़े में फंसने न देना चाहिए, अभी कहने लगे कि मन की एकाग्रता के बिना सहृदयता तथा सहृदयता के बिना जीवन की सार्थकता दुःसाध्य है। धन्य हैं, ये सरगापत्ताली बातें। भला हम आपको अनुरागी समझें या विरागी?

अरे हम तो जो हैं वही हैं, तुम्हें जो समझना हो समझलो। हमारी कुछ हानि नहीं हैं पर यह सुन रखो, सीख रक्खो, समझ रक्खो कि अनुराग और विराग वास्तव में एक ही हैं। जबतक एक ओर अचल अनुराग न होगा, तब तक जगत के खटराग में विराग नहीं हो सकता, और जब तक सब ओर से आन्तरिकविराग न हो जाय तबतक अनुराग का निर्वाह सहज नहीं है। इसी से कहते हैं कि हमारी बातें चुप चाप मान ही लिया करो, बहुत ही अक्किल की दौड़ा दौड़ा के थकाया न करो! इसी में आनन्द भी आता है, और हृदय का कपाट भी खुल जाता है। साधारण बुद्धि वाले लोग भगवान् भूतनाथ श्मसान बिहारी, मुँण्डमालाधारी को वैराग्य

का अधिष्ठाता समझते हैं पर वह आठों पहर अपनी प्यारी पर्वत-राजनन्दिनी को वामांग ही में धारण किए रहते हैं, और प्रेम शास्त्र के आचार्य हैं। इसी प्रकार भगवान कृष्णचन्द्र को लोग शृंगार रसका देवता समझते हैं, पर उनकी निर्लिप्तता गीता में देखनी चाहिए। जिसे सुनाके उन्होंने अर्जुन का मोहजाल छुड़ाके वर्तमान कर्तव्य के लिए ऐसा दृढ़ कर दिया था कि उन्होंने सबकी दया-मया, मोह-ममता को तिलांजलि देकर मारकाट आरम्भ कर दी थी। इन बातों में तत्वग्राहिणी समझ भली-भाँति समझ सकती है कि भगवान प्रेमदेव की अनन्त महिमा है। वहाँ अनुराग-विराग, सुख-दुख, मुक्ति-साधन सब एक ही हैं। इसी से सच्चे समझदार संसार में रहकर सब कुछ देखते-सुनते, करते-धरते हुए भी संसारी नहीं होते। केवल अपनी मर्यादा में बने रहते हैं। और अपनी मर्यादा वही जिसे सनातन से समस्त पूर्व-पुरुष रक्षित रखते आये हैं, और उनके सुपुत्र सदा मानते रहेंगे।

काल, कर्म, ईश्वर अनुकूल हों वा प्रतिकूल, सारा संसार स्तुति करे वा निन्दा, वाह्य दृष्टि से लाभ देख पड़े वा हानि, पर वीर पुरुष वही है जो कभी कहीं किसी दशा में अपनेपन से स्वप्न में भी विमुख न हो। इस मूल मंत्र को भूलकर भी न भूले कि जो हमारा है वही हमारा है। उसी से हमारी शोभा है, और उसी में हमारा वास्तविक कल्याण है।

एतदनुसार आज हमारी होली है। चित्त शुद्ध करके वर्ष भर की कही सुनी क्षमा करके हाथ जोड़के पाँव पड़के, मित्रों को मनाके बाहें पसार के उनसे मिलने और यथा सामर्थ्य जी खोलके परस्पर की प्रसन्नता सम्पादन करने का दिन है। जो लोग प्रेम का तत्व तनिक भी नहीं समझते केवल स्वार्थ-साधन ही को इति कर्तव्य समझते हैं, पर हैं अपने ही देश जाति के, उनसे घृणा न करके ऊपरी आमोद प्रमोद में मिलाके समयान्तर में मित्रता का अधिकारी बनाने की चेष्टा करने का त्योहार है। जो निष्प्रयोजन

हमारी बात बात पर मुरकते ही हों उन्हें उनके भाग्य के आधीन छोड़ के अपनी मौज में मस्त रहने का समय है। इसी से कहते हैं, नई बहू की नाईं घरमें, न घुसे रहो, पर्व के दिन मनमार के न बैठो, घर-बाहर, हेली व्यौहारी से मानसिक आनन्द के साथ कहते फिरो—

हो ओ ओ ली ईईई है।

—:o:—

मेले का ऊंट

भारत मित्र सम्पादक! जीते रहो— दूध बताशे पीते रहो! भाँग भेजी सो अच्छी थी। फिर वैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र में टटोलते हुए "मोहनमेले" के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आप की दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आप की दृष्टि गिद्ध की सी होनी चाहिये, क्योंकि आप सम्पादक हैं। किन्तु आपकी दृष्टि गिद्ध सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर एक गेहूँ का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न सूझा। यहाँ तक कि उस गेहूँ के दाने को चुगने से पहले जाल में फँस गया।

मोहन मेले में आप का ध्यान दो एक पैसे की एक पूरी की तरफ गया। न जाने आप घर से कुछ खाकर गये थे या योहीं। शहर की एक पैसे की पूरी के मेले में दो पैसे हो तो आश्चर्य न करना चाहिये, चार पैसे भी हो सकते थे। यह क्या देखने की बात थी? तुमने व्यर्थ बातें बहुत देखी, काम की एक भी तो देखते, दाईं ओर जाकर तुम ग्यारहसौ सतरों का एक पोस्टकार्ड देख आये पर बांई तरफ बैठा ऊँट भी तुम्हें दिखाई न दिया। बहुत लोग उस ऊँट की ओर देखते और हँसते थे। कुछ लोग

कहते थे कि कलकत्ते में ऊँट नहीं होते इसी से मोहन मेले वालों ने इ।
विचित्र जानवर का दर्शन कराया था। बहुत सी शौकीन बीबियाँ कितने
ही फूल बाबू ऊँट का दर्शन करके खिलते दाँत निकालते चले गये। तब
कुछ मारवाड़ी बाबू भी आये। और झुक झुक कर उस काठ के घेरे में
बैठे हुए ऊँट की तरफ देखने लगे। एक ने कहा—"ऊँटड़ो है।"

दूसरा बोला—"ऊँटड़ो कठेते आयो ?" ऊँट ने भी यह देख दोनों
ओठों को फड़काते हुए थूथनी फटकारी। भङ्ग की तरंग में मैंने सोचा कि
ऊँट अवश्य ही मारवाड़ी बाबुओंसे कुछ कहता है। जी में सोचा कि चलो
देखें वह क्या कहता है ? क्या उसकी भाषा मेरी समझ में न आवेगी।
मारवाड़ियों की भाषा समझ लेता हूँ तो मारवाड़ के ऊँट की बोली समझ
में न आवेगी ? इतने में तरंग कुछ अधिक हुई। ऊँट की बोली साफ
साफ समझ में आने लगी। ऊँट ने मारवाड़ी बाबुओं की ओर थुथनी
करके कहा—

बेटा। तुम बच्चे हो, तुम क्या जानोगे ? यदि मेरी उमर का कोई होता
तो वह जानता। तुम्हारे बाप के बाप जानते थे कि मैं कौन हूँ क्या हूँ।
तुमने कलकत्ते के महलों में जन्म लिया तुम पोतड़ों के अमीर हो। मेले
में बहुत चीजें हैं उनको देखो। और यदि तुम्हें कुछ फुरसत हो तो लो
सुनो, सुनाता हूँ। आज दिन तुम विलायती फिटिन, टमटम और जोड़ियों
पर चढ़कर निकलते हो, जिनकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक
छोड़ आये हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे।
यह सब तुम्हारे साथ की जन्मी हुई है। तुम्हारे बाप पचास साल के भी
न होंगे इससे वह भी मुझे भली भाँति नहीं पहचानते। हां उनके भी बाप
हो तो मुझे पहचानेंगे। मैंने ही उनको पीठ पर लाद कर कलकत्ते तक
पहुँचाया है।

आज से पचास साल पहले रेल कहाँ थी। मैंने मारवाड़ से मिरजा
पुर तक और मिरजापुर से रानीगंज तक कितने ही फेरे किये हैं। महीनों

तुम्हारे पिता के पिता तथा उनके भी पिताओं का घर बार मेरे ही पीठ पर रहता था। जिन स्त्रियों ने तुम्हारे बाप और बाप के भी बाप को जना है वह सदा मेरी पीठ को ही पालकी समझती थी। मारवाड़ में मैं सदा तुम्हारे द्वार पर हाजिर रहता था, पर यहाँ वह मोका कहाँ! इसी से इस मेले में तुम्हें देखकर आँखें शीतल करने आया हूँ। तुम्हारी भक्ति घट जाने पर भी मेरा वात्सल्य नहीं घटता है। घटे कैसे मेरा तुम्हारा जीवन एक ही रस्सी से बँधा हुआ था! मैं ही हल चलाकर तुम्हारे खेतों में अन्न उपजाता था और मैं ही चारा आदि पीठ पर लादकर तुम्हारे घर पहुँचाता था। यहाँ कलकत्ते में जल की कलें हैं, गङ्गाजी हैं, जल पिलाने को ग्वाले कहार हैं पर तुम्हारी जन्मभूमि में मेरी ही पीठ पर लदकर कोसों से जल आता था और तुम्हारी प्यास बुझाता था।

मेरी इस घायल पीठ को घृणा से न देखो इस पर तुम्हारे बड़े अन्न रस्सियाँ यहाँ तक कि उपले लादकर दूर-दूर तक ले जाते थे। जाते हुये मेरे साथ पैदल जाते थे और लौटते हुए मेरी पीठ पर चढ़े हुए हिचकोले खाते वह स्वर्गीय सुख लूटते थे कि तुम रबड़ के पहिये वाली चमड़े की कोमल गद्दियों दार फिटिन में बैठकर भी वैसा आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते मेरी बलबलाहट उनके कानों को इतनी सुरीली लगती थी कि तुम्हारे बागीचों में तुम्हारे गवैयों तथा तुम्हारी पसन्द की बीबियों के स्वर भी तुम्हें उतने अच्छे न लगते होंगे। मेरे गले के घण्टों का शब्द उनको सब बाजों से प्यारा लगता था। फोग के जंगल में मुझे चरते देखकर वह उतने ही प्रसन्न होते थे जितने तुम अपने सजे बागीचों में भंग पीकर, पेट भरकर और ताश खेलकर।"

भङ्ग की निन्दा सुनकर मैं चौंक पड़ा। मैंने ऊँट से कहा—बस बलबलाना बन्द करो! यह बावला शहर नहीं जो तुम्हें परमेश्वर समझे! तुम पुराने हो तो क्या, तुम्हारी कोई कल सीधी नहीं है। जो पेड़ों की छाल और पत्तों से शरीर ढांकते थे, उनके बनाये कपड़ों से सारा संसार बाबू

बना फिरता है, जिनके पिता सिर पर गठरीं ढोते थे, वही पहले दरजे के अमीर हैं, जिनके पिता स्टेशन से गठरी आप ढोकर लाते थे उनको सिरपर पगड़ी सम्हालना भारी हैं, जिनके पिता का कोई पूरा नाम न लेकर पुकारता था, वह बड़ी बड़ी उपाधिधारी हुए हैं। संसार का जब यही रंग है तो ऊँट पर चढ़ने वाले सदा ऊँट ही पर चढ़े यह कुछ बात नहीं। किसी की पुरानी बात यों खोलकर कहने से आजकल के कानून से हतक—इज्जत होजाती है। तुम्हें खबर नहीं कि अब मारवाड़ियोंने "एसोसीयेशन" बनाली है अधिक बलबलाओगे तो वह रिजोल्यूशन पास करके तुम्हें मारवाड़ से निकलवा देगें। अतः तुम उनका कुछ गुणगान करो जिससे वह तुम्हारे पुराने हक को समझें और जिस प्रकार लार्ड कर्जन ने किसी जमाने के "ब्लैकहोल" को उस पर लाट बनवा कर और उसे सङ्गमरमर से मढ़वा कर शानदार बनादिया है उसी प्रकार मारवाड़ी तुम्हारे लिये मखमली काठी, जरी की गद्दियाँ ही, पन्नों की नकेल और सोने का घन्टियाँ बनवाकर तुम्हें बड़ा करेगें और अपने बड़ों की सवारी का सम्मान करेगें।

[सन् १९०१ ई०]

मनुष्य गणना

जय भङ्ग भवानी की। सम्पादक महाशय! अब के अच्छी घसीटन में फँसे थे, पर राम आसरे से "भारतमित्र" में अपना चिट्ठा छपवाने को और कुछ दिन के लिये बच गये। इस बार गरीब शिवशम्भुशर्म्मा की होली किरकरी होती होती बच गई। सो अब गहरी भङ्ग भेजिये कि पीते ही घर घूमे और छप्पर हिले।

आप अपने होली के नम्बर की धुन में जान पड़ता है कि दीन दुनिया सब भूल गये। फिर शिवशम्भु शर्मा को याद रखते! पर एक बात आपको बता देते हैं कि जब आप अपना होली का नम्बर तय्यार करने में लगे थे ठीक उसी समय कलकत्ते में मनुष्य गणना के बेगारी पकड़े जाते थे। सरहदी लड़ाई के समय जिस प्रकार पञ्जाब में ऊँट और छकड़े पकड़े जाते थे, इस कलकत्ता महा नगर में ठीक उसी प्रकार बाबू लोग पकड़े जाकर "एन्यूमरेटर" बनाये जाते थे। कई दिन तक यह बेचारे छकड़ों की भांति लदे और ऊँट की तरह गर्दन उठाये गली गली घूमते थे। इन गरीबों की दशा देखकर बड़ी हँसी आती थी, पर आगे चलकर वही हँसी आंसुओं में बदल गई।

मुझे यह खबर न थी कि बाज़ार में जाते ही बेगार का छकड़ा बनना पड़ेगा। एक कनिस्टबल मुझे देखकर पूछने लगा कि हे महाराज! आप

अंग्रेजी जानते हैं ? मैंने कहा—हां। इतना सुनते ही कनिस्टबल ने कहा—तो फिर चलिए थाने में साहब बुलाते हैं। मैंने कितना ही कहा कि मुझ शिवशम्भु शर्मा का थाने से काम ही क्या है, पर एक न सुनी गई। कनिस्टबल धकेलकर मुझे थाने में ले गया।

एक साहब ने आकर कागजों का एक पुलन्दा मेरे सामने डाल दिया और कहा कि सेन्सस आईन की रूसे तुम एन्यूमरेटर बनाये गये, तुम को एक मुहल्ले के बीस मकानोंकी मनुष्य गणना करनी पड़ेगी। और खबरदार इस काम से इनकार करोगे या इसमें गफलत करोगे तो तुमको सजा हो जावेगी।

मेरी बुद्धि चकरा गई! मैंने कहा—साहब, मैं भङ्गड़ जङ्गड़ आदमी मुझसे भला यह काम कैसे होगा ? इसके उत्तर में साहब ने कहा कि नहीं नहीं अलबट तुमको करना होगा और नहीं करने से जेल जाना होगा! जाओ अपना घर पर जाकर सब काम समझो!

"गले पड़ी ढोल की, बजाये सिद्ध" समझ कर मैं कागजों का पुलन्दा लिये चल निकला। साहब ने कहा घर जाओ, वह क्या जाने कि शिवशम्भु के घर है या नहीं ? आज शिवशम्भु को घर दरकार है जिनके घर फालतू हो वह शिवशम्भु को देदें वह उसमें बैठकर सरकारी बेगार पूरी करेगा।

घर दर तो कुछ न सूझा। सूझा सरकारी बाग—बीडन गार्डन! वहां जाकर सब प्रकार की चिन्ताओं को भगानेवाली भगवती भंग का ध्यान किया। इस भगवती की कृपा से सब चिन्ताएं दूर होकर बुद्धि निर्मल हुई तब पुलिन्दा खोलकर देखना आरम्भ किया। नम्बर, मकान, नाम, जाति आदि से लेकर पैदा होने की जगह तक का पता लिखने की बात देखी। देखते देखते जब नीचेकी दृष्टि गई तो कुछ विशेष बातें लिखी देखी। उनमें लिखा था कि हीजड़ों को मर्द लिखो। विचार उत्पन्न हुआ

कि यह दिल्लगी तो नहीं है ? किन्तु सरकार प्रजा से दिल्लगी करे ऐसा हो नहीं सकता !

मर्द मर्द लिखे जावें औ स्त्रियां स्त्रियां तो हिजड़ों को हीजड़ों ही की गिनतीं मे क्यों न लिखा जावे ? ईश्वर ने जब उनको स्त्री पुरुष दोनों ही से विलक्षण बनाया है तो मनुष्य गणना में उनका वह लक्षण लोप क्यों किया जावे ? इसके सिवा जब हीजड़े मर्द लिख गये तो मर्दों और हीजड़ों में पहचान ही क्या रही ?

देर तक जी में यही उलझन रही कि किस कारण सरकार मर्द और हीजड़ों को एक कर रही है। क्या भारत वर्ष में मर्द और हिजड़ो में कुछ पहचान रखने की जरूरत नहीं है ? मैं इसी विचार में था कि एक लम्बी तरङ्ग ने उठकर मेरी गर्दन दबा दी। नशे की गहरी झोंक में मर्दों और हीजड़ो की एकता भली भांति समझ में आने लगी।

जब भारतवर्ष के मर्द मर्द कहलाने से प्रसन्न है तो यहां के हीजड़ों को मर्द कहना क्या बेजा है ? मर्द ऐसा कौन काम करते हैं जो हीजड़े नही कर सकते ? एक पुरानी फारसी की कहावत है कि हीजड़ों को हथियार से क्या लाभ ? अर्थात् हीजड़ों के पास यदि हथियार रहें भी तो उससे क्या लाभ है ? भारतवर्ष में जो लोग मर्द कहलाते हैं सरकार ने उनसे हथियार छीन लिये हैं। केवल इसलिये उनके पास हथियार रहने से कुछ फायदा नहीं है। कितने ही वर्ष बीत गये बिना हथियार रहने पर भी देश के मर्द मर्द ही कहलाते हैं इससे जान पड़ता है कि हीजड़ों के पास भी हथियार न रहने से उनको कोई नामर्दी का दोष नहीं लगा सकता। तथा जैसे हीजड़े के पास हथियार रहने से कोई लाभ नहीं, वैसे ही अंगरेजी सरकार की समझ में भारत वर्ष के मर्दों के पास हथियार रहने से भी कुछ लाभ नहीं।

इस देश के हथियार—रहित मर्दों को जब सरकार कृपापूर्वक मर्द ही समझती है तो मनुष्यगणना में इस देश के हीजड़ों को भी उन्ही की श्रेणी में रख देना कुछ युक्ति विरुद्ध नहीं है।

वह तो हुई हथियार की बात! अब हथियारों का खयाल छोड़ कर मर्दों और हीजड़ों का मुकाबला करना चाहिये। खाने में, पीने में, चलने फिरने में, सोने जागने और उठने बैठने में, कपड़ा पहनने में—सब में देखिये और बताइये कि हीजड़े और मर्दों के बीच इन सब बातो में क्या भेद हैं?

इस देश के मर्द दिन में खाते पीते कपड़ा पहनते और चलते हैं तथा रात को पाँव पसारकर सो रहते है। हीजड़े भी ठीक इसी प्रकार सब काम करते हैं। फिर उनका नाम भी सरकार मर्दों में क्यों न लिखे?

यदि गाने बजाने या हथेली पीटने और गले में ढोलकी डालने की बात कहिये तो इस भारतवर्ष में वैसे मर्द कहलाने वालों की भी कमी नहीं है मर्द नामधारियों में स्त्री बन कर नाचने वाले और ढोलकी बजाने वाले कितने ही हैं। हीजड़े अपनी ही ढोलकी और अपने ही पांव के घुंघरूओं की आवाज पर नाचते हैं किन्तु मर्द कहलानेवालों में कितने ही ऐसे हैं जो रण्डी या जोरूकी उंगली के इशारे पर नाचते है। फिर भी हीजड़ों का नाम मर्दों में क्यों न लिखा जावे?

यदि यह कहो कि हीजड़े पराये द्वार पर जाकर बधाई देते हैं और न्योछावर मांगते हैं, तो भी शिवशम्भु शर्मा के निकट उनका कुछ हीजड़ापन नहीं है। सेठ जी के जम्हाई लेने पर पास बैठने वालों में से कितने ही चुटकियाँ बजाते हैं और बाबू साहब की बैठक में जाकर उनके मुंह पर उनके चेहरे मोहरे और कपड़े लत्तों की प्रशंसा कितनेही गाते हैं। यदि यह सब लोग मर्द कहला सकते हैं, तो हीजड़े भी मर्द कहला सकते हैं इसमें सन्देह नहीं।

हीजड़े विवाह आदि उत्सवों पर दो घड़ी तुम्हारी खुशामद करने आते हैं। पर हे मर्द नामधारियों! तुममें से ऐसे बहुत हैं, जिनको खुशामद करते उमरें बीत गईं। तुम मर्द हो तो भी तुम्हारी रक्षा सरकार करती है और हीजड़े, हीजड़े हैं तब भी उनकी रक्षा सरकार करती है। कौन काम में तुम उनसे बढ़ कर हो जिससे तुम मर्द और वह हीजड़े कहलावें। तुम खाते हो, पीते हो, शौकीनी करते हो, बाबूपन दिखाते हो और अन्त में मर जाते हो, हीजड़े भी यहाँ सब करते हुये तुम्हारी तरह मर जाते हैं। मरने पर दोनों बराबर! नहीं नहीं हीजड़े तुमसे बेहतर। क्योंकि हीजड़े मरकर अपने पीछे और हीजड़े नहीं छोड़ जाते, पर तुम अपने से मर्द बहुत छोड़ जाते हो!

इसके अतिरिक्त यह बात भी ध्यान रखने की है कि अब सरकार अँग्रेज के बनाये सब कुछ बन सकता है। वह तुम्हारे हथियार छीन कर तुम्हें हीजड़ा बना सकती है और मनुष्य गणना में हीजड़ों का नाम मर्दों के साथ लिखवा सकती है! इन सब बातों से तुम यह न समझ लेना कि शिवशम्भु हीजड़ों का हिमायती है नहीं नहीं, यह पागल ब्राह्मण तुम्हें हीजड़ों और मर्दों के पहचानने के दिव्य नेत्र देता है।

जिनके बाप दादा भेड़ की आवाज सुनकर डर जाते थे, जिनको स्वयं चाकू से कलम का डङ्क काटते भय लगता है उन्हें सरकार ने "राय बहादुर" बनाया है। जिनकी हुकूमत उनके घर की चारदीवारी से कभी बाहर नहीं निकली है वैसे कितने ही राजा बहादुर और महाराज बहादुर कहलाते हैं जब मारवाड़ का राजा भी राजा है और मोची पाड़े का राजा भी राजाही है तो हीजड़ों के मर्दों में लिखे जाने का कुछ अफसोस नहीं है। जहाँ ग्वालियर का महाराज भी महराजा है और पथरियाघट्टा का महाराज भी महाराज है उस देश के हीजड़ों को सरकार मर्दों में लिखवावे तो शिवशम्भु शर्मा उससे नाराज नहीं। वरञ्च यदि सरकार उनको मर्दों की

सब उपाधियों से भी विभूषित किया करे तो शिवशम्भु को अधिक प्रसन्नता होगी।

अपने इस नोट के साथ भङ्ग प्रसादात मैंने अपने हिस्से की गणना कर डाली है। और कागजों का पुलन्दा उन्हीं साहब के सामने फेंक आया हूँ। साहब मेरे काम में प्रसन्न हुए हैं! मैंने यह भी सुना कि किसी के काम से भी वह अप्रसन्न नहीं हुए! बेगार में अप्रसन्नता ही क्या? जो हो—"जान बची लाखों पाये।"

[सन् १९०१ ई०]

एक दुराशा

नारंगी के रस में जाफरानी बसन्ती बूटी छानकर शिवशम्भु शर्मा खटिया पर पड़े मौजों का आनन्द ले रहे थे। खयाली घोड़े की बागें ढीली कर दी थीं। वह मनमानी जकन्दें भर रहा था। हाथ पावों को भी स्वाधीनता दी गई थी! वह खटिया के तूलअरजकी सीमा उल्लंघन करके इधर-उधर निकल गये थे। कुछ देर इसी प्रकार शर्मा जी का शरीर खटिया पर था और खयाल दूसरी दुनियाँ में।

अचानक एक सुरीली गाने की आवाज ने चौंका दिया। कनरसिया शिवशम्भु खटिया पर उठ बैठे। कान लगाकर सुनने लगे। कानों में वह मधुर गीत बार-बार अमृत ढालने लगा—

चलो चलो आज खेलें होली कन्हैया घर।

कमरे से निकल कर बरामदे में खड़े हुए। मालुम हुआ पड़ोस में किसी अमीर के यहाँ गाने-बजाने की महफिल हो रही है। कोई सुरीली लय से उक्त होली गा रहा है। साथ ही देखा, बादल घिरे हुए हैं, बिजली चमक रही है, रिमझिम झड़ी लगी हुई है। बसन्त में सावन देख कर अक्ल जरा चक्कर में पड़ी। विचारने लगे कि गानेवाले को मलारगाना चाहिए था, न कि होली। साथ ही खयाल आया कि फागुन सुदी है, बसन्त के विकास का समय है, वह होली क्यों न गावें? इसमें तो गाने वाले की नहीं, विधि की भूल है, जिसने बसन्त में सावन बना दिया है। कहाँ तो चाँदनी छिटकी होती, निर्मल वायु बहती, कोयल की कूक सुनाई

देती, कहीं भादों की-सी अंधियारी है वर्षा की झड़ी लगी हुई है। ओह कैसा ऋतुविपर्यय है।

इस विचार को छोड़कर गीत के अर्थ का विचार जी में आया। होली खिलैया कहते हैं कि चलो आज कन्हैया के घर होली खेलेगें! कन्हैया कौन! ब्रज के राजकुमार! और खेलने वाले कौन? उनकी प्रजा ग्वालबाल। इस विचार ने शिवशम्भु शर्मा को और भी चौंका दिया कि ऐं क्या भारत में ऐसा भी समय था जब प्रजा के लोग राजा के घर जाकर होली खेलते थे। और राजा-प्रजा मिलकर आनन्द मनाते थे? क्या इसी भारत में राजा लोग प्रजा के आनन्द को किसी समय अपना आनन्द समझते थे? अच्छा, यदि आज शिवशम्भु शर्मा अपने मित्र वर्ग सहित, अबीर गुलाल की झोलियाँ भरे-रङ्ग की पिचकारियाँ लिये अपने राजा के घर होली खेलने जाये तो कहाँ जाय? राजा दूर सात समुद्र पार है। राजा का केवल नाम सुना है। न राजा को शिवशम्भु ने देखा न राजा ने शिवशम्भु को। खैर राजा नहीं, उसने अपना प्रतिनिधि भारत में भेजा है। कृष्ण द्वारका ही में हैं पर उद्धव को प्रतिनिधि बनाकर ब्रजवासियों को सन्तोष देने के लिये ब्रजमें भेजा है। क्या उस राज प्रतिनिधि के घर जाकर शिवशम्भु होली नहीं खेल सकता?

ओफ! यह विचार कैसा ही बेतुका है, जैसे अभी वर्षा में होली गाई जाती थी। पर इसमें गाने वाले का क्या दोष है, वह तो समय समझ कर ही गा रहा था। यदि बसन्त में वर्षा की झड़ी लगे, तो गाने वाले को क्या मलार गाना चाहिये? सचमुच बड़ी कठिन समस्या है। कृष्ण है उद्धव है, पर ब्रजवासी उनके निकट भी नहीं फटकने पाते। राजा है, राजप्रतिनिधि है पर प्रजा की उन तक रसाई नहीं। सूर्य है धूप नहीं। चन्द्र है, चाँदनी नहीं! माइलार्ड! नगर ही में है! पर शिवशम्भु उनके द्वारतक नहीं फटक सकता है, उनके घर चलकर होली खेलना तो विचार ही दूसरा है माई लार्ड के घर तक प्रजा की बात नहीं पहुँच सकती। बात की

हवा नहीं पहुँच सकती। जहाँगीर की भाँति उसने अपने शयनागार तक ऐसा कोई घण्टा नहीं लगाया जिसकी जंजीर बाहर से हिलाकर प्रजा अपनी फरयाद उसे सुना सके! न आगे को लगाने की आशा है। प्रजा की बोली वह नहीं समझता उसकी बोली प्रजा नहीं समझती। प्रजा के मन का भाव वह न समझता है, न समझना चाहता है। उनके मनका भाव न प्रजा समझ सकती है, न समझनेका कोई उपाय है। उसका दर्शन दुर्लभ है। द्वितीया के चन्द्र की भाँति कभी-कभी बहुत देर तक नजर गड़ाने से उसका चन्द्रानन दिख जाता है, तो दिख जाता है। लोग उंगलियों से इशारे करते हैं कि वह है। किन्तु दूज के चाँद का उदय का भी एक समय है। लोग उसे जान सकते हैं। माई लार्ड के मुखचन्द्र के उदय के लिये कोई समय भी नियत नहीं। अच्छा, जिस प्रकार इस देश का निवासी माइलार्ड का चन्द्रानन देखने को टकटकी लगाये रहता है या जैसे शिव शम्भु शर्मा के जी में अपने देश के माइलार्ड से होली खेलने को आई, इस प्रकार कभी माइलार्ड को भी इस देश के लोगों की सुध आती होगी? क्यों कभी श्री मान् का जी होता होगा कि अपनी प्रजा में जिसके दण्डमुण्ड के विधाता होकर आये हैं किसी एक आदमी से मिलकर उसके मन की बातें पूछें या कुछ अमोद प्रमोद की बातें करके उसके मन को टटोलें! माइलार्ड ड्यूटी का ध्यान दिलाना सूर्य को दीपक दिखाना है।

वह स्वयं श्रीमुख से कह चुके है कि ड्यूटी में बँधा हुआ मैं इस देश में फिर आया। यह देश मुझे बहुत ही प्यारा है! इसमें ड्यूटी और प्यार की बात श्रीमान् के कथन से ही तय हो जाती है। उसमें किसी प्रकार की हुज्जत उठाने की जरूरत नहीं। तथापि यह प्रश्न आपसे आप जी में उठता है कि इस देश की प्रजा से प्रजा के माइलार्ड का निकट होना और प्रजा के लोगों की बात जानना उस ड्यूटी की सीमा तक पहुँचा है या नहीं? यदि पहुँचा है, तो क्या श्रीमान् बता सकते है कि अपने छः साल के लम्बे शासन में इस देश की प्रजा को क्या जाना और उससे क्या सम्बन्ध

उत्पन्न किया ? जो पहरेदार सिरपर फेंटा बाँधे हाथ मे संगीनदार बन्दूक लिये, काठ के पुतलों की भाँति गवर्नमेंट हाउस के द्वार पर दण्डायमान रहते है या छाया की मूर्ति की भाँति जरा इधर उधर हिलते डुलते दिखाई देते हैं, कभी उनको भूले भटके आपने पूछा है कि कैसी गुजरती है ? किसी काले प्यादे-चपरासी या खानसामा आदि से कभी अपने पूछा कि कैसे रहते हो ? तुम्हारे देश की क्या चाल ढाल है ? तुम्हारे देश के लोग हमारे राज्य को कैसा समझते हैं ? क्या इन नीचे दरजे के नौकर चाकरों को भी माइलार्ड के श्री मुख से निकले हुए अमृतरूपी वचनों के सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ या खाली पेड़ों पर बैठी चिड़ियों का शब्द ही उनके कानों तक पहुँच कर रह गया ? क्या कभी सैर तमाशे में टहलने के समय या किसी एकान्त स्थान में इस देश के किसी आदमी से कुछ बातें करने का अवसर मिला ? अथवा इस देश के प्रतिष्ठित बेगरज आदमी को अपने घर पर बुलाकर इस देश के लोगों के सच्चे विचार जानने की चेष्टा की ? अथवा कभी विदेश या रियासतों के दौरे में उन लोगों के सिवा जो झुक-झुक कर लम्बी सलामें करने आये हो, किसी सच्चे और बेपरवा आदमी से कुछ पूछने या कहने का कष्ट किया ? सुनते हैं कि कलकत्ते में श्रीमान् ने कोना कोना देख डाला। भारत में क्या भीतर क्या सीमाओं पर कोई जगह देखे बिना नहीं छोड़ी। बहुतों का ऐसाही विचार था। पर कलकत्ता — यूनिवर्सिटी के परीक्षोत्तीर्ण छात्रों की सभा में चान्सलर का जामा पहन कर माइलार्ड ने जो अभिज्ञता प्रगट की, उससे स्पष्ट हो गया कि जिन आँखों से श्रीमान् ने देखा, उनमें इस देश की बातें ठीक देखने की शक्ति न थी।

सारे भारत की बात जाय, इस कलकत्ते ही में देखने की इतनी बातें हैं कि केवल उनको भलिभांति देख लेने से भारतवर्ष की बहुत सी बातों का ज्ञान हो सकता है।

माइलार्ड के शासन के छः साल हालवेल के स्मारक में लाट बनवाने, ब्लैक होल का पता लगाने, आक्टरलोनी की लाट को मैदान से उठवाकर

वहाँ विक्टोरिया मेमोरियल हाल बनवाने, गवर्नमेन्ट हाउस के आसपास अच्छी रोशनी, अच्छे फुटपाथ और अच्छी सड़कों का प्रबन्ध कराने में बीत गये। दूसरा दौरा भी वैसे ही कामों में बीत रहा है। सम्भव है कि उसमें भी श्रीमान् के दिल पसन्द अंग्रेजी मुहल्लों में कुछ और बड़ी-बड़ी सड़कें निकल जायें और गवर्नमेंट हाउस की तरफ के स्वर्ग की सीमा और बढ़ जावे। पर नगर जैसा अंधेरे में था, वैसा ही रहा क्यों कि उसकी असली दशा देखने के लिये और ही प्रकार की आँखों की जरूरत है। जब तक वह आँख न होगी यह अंधेर योंही चला जावेगा। यदि किसी दिन शिवशम्भु शर्मा के साथ माइलार्ड नगर की दशा देखने चलते, तो वह देखते कि इस महानगर की लाखों प्रजा भेड़ों और सूअरों की भाँति सड़े गन्दे झोपड़ों में पड़ी लोटती है! उनके आसपास सड़ी बदबू और मैले सड़े पानी के नाले बहते हैं। कीचड़ और कूड़े के ढेर चारों ओर लगे हुए हैं उनके शरीरों पर मैले कुचैले फटे चिथड़े लिपटे हुए हैं। उनमें से बहुतों को आजीवन पेटभर अन्न और शरीर ढांकने को कपड़ा नहीं मिलता! जाड़ों में सर्दी से अकड़ कर रह जाते हैं और गर्मी में सड़कों पर घूमते तथा जहां तहां पड़ते फिरते हैं। बरसात में सड़ेसीले घरों में भींगे पड़े रहते हैं। सारांश यह है कि हरेक ऋतु की तीव्रता में सबसे आगे मृत्यु के पथ का वही अनुगमन करते हैं। मौत ही एक है, जो उनकी दशा पर दया करके जल्द उन्हें जीवन रूपी रोग के कष्ट से छुड़ाती है।

परन्तु क्या इनसे भी बढ़कर और दृश्य नहीं है? हाँ, है। पर जरा और स्थिरता से देखने के हैं बालू में बिखरी हुई चीनी को हाथी अपनी सूंड से नहीं उठा सकता। उसके लिये चिवटी की जिह्वा दरकार है इसी कलकत्ते में, इसी इमारतों के नगर में, माइलार्ड की प्रजा में हजारों आदमी ऐसे हैं जिनको रहने को सड़ा झोंपड़ा भी नहीं है। गलियों और सड़कों पर घूमते घूमते जहाँ जगह देखते हैं वहीं पड़े रहते हैं। बीमार होते हैं, तो सड़कों ही पर पड़े पाँव पीट कर मर जाते हैं। कभी आग

जलाकर खुले मैदान में पड़े रहते हैं कभी कभी हलवाइयों की भट्ठियों से चमट कर-रात काट देते हैं! नित्य इनकी दो-चार लाशें जहाँ-तहाँ से पड़ी हुई पुलिस उठाती है। भला माइलार्ड तक उनकी बात कौन पहुँचावे? दिल्ली—दरबार में भी, जहाँ सारे भारत का वैभव एकत्र था, सैकड़ों ऐसे लोग दिल्ली की सड़कों पर पड़े दिखाई देते थे, परन्तु उनकी ओर देखने वाला कोई न था। यदि माइलार्ड एक बार इन लोगों को देख पाते, तो पूछने को जगह हो जाती कि वह लोग भी ब्रिटिश राज्य के सिटीजन हैं वा नहीं? यदि हैं, तो कृपापूर्वक पता लगाइये कि उनके रहने के स्थान कहाँ हैं और ब्रिटिश राज्य से उनका क्या नाता है? क्या कह कर वह अपने राजा और उनके प्रतिनिधि को सम्बोधन करें? किन शब्दों में ब्रिटिश राज्य को आसीस दें? क्या यों कहें कि जिस ब्रिटिश राज्य में हम अपनी जन्मभूमि में एक उंगल भूमि के अधिकारी नहीं, जिसमें हमारे शरीर को फटे चिथड़े भी नहीं जुड़े और न कभी पापी पेट को पूरा अन्न मिला, उस राज्य की जय हो। उसका राज प्रतिनिधि हाथियों का जुलूस निकाल कर सबसे बड़े हाथी पर चंवर छत्र लगाकर निकले और स्वदेश में जाकर प्रजाके सुखी होने का डङ्का बजावे?

इस देश में करोड़ों प्रजा ऐसी है जिसके लोग जब संध्या—सबेरे किसी स्थान पर एकत्र होते हैं तो महाराज बिक्रमकी चर्चा करते हैं और उन राजा-महाराजाओं की गुणावली का वर्णन करते हैं, जो प्रजा का दुःख मिटाने और उनके अभावों का पता लगाने के लिये रात को वेश बदल कर निकला करते थे। अकबर के प्रजापालन और बीरबल के लोकरञ्जन की कहानियाँ कह कर वह जी बहलाते हैं और समझते हैं कि न्याय और सुख का समय बीत गया! अब वह राजा संसार में पैदा नहीं होते, जो प्रजा के सुख-दुःख की बातें उनके घरों में आकर पूछ जाते थे! महारानी विक्टोरिया को वह अवश्य जानते हैं कि वह महारानी थी। अब उनके पुत्र उनकी जगह राजा और इस देश के प्रभु हुए हैं। उनको इस

बात की खबर तक भी नहीं कि उनके प्रभु के कोई प्रतिनिधि हैं और वही इस देश के शासन के मालिक होते हैं तथा कभी कभी इस देश की तीस करोड़ प्रजा का शासन करने का घमण्ड भी करते हैं। अथवा मन चाहे तो इस देश के साथ बिना कोई अच्छा वर्ताव किये भी यहाँ के लोगों को झूठा, मक्कार आदि कहकर अपनी बड़ाई करते हैं।

इन सब विचारों ने इतनी बात तो शिवशम्भु के जीमें भी पक्की कर दी कि अब राजा-प्रजा के मिलकर होली खेलने का समय गया। जो बाकी था, वह काश्मीर नरेश महाराज रणबीर सिंह के साथ समाप्त हो गया! इस देश में उस समय के फिर लौटने की जल्द आशा नहीं। इस देश की प्रजा का अब वह भाग्य नहीं है। साथ ही राजगुरू का भी ऐसा सौभाग्य नहीं है, जो यहाँ की प्रजा के अकिंचन प्रेम को प्राप्त करने की परवा करे। माईलार्ड अपने शासन कालका सुन्दर से सुन्दर सचित्र इतिहास स्वयँ लिखवा सकते हैं, वह प्रजा के प्रेम की क्या परवा करेगें। तो भी इतना संदेश भङ्गड़ शिवशम्भु शर्मा अपने प्रभु तक पहुँचा देना चाहता है कि आप के द्वार पर होली खेलने की आशा करनेवाले एक ब्राह्मण को कुछ नहीं तो कभी कभी पागल समझ कर ही स्मरण कर लेना। वह आप की गूंगी प्रजा का एक वकील है, जिसके शिक्षित होकर मुंह खोलने तक आप कुछ करना नहीं चाहते!

बमुलाजिमाने सुलतां कै रसानद, ई दुआरा!
कि बशुक्रे बादशाही जे नजर मरां गदारा!

[सन् १६०५ ई०]

परिहास—प्रथम

दोहा—बहुत दिनन की आश दी, सो दिन पहुँचा आय।
हंसौ उदर पर हाथ दै, कै रोवहु मुँह वाय॥

आर्या किस्की (किसकी) भार्य्या।

आर्य्या और उसके चार पुत्र

आर्या—हे भगवान तू क्यों मुझसे रूस रहा है कि पहिले तो मेरी इस देह द्रव्य देहली देहली को मुसलमान मूस मूस कर वैसे ही चूस लिये थे गोरे घूंस तो घुस घुस कर घूस के मिस पूस बना दिया; तो भी तू सन्तुष्ट न हो यह प्रज्वलित अग्नि सा भयानक रूस को भी ठूँस रहा है।

पहिला लड़का (ब्राह्मण, चौबे)—(नाक में एक चुटका सुंघनी का घुसेड़ कर) अरी मैय्या! ये तू कहा बके। नाम सुनी तुलसीदासकी या चौपाई कू,

कोउ नृप होय हमैं का हानी।
चेरि छाँड़ि नहिं होइब रानी॥

सो हमै यासो कहा पड़ी जो रोवैं, रोवै ये पापी अमला उकील (वकील) जाके रोजगार जाइवे को डर है हमारो रोजगार तो सब गयोई है हमैं याते कहा अरे। ‘चौबे पढ़े न फारसी रहैं न दफ्तर संग। कृपा भई श्री कृष्ण की भर भर लोटे भंग॥’’ सो रांड़ भांगऊ मै तो मासूल लगाय छोड्यो, पेट भर बूटिऊ छानिबे मैं तो नाय आवै!

हमारे पुरखान ने तो यों कही कि:--

"जमना मैय्या तू भांगई है क्यों नांय वही, कि जबई जी चाहतौ भरि भरि लोटा पीवते," सो तो कुशल भई कि वानै नाय सुनी; नाय तो ए अंगरेजवा जमुना के पनिऊ मै टिकस लगाय छोड़ते हाय! तबतो हम चौबे पानिऊ बिना मरते, ए जो मुसलमान वाच्छा हे सो तो काऊ को माफिऊ बाफी देईबो करै, मुसलमान कर भोतसी जागीरऊ देईवे करते; पर ह्यां तो "फूरई शंख बजै मेरे हरि के दण्डवतन के ढेर" काऊ को कस्तानऊ कर एक बीधा पृथवीमाय देते नाय सुनी, जो काऊ सों प्रसन्नऊ भयो तो वाय राजा बाबू कर दीनी नांय तो सितारे हिन्द को खताब दै दयो कि जो महीने मैं एक खरच करत हो, बीस रूपया महीना होन लगो, सोऊ सब गहात साहबान कूं डाली, और चपरासीन को इनाम देइबै मै दिवालो निकल जाय, दान धर्म कहूँ रह्योई नाय, चाहे रूस आहे वाको बाबा ह्यां आय कहा लेयगो! लडुआन के ढेर थोरेई हैं, लड्डा चौबेन को है; चाहे ओऊ सारो दसेक ले जाय और कहा करैगो, (सोच कर) अरे रे रे रे! बूटी के तार मै ए कहा बक गयो! कोऊ जाय वासूं न कहै, नाय तो प्रानऊं जांय। चल भागू ह्यां सों अब ठैरवा ठीक नांय ॥ (भागा)

तीसरा लड़का (वैश्य, माड़वारी)—(नाक सकोड़ के)—कोई करू शाव! हुराडी पुरजेरो काम कौड़शी तरियां चलशी, माल तालरो ग्यान लागै कोयना दन दन शरकारी कागजरों भाव घटै छै, मन्दे भाव माय बेचगरों पड़तो परै कीयन; घर मांय घाली रकम कचवारी जिठे जुगत नायं और बातारी काई कहूँ! शुरूं ळू की रूशि वारो शानशारो लूट मार कर वांरो कायदो छै, शो म्हाणे तो देश छोड़वारों शला कियो छै; और कांई करशूं। अठ्ठे मरवारों शामान छै—अठे ठहरे बारो मामलो ठीक कोयन; (जाता है)।

आर्य्या (शोकाकुल हो)—हे ईश्वर। तुझे क्या करणा है लड़कों का यह हाल है, प्रथम तो वे स्वयंम् किसी अर्थ के नहीं, तिसपर मेरे दुर्भाग्य ने

उन्हें ऐसा प्रतिकूल दृश्य दिखाया कि, वे रहे सहे और भी निकम्मे बन रहे हैं। हाय मेरी रक्षा अब कौन करैगा। मैं अवश्य अनाथ हूँ!

दूसरा लड़का (क्षत्री राजकुमार)—माता! आप सोच जिनि करै, आवै देयँ रूसियन कँ आई कै काऊ कै लेवहीं? हम वो वटवै किहे, मारे तरुआरिनके ठठ्ठ लगाई देवै; हिन्दुस्तान लेब कुछ खेज़वार थोरै है? का जानी केतने यही में गाय बजाय जइहीं, लालन मेहरारुन कै चूरी फुटिजाये; न दइउ करै कि उदिन आवै; नाहीं तौ दांतन पसीना आय जाये, ईका पञ्ज देह थोरै है। ई भारत है जहां महाभारत मचलै। एक तन कै नदी बहे, तब जवन कुछ लिखा होय, तवन होय:, सहजै नाही बा।

आर्या—अरे पुत्र तू यह क्या वक्ता है, अब वह तलवार के दिन गये, वह युद्ध प्रणाली जिसे तू जानता है गई, यद्यपि उसमें भी नित्य अभ्यास की आवश्यकता है पर अब तो बन्दूक और तोप की लड़ाई है कवायद जानना एवम् वे युद्ध विद्या के नियम जो यूरप देशवासियों ने बरता है सीखने की आवश्यकता है कि जो तुम जानते भी नहीं फिर तुम लोग क्या कर सक्ते हो।

दूसरा ल०—(सिर हिला कर) अरे ई काउ कहत वाटिउ? अबही आजुई कै बात है देखऽ मिसीर में कैसन हमरे लोगउन कै बड़ाई भई? ओऊ तो हमरे देस कै मनई हँए? फिरि देख; बलवै मँ पनही गोरन कै रामवे दाँतन चना चबवावा है। जब ऊ दिन आइ जाये; तब देख्यऽ की हमही लोग कवन तमासा देखाई थै? भाई दादै कै माञ्छुअत वाटी, कि गबै-रियअन की नाहीं पिला मारिकै रहि जाइ कै होथै? अनी कुछ बनि परत बा? येई एक ठँ बोलइये खिलही कुरती पहिर पहिर थान्हेदार होय होय नक दम लगाय दिहेनि,

तहूँ को एकठें उनखुन हेरतै रहथे, चमार सारे बर्दी बान्धे घूमत बाटे, हमरे लोगन के हाथ मैं एकठे सुटकुनी नाही बचै पावत। बिना कोनिऊँ ओर गड़बड़हटि भए हमरे लोगउ कै के पूछै, एहीबिना भीजा सिआर भ

माटी नाहीं तौ इन्द्री कै तृण बरोबरि नाहि सटि आवत रहे। और जब काम परिजाये तब देख्यः "कि सिर लोटैरे धरती मँ की सिर माटी गरद मिल जाय" और नही तौ का ? तब ए लाला लूली थोरे देख परिहीं, जवन वस्ता लिहे कचहरिश्रा मँ लूटत रहले। और फिर इतौ दिन दसा कै बात है नाही तौ न केव कादर है, न वीर, ओनही गङ्गुल कै असवार जब जेका जेस चाहै कै देंई, नाही तौ जब एई गोरा आर्यान है केब जातन रहा कि ए बादसाहत कै लेई ही फेरि देखिः इहो कबहूँ जानि परत रहा कि यनहूँ कै दुसरिहा केथ बाय ? लेकिन आजु अगिला हहकारत चला आवत बा की नाहीं। और जवन इ कहकिऊ कि गोला गोली कै मरम तोहरें लोगन कै नाहीं आनी बा तौ जब दमका केब सिखावै, तौ हम न जानी। फेर जब काम परेह तब सब जानि लेब, लारिका कँ दूध पीवै के सिखाब कै ? फेरि येनही क के सिखायसि और हमका तौ एनहा सिखैहीं।

चौथा लड़का—(शुद्ध बंगाली कायस्थ)—ओ बाबा ! एतो शोब शत्तो होय। मोगर ओ इंग्रेज लोग तो हमारा एतेबार कोर्त्ता नेई, हम किस मफ़ाक लेरने शोक्ता ? ओ वालेन्टीयर होना हमारा कोबूल कोरता नेई। की कोर्त्ते पारे बाबा अभी तो गोरीबलोग।

आर्य्या—अच्छा ! एक बेर और जाकर अपने पिता से प्रार्थना करो, कदाचित मान जायं; और मेरी ओर से भी यह निवेदन करो, कि आप इसका कुछ प्रबन्ध नहीं करते हैं, जब शत्रु मर्मस्थान पर अधिकार कर लेगा, तब ॥

"संदीप्ते भवनेतु कूप खननम्" कैसे ठीक होगा।

दूसरा लड़का (तीसरे से)—लो भाई तू जा, हमतौ जा थई जवन बदा होते तवन होय। कहने को "आवम मैं आदर नहीं नैनन नहीं सनेह। तुलसी तहाँ न जाइए कंञ्चन बरसै मेंह ॥"

हम अब उहां काउ करै आई जेका आयन बिसावै नाहीं तब जाई कै का करी।

चौथा लड़का—आछा चोलो। हाम तो एक दाम जाकर उसे बोलेगा फिर उस्का खुशी (दोनों जाते हैं)

(उदास मन चौथे लड़के का पुनः प्रवेश)

आर्य्या (उत्कण्ठा पूर्वक)—कहो पुत्र क्या कहा?

चौथा ल०—जोननि! ओ क्या कोहेगा ओतो पोड़ा शूता उठता नेई, बोहूत बात शुन बोलता क्या होय कि, इश्में नालो लेरने का काम होय। नो बन्दोबस्त कोरवार आवश्यक, किन्तु जोदि तुम नई मानता, बाहूत शुगाम बात हम तुमको बोल्ता, ईस माफ़क कोरने से वो नेई कुछ शेकेगा। तुम अपना मां शे बालो जे—जोदि उस्को आता जावो, याक टूक कपोड़ेर पोरदा तेआरी कोर उरसे बोले जे, इधोर ना आओ ना आओ इधोर जानना लोक वाश कोरता है। वाश छुट्टी हुआ। आर बोश! अब शाला हामको ताकलीफ देकर जगाओ मोत॥

आर्य्या—हाय! क्या इन्हें भी मुहम्मदशाह की नीति भा गई? न जाने मेरे संगही से मनुष्य बल बुद्धि विहीन क्यों हो जाता है धन्य रे दुर्भाग्य!

(शंकित हो) अरे रे रे! एतो आया, अब क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? प्रिय! प्राणनाथ। रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये॥

बंगाली (थर थर काँपता हुआ)—ओ बाबा! भागो भागो! यकी काले शिपुई ना की स्बोथम जमोराज? यखून वाश कोरा भालो नेई, आमी तो पलाबो। (भागा)

(एक काबुली गदहे का प्रवेश)

गदहा (सिर ऊँचा कर)—ओबैन ओबैन दरोमत। अम अमीरे काबल अमतो तुमरा बाई ऐ! ओ जो तुमारा शोहार ऐ, उसे बोलाव। यकरीब इदर आता उस्का सवाब अम अपना मुलाक में रेने नई पाता ए, अमरा दोनों तराफ़ खुशी और रंज का इतनआ बरा बआरी बोजा ऐ, कि कमार टूतना चाहता है ऐ॥

आर्य्या (पहिचान कर धैर्य पूर्वक)—क्या कहूँ आर्य्य। ओतो सोते हैं। सुनते ही नहीं, किस्से कहूँ ?

गदहा—नई! नई उसको जगाओ जगाओ।

आर्य्या—जो आज्ञा (जाती है)

गदहा (स्वागत)—अअ—आआ आबा। क्या मजआ ऐ! क्या मजआ ऐ! अमको दोनों तराफ़ से मजा ऐ! "मुरदा दोजख में जाय, या बिहिश्त में, अमको अपने अलुआंमारा से काम ऐ"

(एक रूसी भालू का प्रवेश)

भालू—अमीर अमीर तू अभी योंही बेहोश खड़ा है! न तूने बीबी हिन्द का कुछ हाल कहा न पैगाम, न कोई वह कार्रवाई जिस्के लिये तू मुतअैयन किया गया था।

गदहा—हजूर। आप गब्राता क्यों ऐ अम साव तीक किया, बीबी इन्द को तुमको मुफ्त में देगा, अम लोग मुगाल ऐं, दगा देकर मारता ए, देको! खल-पिन्दी का दरबार में गया, दवात खाया, नजर लाया अऊर अंगराज लोगों का मनसा हिमात देका और चल्ता बखात उनको किस माफ़क दुम्बा का दुम दे दिया।

भालू—अरबे, जंगली, बेहूदे, गधे! यह तो कह कि वह माह पारा जादू जमाल कहाँ गई ?

गदहा—ओ तुम गब्राता क्यों ऐ वो अपना खसाम को लगाने गया ऐ॥

भालू—तब चल हम लोग भी वहीं चलें। जरा रंग ढंग तो देखैं! यहाँ क्या करेंगें!

गदहा—अच्छा तो ए! (दोनों जाते हैं) भालू! देख देख वः जगा रही है बस यहीं छुपकेसे खड़ा होजा!

(आर्य्या एक सिंह को जगाती है)

आर्य्या—प्राणनाथ! प्राणवल्लभ ? सिंहराज, महाराज॥ उठो। उठो यह क्या नींद है। और कैसा सोना है। अरे अब तो सचेत हो हाय हाय

क्या ही घोर निद्रा ने ग्रसा है लाख भाँति जगाने पर भी नहीं सगमगाते !

८४ (गान राग कलिंगड़ा ता० खिमटा)

जागो अबतो कसर रही थोरी रे ।। टेक

थकी जगाय नही जागत यह कैसी भई गति तोरी रे ।
कान पूँछ नहि नेक डुलावत सुनत कहीं नहिं मोरी रे ।।
रूसहूस मनहूँस चढ़त आवत न लखत तोहि ओरी रे ।
काल सरिस रिपु सों न करत भय असी भई मति भोरी रे ।।
बैरी लेन चहत अब तो मोहि धर कर जोरा जोरी रे ।
तौहूँ नहि उठि धाय हाय लरि लेत न तासो छोरी रे ।।३ ।।
कहाँ गई वह गठरी विद्या कहां अकिल की झोरी रे ।
कहाँ गई वह कला कुशलता कहां वीरता वोरी रे ।। ४ ।।
लरिबै उठि नाहिं चलि है वह गीदड़ भभकी कोरी रे ।
कसहु कमर हित समर नहीं यह नीकी अब जिद्द थोरी रे ।
मैं तो बीर वधू हूँ कादर पिय की जात न खोरी रे ।
सुभट जानि तोहि अबहि लौ तोरी न प्रेम की डोरी रे ।। ६ ।।
आदर नहि हित को न चहत बैरिन की नाक मरोरी रे ।
सूझत नाहि कछू विधिने जनु तेरी आखँन फोरी रे ।। ७ ।।
तेरो तो यह हाल सकल रिपु खेलत होनिम होरी रे ।
कैसी करूं कहाँ जाउ हाय मैं दैय्या अबला गोरी रे ।।८।।

(आर्य्या जगाती है और सिंह कुछ चैतन्य हो पुनः निद्रित हो जाता है)

गदहा (भालू से)—वालो ओ । अमको से अमारा इनाम लावो ।

भालू—अबे चुप भी रह चोट्टे ज़रा सुन्ने भी तो दे।

आर्य्या—अरे फिर तुम सो चले। हाय क्या होनहार है। अरे उठकर उचित कर्तव्य का विचार करो, इन छलियों से ऐसे कैसे बचोगे,

भालू (आगे बढ़ कर)—ऐ इश्के कमर-परी पैकर। क्या तू ने नहीं सुना है कि "सोते हुये फित्ने को जगाना नहीं अच्छा" उसे क्यों तू नाहक़ बेदार किया चाहती है? आ चुपके से मिल भी जाय, उस कमबख्त को यूहीं पड़ा रहने दे। वह तो अब जिन्दः दरगोर है।

(आर्या नहीं सुनती है)

गदहा०—लाओ। ओ अमारा इनाम लाव! और जैसा जागा, अम उपार से दिखलाना को उस्का तराफ़ जायगा।

भालू (आर्य्या से)—अरी क्यूं नाज़नीने ज़ोहारा जबीन! तू मेरी बात क्यूं नहीं सुनती, हाय! तू अपनी चश्मे नरगिसी से मुझ बेक़रार आशिकेज़ार को क्यूं नहीं देखती? अरे! तू क्या अब भी इन शीरीं लाले लबों का बोसा मुझे नहीं देना चाहती? लिल्लाह जल्दी आकर गले से लग जा, वर्नः तेरे बिमारे मुहब्बत का आसार बुरा हुआ जाता है॥ गो मैं अल्लाह तआला की दरगाह में उसके इसी करम का शुक्रअदा करता हूँ कि जिस नेमतेग़ैर मुतरक़बा के हुसूल की हसरत में मेरी कई पुश्ते मर मिटीं, और नसीब न हुई। परवर दिगार ने मुझ पर मेहरबानी करके आज अता किया। मगर मैं भी तेरे शर्बते दीदार का प्यासा मुद्दतों से इसी फ़िराक़ में चूर रहा और क्या क्या हैरानियां व जांफ़िशानियां उठा कर बारे अब जो मेरे एक़बाल का सितारा चमका तो खुदा खुदा कर यह दीदारे फ़रहत आसार नज़र आया। पस अब क्यूं मुझे सताती हो लिल्लाह एक बोसा तो दे दो!

आर्य्या (मूं फेर कर)—अरे मूर्ख दुष्ट! पामर पशु! क्या बक रहा है अलक्षेन्द्र (सिकन्दर) जिसके नाम से तेरे पूर्व पुरुषों ने अपने को पुकार कर अपने मान का हेतु माना है, वही बिचारा मेरे लिये सिर पटक

पटक कर मर गया और मैं हाथ न आई, तो तेरी भला कौन गिन्ती है असंख्य सम्राट् और राज राजेश्वरों को मेरे प्रेम ने मार डाला, तेरे भी कई पुरखे मर मिटे, अब क्या तेरी भी मृत्यु कलकला रही है ! कि काल विवश कहनी अनकही बातें बक रहा है।

चल दूर हो दुत, दुत ॥

भालू०—ऐ हूर श्यामल। यह तूं क्या कह रही है अरे।—(गाता है)।

है जब मुद्दतो हमने दिल को जलाया।
तब ऐ जाने मन् अब तुझे हमने पाया ॥१॥
तेरे सिर्फ मिलने हीं की जुस्तजू में।
जहां को है अगियार हमने बनाया ॥२॥
खोदा ने किया आज है मेह हम पर।
रकीबो को फिटकार हमने बताया ॥३॥
फंसा बस लिया शेर को मिस्ले बकरी।
वः आलम में है जाल हमने बिछाया ॥४॥
तेरा आज तक लब रकीबो ने चूसा।
हमारी भी बारी अब आई जो आया ॥५॥
उठाएँ भला आँख अंग्रेजों अफगा।
यः कैसा तेरे दिल में जानी समाया ॥६॥
सिखाते थे जो अक्ल दुनियाँ को एक दिन।
उन्हीं आज वे अक्ल हमने बनाया ॥७॥
कमीशन को कैसा दिखाया करिश्मा।
छका कर तमिसड़न के छक्के छुड़ाया ॥८॥
उड़ाया निशां मर्व पर पञ्जदेह में !
जो गोला बजाया तो भोला बनाया ॥९॥

हिरात अब लिया आज कलमें फिर आगे।
बढ़ा कर कदम धरके तुझको दबाया ॥१०॥
समझ खत्म बस यार अपने को तू अब।
जो है तेज़ शमशीर हमने उठाया ॥११॥
अवस मत सती हो तू अब साथ इसके।
खोदा ने जो हमसे तुझे है मिलाया ॥१२॥
अब आ पास मेरे न कर देर प्यारी।
तुझे बेच कर जान है हमने पाया ॥१३॥

गदहा—वाऊ वाऊ वाऊ वाऊ क्या बआत है। सुबहान् अल्लाः।

आर्य्या (स्वगत)—अरे यह तो धीरे धीरे रंग बे रंग झलकता चला आता है। यह अमीर भी कुछ उधर ही मिलासा जान पड़ता है। हाय! क्या मेरी भी दशा महारायी श्री जानकी जी के तुल्य हुआ चाहती है। निश्चय यह अमीर कनक मृग सा मारीच है, और यह विचित्र भालू जो ऊपर से साधु बना है यति के वेश में दशानन और जनरल कोमाराफ़ यवम् अलीखानाफ़ खर और दूषण और कौन जाने कि इरानाधिपति यह त्रिशिरा है, हाय! अब मेरे बचने की आशा नहीं।

भालू—अरे क्यूं जानी महबूबे ख़ासानी!, इस नूरानी चिहरे के दिखलाने में भी परहेज़! यह बे रूखी! यह बे पतनाई? हाय गजब, यह सितम गारी! खैर ज़रा इधर तो आइए, फिर तो इचें वादा बाद (आर्य्या की ओर दौड़ता है)

आर्य्या (डरकर सिंह पर गिर कर ,—आर्य पुत्र, प्राणनाथ-रक्षा करो।

सिंह (चौंक कर)—बेल! ए क्या हुई। माटखाब।

आर्य्या (काँपती और सिंह से लिपटी) क्या है। देखते नहीं? यह

मुझे घसीटे लिये जाया चाहता है और तुम्हें कुछ इसका ध्यान ही नहीं ॥

[सिंह भालू को देख कर गाता है]

गजल भैरवीः—

इधर न आओ तुम अइ मीरवां सुनो टो सई। करूँ मैं आल कुच कुच अपना वियां सुनो टो सई ॥१॥

मजा नई औ कुच अब इण्ड में जरा बाकी। मुजेई छेड़ो मेरी जाने जां सुनो टो सई ॥ २ ॥

बऊटे मुल्क जेआं में टुमारा लेने को। जो एक घर रहा क्या औ ज़िआ सुनो टो सई ॥ ३ ॥

जो पजाबे को लिया टुमने टो अपने विज़िया। मगर न आगे बराओ निशां सुनो टो सई ॥ ४ ॥

अलीखानफो को मारफ़ को करो मौकूफ़। अजीव औ ए बशर बद गुमां सुनो टो सई ॥ ५ ॥

मरूचक और क़िला मोर बी चए ले लो। दओ हेराट में मेरा मकां सुनो टो सई ॥ ६ ॥

ये आं ट्लक बी अगर आओगे टो अरज नई। वरे जो आगे टो असऔं जिआ सुनो टो सई ॥ ७ ॥

लराई इण्ड से जो आंक लराई ओगी। येई से खटून औरै दास्तां सुनो टो सई ॥ ८ ॥

नडी लऊ की बएगी टमाम दुनियाँ में। मिटेगा आप का नामों निशां सुनो टो सई ॥ ९ ॥

भालू—(मोछों पर ताव देकर) अभी हरत। यः डींगबाज़ियाँ छोड़िए। और इस दिलख्वासे दूर हूजिए, नहीं तो वल्लाह तमाचे वाजिब होगीं, यः खल्लो-चप्पो जाने दो ॥

सिंह—वेल अमीर वेल अमीर।

गदहा—ओ क्या ऐ ओ क्या ऐ ?

सिंह—वेल। डेको। रोको। रोको। इस्को टुम किस वास्ते आनेडिया।

गदहा—ओ अम क्या करेगा तुम तो अमारा बात माना नईं, तुम पैलासे न तो रूपिया दिया न सामाने जङ्ग दिया, अमीर अपना सर पोरेगा। किस माफ़िक रोके, ओ अमारा काबू का नई ऐ टुम रोको टो रोको!

भालू—अरे यः क्या दीवानों को सी बातैं करता है, वह मेरे यहाँ का नमक ख़ारे क़दीम बन्दए परवर्दः है,। फिर उस्की मजाल क्या जो इधर ताके तो सही, आंखै निकाल लूं कसम इस दिलरुबा के पापोसे शरीफ की। अब तुम्हें जो कुछ करना हो सो कर॥

सिंह—वेल। अमटो तुम से लेरना नेईं चाटा। पर टुम ए बटाव, कि ओ कौन सा टर्कीब हुई जिस्मे लराई वण्ड हो, अल्वाट तुम जेगरडेस्टी लरेगा, टो लरेगा, वट अगर कोई वो शकुल लराई बचने का ही टो बटाओ ?

भालू—बेशक मुमकिन है कि लड़ाई न हो ? मगर शर्त यही है कि चटपट अपनी तशरीफ़ शरीफ को यहाँ से उठाइये, और इस माहे तमाम महबूबे गुलन्दाम से काम न रखिये॥

सिंह-(स्वगत) बलाए किस ठौर होने सेक्ता ? यः टिजारट के बहाने सैं लाशुमार डौलट का रोज-रोज आना, मालगुजारी, टैक्स और हरेक ठौर पे किटना रूपियः इण्डिया से आटा कि डरने को जगा नई मिल्टा, इटना बरा हुकूमट, फिर इसी का बलउलट ये शेनशाई का डावा हुई, अउर को टक कए, इसी का बउउलट अम लोग आडमी और डउलटमण्ड बना फिर किस माफक इस्को डेने शेक्ता। (प्रकाश)—ओ नई। नई। नई कभी नई होने शक्ता। टुम जिटना रूपी मागो हम अलबट देने सेक्ता, जो कुच बेइज्जटी करेगा कबूल करने शेका। पजडे दिया, हिण्ट डेएगा असबटा कुल अफगानिस्थान टक डे डेगा, पर नई। कभी नई इण्डिया॥

भालू—चेखुश। वाह। देखो तो लन्त रानियाँ। अरबे पजदेः तू क्या देवेगा, वोः तो हमने ले लिया, फौरन अब यहाँ से ये सुफेद मूं वाले शैतानों को भगाओ नहीं तो वल्लाह कहे देता हूँ कि चपतगाह कहलाने लगेगा। और अफगानिस्तान तो गोया आप के बाबाजान का है कि जो आप दे देवैगें; बस ! छोड़ दूर हो नहीं तो ले अभी देता हूँ,

(आगे बढ़ता है)

सिंह—ठैरो ! ए जनानखाने में मट ़सो, दूर से बाट करो। और ए कओ कि अमारा टुमारा फैसला किस माफ़िक होगा ॥

भालू—बचा मजा तो सब तुमने लेई लिया, लव चूसने के बहाने कलेजे का खून तक तो इस बिचारी का पी गया, ऐसी ऐसी तकलीफ़ दी कि बायद व शायद खाने को भी न दिया, बल्कैः उलटा गोश्त तक इस्का काट काट कर तू मलऊन खा गया, अब इस्की दो मुश्त सूखी हड्डियां भी हमें नहीं दिया चाहता है। और फैसला इस्का यही है कि आकर सामने डट जा, दो दो हाथ हमारे तेरे हो जिसे खोदा देगा वह लेगा।

सिंह [उठकर आतंक भाव से]- वेल अच्छा कुछ परवा नेई, लेकिन टुमारा सिर शामट आया हम जान्टा, नानसेन्स। रास्कल। डेखो अम टुम को किस माफ़िक मजा खिकलाटा ।

[दोनों रङ्ग भूमि में जाते हैं]

कजली:—

घिरी घटा सी फौज रूस मनहूस चढ़ी क्या आवै (रामा) हरि हरि खेलो कजली मिलि गोरा औ काला रे हरी टे० ॥

साफ़ करो बन्दूकै ठोटा टोओ ढाल सुधारो रामा- हरि हरि बंधो सान तलवार लै कर भाला रे हरी ॥१॥

ढील ढाल कपड़ा तजिकै सब पहिनो फ़ौजी कुरती रामा। हरि हरि
डीयर वा लेन्हीअर सजो रिसाला रे हरी ॥२॥

ठुनमुनिया सी खेल कवाइद करि जिय कसक मिटाओं रामा। हरि हरि
कजली लौं गाओ अब करखा आला रे हरी ॥३॥

मार मार हुंकार सोर सुर सांचे अब ललकारो रामा। हरि हरि
सत्रुन के सिर उपर दै सम ताला रे हरी ॥४॥

बहुत दिनन पर ई दिन आवा देव ताव मोंछन पर रामा। हरि हरि
सुभट समर सावनवां बीतल जाला रे हरी ॥५॥

उठो उठो धाओ धरि मारो वेगि न विलम लगाओ रामा। हरि हरि
पड़ा कठिन कट्टर से अब तो पाला रे हरी ॥६॥

उठै धूम के स्याम सघन घन गरजै तोप अवाजें रामा। हरि हरि
गिरै वज्र सम गोला बम्ब निराला रे हरी ॥७॥

झरी बूंद सी बरसाओ गोली बन्दूकन सों रामा। हरि हरि
चमकाओ चपला सी कर करवाला रे हरी ॥८॥

कहरै मोर सरिस दादुर लो विलबिलायँ गिर घायल रामा। हरि हरि
बिना मोल मनइनकै मूंड़ बिचाला रे हरी ॥९॥

करो महाभारत भारत मैं मिलि सब भारतवासी रामा। हरि हरि
महारानी का होय बोल औ बाला रे हरी ॥१०॥

परिहास द्वितीय

[पंडित, मुन्शी और महाजन]

पं०—क्या साहुजी ! बहुत दिन से कुछ दिया लिया नहीं, भला ऐसी कृपणता किस जीवन के अर्थ कर रहे हो ! आजकल होलीकोत्सव में एक दिन बुधिया बूटी तो छनाओ और अच्छा भोजन तो कराओ, नहीं तो जब मुंह बाय कर मर जावगे तब यह माल जो मार-मार कर सञ्चय कर रक्खे हो सो यह बेईमानी का धन बस योंही "गजभुक्त कपित्थवत्" अनायास नाश हो जायगा कुछ धर्म भी तो चेतो।

म०—अरे महराज ! पेट भर लरकन के खाये भर के तो मिलबै नाहीं करत, धर्म्म करावै के सब अनै कुकुर ऐसा मुंह बाये ठाढ़ रहथ्यो, और तेह पर कहथ्यो कि बेईमानी का धन और माल मार मार कर रखथ्यो, भला अपना लहना पावना तो मिलवै नाहीं करता ज्यादे फेक का देई, और अब जो कभू ऐसी बेकायदे बात बोलबो तो बन न पड़िए ! ई बात समुझ रख्यो !

पं०—अरे क्या तुम बावले बैल से बड़बड़ाने लगे ! क्या बन न पड़ेगी ! बन न पड़ेगी ! क्या तुमसे बन पड़ी, और क्या बन पड़ेगी ! परन्तु यह जाने रहना कि धर्मदण्ड, राजदण्ड और चोर, अग्नि, जल इत्यादि के मिस ईश्वरीय दण्ड हैं; सो पूर्व के न होने से पर कथित तो होते ही हैं। अभी तो एक पैसा देते कष्ट होता है। परन्तु एक नाव डूब

जाय वा एक गोदाम जल जाय, या दिवाले में रकम मारी जाय, तो नाक सिकोड़ के सह लेवगे; नहीं कोई घर का प्राणी ही ढुलक जायगा तो भी थैली खुलबै करैगी, साहब कलक्टर घर डाटैगें तो गब्ब से आगे रख देवगे परन्तु हमारा कहना थोड़ै मानोगे।

म०—ई तोह से के पूछथै जवन बोलथ्यो ? हम नाहीं देते, तोरे दादा का इजारा है।

पं०—हाँ! हाँ! हम जाने हैं कि जब तक न मरोगे तुम्हारे घर हमारे पैर पर पानी नही पड़ैगा, हाँ! तुम सेलहो तौ तेरही में ठीक लगै तो लगै॥

मुं० —अजी परनाम अर्ज़ है जी पंडत जी॥

पं०—अरे क्या कहै कोरमकोर आशीर्वाद देते देते तो जिह्वा घिस गयी भला बिना चित्त प्रसन्न भये कहीं आशीष भी निकलता है इस्में ल्यावो अब शाप ही दै चलैं॥

मुं०—अरे क्यों म.राज क्या कुसूर हुआ? क्यों यह नाराज़गी है, फर्माइये तो सही!

पं०—अरे क्या व्यर्थ पूछते हो लाला! ल्याए हो कुछ कि आशीर्वाद ही लेने आए हो, कचहरी में तो बिना हाथ गरम करवाए किसी से बोलते भी नहीं होगे और हम से संसार भर की व्याख्या लेव, और न लेना एक न देना दो। इतना बड़ा होली का त्यौहार बीत गया, मद्य पिया, मास खाया, नाच देखा, हर तरह रुपया लुटाया परन्तु हम को साझ पोंथी से प्रयोग नहीं।

मुं०—अर्ज़ महराज! वह ज़माना आया है कि कौड़ियों के लाले पड़ रहे हैं। आप को नाच तमाशे की सूझी है भाई परमेश्वर की कसम। अब सरकारी नौकरी में भी कुछ मजा न रहा। क्या कहूं निहायत परीशान हूं।

[सं० १९४१ वि०]

रेलवे स्तोत्र !

हे रेल ! तेरी जय हो, जय हो और गाड़ी, इक्का, नौका, डोंगी, सब की क्षय हो क्षय हो ! एवंच हिंदुस्तानी राजाओं को अपने राज्य में तुम्हारे जाने से भय हो भय हो, और हमारे दुःखों का तुम्हारे कोमल पहियों की अमूल धूल सिर पर पड़ने से लय हो लय हो।

हे गरूड़ सहोदरे ! तुम भगवान की मन से भी अधिक गमन करने वाली गमन शक्ति हो, और अति सत्वरगामी काल की भी काकी हो, अतएव तुम्हें कोटि कोटि सष्टाङ्ग ।

हे धूम वाहिनी ! तुम्हारे विषय अग्नि साक्षात रुप से, बरुण जल रूप से, वायु धौंकनी रुप से, विष्णु व्यापक रूप से, लक्ष्मी खजाना स्वरूप से, इन्द्र खिड़की रुपी हजारों नेत्रों से, सूर्य सुर्ख लालटेन रुप से, चंद्रमा श्वेत लालटैन रुपसे, यमराज गार्ड रुप से, यमदूत चपरासी रुप से और भगवान सदाशिव मृत्यु को साथ लेकर गाड़ी लड़ने के समय काल रुप से निवास करते हैं, अतएव हे सर्व देवानाम्प्रिये ! हे सर्वतोमद्र चक्रे ! तुम स्वर्ग, बैकुंठ, कैलास, नर्क सब की आधार हो ।

हे विश्वमोहनी ! हे मायामये ! जिस देश को तुमने अपने पतितपावन चरणारविंदों से पवित्र नहीं किया, वहाँ के लोग तुम्हारे दर्शनों के लिये देवी देव मानते, सकीर के द्वार पर धन्ना देते, हजारों रुपयों का चंदा सही करते, तब तुम्हें अपने देश में पधराय कर सफल जन्मा होते हैं । पर जब तुम वहाँ के बैपार की नफा अपनी किरणों से हर लेती, तब वहाँ के लोग तुम्हारा नाम "रेड" रखते और "रलयो र्डलयोश्चैव" इस कारिका को चरितार्थ करते अतएव तुम्हारे आदि अंत दोनों में दुःख ही दुःख है ।

हे यूरोप कलाकलानिधे ! हे मानवी कारीगरी की चरम मूर्ते, तुम सर्ग नहीं हो, क्योंकि ब्रह्मा से तुम्हारी उत्पत्ति नहीं, और न रघुवंश । माघ की कोई प्रकर्ण ही हो, रहा विसर्ग सो वह भी नहीं कि क्योकि मरीचि कश्यप आदिने तुम्हारे दर्शन भी नहीं किये, और द्विविन्दु (:) ऐसा आकार है, अतएव सर्ग विसर्ग रहित सच्चिदानंद स्वरूप हो ।

हे ब्रह्मादि देव दुर्लभे ! ब्रह्मा और विश्वकर्म्मा दोनों तुम्हारी अपूर्व रचना देखकर मोहित हो जाते हैं, और तुम्हारी कलों के कारखाने को देख अपनी कारीगरी का अभिमान छोड़ देते हैं वरंच कईबार ब्रह्मलोक में तुम्हें बनाया, पर तुम नही बनी, क्योकि तुम भक्त वत्सल हो इसी से कभी कभी क्रोध में आकर देवता लोग तुम्हारी लाइन के पुल पनाले बिगाड़ देते हैं पर तुम फिर ज्यों की त्यों, अतएव हे देव दर्प दलनी ! तुम्हारी महिमा अकथ है ।

हे सुरासुर पूजिते ! तुम असुर बंश की स्वामिनी हो, तुम्हारा सिर हबड़े में है, तुम्हारे दोनों चरण दिल्ली और कराची में है तुम्हारे दोनों हाथ अवध रूहेलखंड रेलवे और राजपूताना रेलवे हैं तुम्हारी पुच्छ ग्रेट-इण्डिया पेनेन्शुला रेलवे है, और बाकी रेलावली सब तुम्हारी रोमावली है ।

तुम समग्र भारतवर्ष को दाब कर पड़ी हो, जिस दिन तुम्हें रुपये का पिण्ड न मिला कि तुमने गयासुर की तरह उठ कर हिन्दुस्तान का भक्षण किया ।

हे कटि भृकुटि रहित मकटि ! तुम्हारे आगे पीछे कहीं नाक नहीं है अतएव शूर्पणखा हो, और पूत (पवित्र) नहीं हो अतएव पूतना हो !

हे विराट रूपे ! तुम विष्णु की विराट वा विभ्राट रूप हो क्योंकि आप की तद्रूप ही लम्बी चौड़ी मूर्ति है । तुम स्वामिकार्तिक हो, क्योंकि अनेक पर्वतों बीच में से विदारण किया है, तुम गणेश हो, क्योंकि प्रत्येक स्टेशन पर शुंडा दण्ड से जलपान करती हो, और तुम उनचास मरुत हो क्योंकि उनके समान आपकी उनचास से भी अधिक गाड़ियां एक संग गमनकरती हैं ।

हे अनेक रूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ; तुम सहस्र शीर्षा सहस्राक्ष और सहस्रपाद हो ! तुम मत्स्य हो, क्योंकि मत्स्य देश में विद्यमान हो, तुम कच्छप हो क्योंकि तुम्हारी सड़क के नीचे सैकड़ों लोहे के कच्छप पड़े हुये हैं । तुम बाराह हो क्योंकि सदैव राह के साथ चलती हो । तुम नर-सिंह हो, क्योंकि तुम्हारे भीतर बैठकर नरसिंह हो जाता है । तुम वामन हो क्योंकि पहिले कलकत्ते से रानीगंज तक तीन पांव बढ़ाकर अब सारे भारतवर्ष में व्यास हो गई ! तुम परशुराम हो, क्योंकि क्षत्रियों को निःक्षत्र कर दिया । तुम राम हो, क्योंकि सिन्धु का सेतु बाँधा । तुम कृष्ण हो क्यों कि तुम्हारी वंशी सुन कर यात्री लोग गोपियों के समान बेचैन हो जाते हैं । तुम बुद्ध हो, क्योंकि वैदिक धर्म का नाश करने वाली हो । कल्की हो, क्योंकि कोलाहल करती हो, दूसरे कलकी हो अतएव दशाकृति कुले कृष्णाय तुभ्यनमः ।

हे माया मयि ! तुम वेग की भी जननी हो, और उद्वेग की भी जननी हो, क्योंकि तुम्हारी ही कृपा से घर घर में बेग और मनोवेग दीखने लगे और तुम्हारे प्रताप से जन जन में उद्वेग होने लगे, क्योंकि तुम्हारे आने में उद्वेग, तुम्हारे जाने में उद्वेग, टिकट लेने में उद्वेग, टिकट देने में उद्वेग उतरते उद्वेग, अतएव तुम वेगवती और उद्वेग वती को नमस्कार है ।

हे दुर्गे ! दुर्गति हरणीः ! तुम्हारे बहुत से देहाती भक्त तुम्हें दुर्गा का अवतार मानकर प्रणाम करते, अतएव "या देवी सर्वदेशेषु रेलरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

हे यूरोप कुल कमल दिवाकरे ! तुम इङ्गलन सम्भूत हो अतएव स्वजातीय पक्षपात से परिपूर्ण हो, एक ही गाड़ी, एक ही समय में अंग्रेजों को स्वर्ग और हिन्दुस्तानियों को नरक है । अतएव "अत्रैव नरकः स्वर्गः" यह नास्तिकों का वाक्य है आज तुम्हारे विषय में ही चरितार्थ हुआ ।

(सन् १८८२ ई०)

वैद्यराज स्तवराज

हे वैद्यराज अथवा वैलराज ! आप को नमस्कार । लाखों नमस्कार ही नहीं, एक रुपया पुरस्कार भी । फिर पुरस्कार ही नहीं, तिरस्कार भी ? क्योंकि वैद्यराज ! नमस्तेऽस्तु यमराज सहोदरः । यमस्तुहरते प्राणाम् वैद्यः प्राणाधनानिचः !"

हे भिषक चक्रचूड़ामणि ! आप हम से वक्र न हों । शक्र ने एक बार आप का भाग बन्द कर दिया था, आप ने उसके हस्त का स्तम्भन कर दिया । अतएव हमें डर लगता है कि कहीं आप हमारी वाणी का भी स्तम्भन न कर दें । क्योंकि " मूकं करोतिवाचालं पंगु लंघयते गिरीम् यत् कृपातमहम्वन्दे वैद्यराज ममहाखलम् ।"

हे चिकित्सा शास्त्र चतुर ! आप से सुर कहें या असुर ? सर इसलिये कि आप के आचार्य अश्विनी कुमार हैं । असर इसलिये कि आपने हजारों मनुष्य मार कर यह पद पाया । प्रमाण "शतमारी भवेद् वैद्य : सहस्रमारी चिकित्सकः । लक्षमारी भिषक्ज्ञेयः कोटि मारी तु वैद्यराट !"

हे कविराज महाराज ! आप की कहां तक स्तुति करें ? कविता में आप को काला अक्षर भैंस बराबर, अलङ्कार में आप का विचार मूढ़, लक्षणा व्यञ्जना आप ने स्वप्न में भी नहीं सुनीं, पर आप कविराज ! जैसे सिंह जबर्दस्ती वनराज ! मेरी बुद्धि में आप के इस नाम में लेख दोष हुआ, वस्तुतः आप का नाम कपिराज या कलिराज है । क्यों कि तुलसीदास

जी ने कहा है "कवीश्वर कपीश्वरौ।" हे सर्व रोगापहारी! हमारी कलम बिचारी आप के गुणगान में हारी क्या झखमारी! वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, श्रुति स्मृति सब आप की स्तुति से भरे हैं। वेद में आप का आयुर्वेद जागरूक है। पुराणों में इन्द्र के साथ अश्विनी कुमार की धूर्तता बारम्बार विदित! रामायण में सुषेण वैद्य की कथा प्रसिद्ध, भारत में आप का नाम लिखित, श्रुति में सुश्रुत, स्मृति में आप श्राद्ध से वर्जित, अतएव हम उच्चैः स्वर से पुकार कर कहते हैं कि "औषधिर्जान्हवी तोयम् वैद्योनारायणो हरिः"

हे धन्वन्तरि सम्प्रदाय प्रवर्त्तक! आप की गोबर गणेशता आदि से ही वर्णित है। क्योंकि जिस समय धन्वन्तरि समुद्र से अमृत लेकर निकले उस समय असुरों ने आप से जबर्दस्ती अमृत छीन लिया। और आप को सफ़ा कठमुंहरा बना दिया। ऐसे ही इस समय भी बहुत से धूर्त आप से औषधि लेकर दाम के नाम तिलाञ्जलि देते हैं। तब आप औषधि के बदले अपने नाम से काम लेते हैं। जैसा कहा है, "धन्वन्तरिश्च भगवानवतीर्य लोके नाम्ना नृणां पुरू रुजां रुज आशुहन्ति।"

हे अश्विनी कुमार कुमार! जगत् के सब अश्व आप के भाई बन्द है पर खेद कि वह कैसा कष्ट पाते, और आप कैसा मजा उड़ाते। आप उनसे सहानुभूति तक प्रकाश नहीं करते। इसी से आप की पूँछ नहीं रही। तथापि (बिनापूँछ भी) आप उन में गिने जाते हैं, क्योंकि "नहि भिन्नपुच्छोऽश्वगर्दभो भवति।"

हे दिवोदासोपहास! जिस समय दिवोदास ने पृथ्वी पर राज्य किया था, उस समय बड़ा काल पड़ा! ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि इस समय कोई वैद्यराज नहीं, यदि होता, तो अब भी काल पड़ता क्योंकि "यत्रवैद्यस्तत्रकालः इत्यनुमानात्।"

हे लोलिम्बराज युवराज! लोलिम्बराज आप भी बड़े रसिक थे, और उनकी वैद्यरानी भी बड़ी रसिका थीं। जो उन्होंने औषधि के साथ कोक-

शास्त्र भी उन्हें पढ़ा दिया, ऐसा कभी कभी आप भी किसी रण्डी मुण्डी की दवा करते उसे कोकशास्त्र का क्वाथ पिला देते, पर उतनी रसिकता और काव्यप्रियता आपके दल में नहीं। इसी से लोलिम्बराज का यह श्लोक सत्य है कि—

"येषान्न चेतो ललनासुलग्नम्मग्न न साहित्य सुधा समुद्रे शास्यन्ति किन्ते मम हा प्रयासानन्धाः यथा वारवधू विलासन्।"

हे चरक सुश्रुत वाग्भट्ट भाव मिश्रादि गद्दी नशीन! आपके पूर्वाचार्य्य जो कुछ लिख गये थे, वह सब आप लोगों ने नाश कर दिया वरञ्च उनका नाम ले लेकर अपनी मूर्खता से उन्हें दोष दिलाते हैं। अतएव कृपा करें तो बड़ा अच्छा हो, उनके सब ग्रन्थ गंगा जी में डाल दीजिये। क्योंकि ग्रंन्थों के पढ़ने और पढ़ाने की तो आप लोगों ने शपथ खा ली है। हा! ऐसा उत्तम शास्त्र और उसकी ऐसी अधम दशा! हा—

"स्वरस्वती ज्ञान खले यथा सती" "अपात्रे निष्फला विद्या" "किन्नारिकेलिफलमाप्य कपिः करोति।"

हे आयुर्वेद वर्द्धक! आपको वेद के सब अंगो में अभ्यास रखना उचित था पर आपको 'क ख ग घ' के सिवाय आगे कसम है। शिक्षा आपके भयसे गली गली भिक्षा मांगती है, कल्प का आपने काया कल्प कर दिया।

निरुक्त को बन्धन से मुक्त कर दिया, छन्द आपके आगे स्वच्छन्द हैं, ज्योतिष को विष दे दिया, और व्याकरण को तो आपने हाथ पैर तोड़, मुंह मरोड़, लज्जा छोड़, ऐसी दुर्गति से मारा कि जैसे यज्ञ के पशु को मारते हैं। अतएव वैयाकरण भी आपसे बदला लेते हैं कि अशुद्ध शब्दों के कबूतरों के यूथ के यूथ आपके मुंह में भर देते। कहा भी है—

"लटभट गणक चिकित्सकानाम्मुख विवराणि यदि नस्युः।
वैयाकरण किराता दुश्छिन्ना शुद्ध शब्द मृगाः कयान्ति ?"

हे स्वार्थ परायण ! आप समझते हैं कि वैद्य विद्या सर्वोत्तम है, पर शास्त्र कहता है इसके बराबर कोई अधम नहीं यथा "उत्तमा वैदिकी विद्या, काव्य विद्या तु मध्यमा। अधमा ज्यौतिषी विद्या, वैद्य विद्याधमाधमा।"

हे सर्व सुलभ विद्यानिधान ! आपके बराबर कोई भाग्यवान् नहीं आपकी दूकान आठ आने के अमृतसागर और चार आने की दवाओं में चलती है। इसीसे किसी कवि ने कहा है–

"यस्य च वा मूलं येन केन च वा सह।
यस्मै कस्मै प्रदातव्यं यद्वातद्वा भविष्यति ॥"

हे सर्वौषधि, महौषधि, वनौषधि, गृहौषधि, दिव्यौषधि सागर ! आपकी जिह्वा में, हस्त में, चरण में, कटि में, कर्ण में, बटुए में, बक्स में, आलमारी में सब रोगों की सब समय, सब औषधि विद्यमान रहती है। जो चाहे सो ले लीजिए। यदि कुछ भी आपके पास न हो, शरीर का मैल ही छुटा कर दे देने से रोगी का मनोर्थ सिद्ध हो जाय इसी से लिखा है—

"गुरोरधीताखिल वैद्य विद्यः पीयूषपाणिः कुशल क्रियासु।
गत स्पृहो धैर्य्यधरः कृपालुः शुद्धोधिकारीभिषगीदृशः स्यात्।"

हे भूत, भविष्य, वर्त्तमान त्रिकालज्ञ ! आप रोगी के तीनों कालों के ज्ञाता हैं। चाहें घोड़े का जीन खाया ही क्यों न बतला दें। पर रोगी और उसके घर के लोग आप की वाणी सत्यात् सत्य वेद तुल्य मानते हैं। अतएव जो आप की बात को नहीं विश्वास करता, "स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वैद्यनिन्दकः।"

हे विश्वकर्मा ! अच्छे भले को ज्वर बतलाना, ज्वर को जीर्ण ज्वर बतलाना, जीर्ण ज्वर को सन्निपात बतलाना, सन्निपात को मृत्यु बतलाना, दो कौड़ी की पीपल सोंठ की गोली को दो रुपये का रामबाण बतलाना, पिसी सेतखड़ी हिरमिच को चंद्रोदय, मकरध्वज बतलाना, प्रारब्ध से अच्छे हुए को अपनी कीर्ति बतलाना इत्यादि आप के अनेक कर्म हैं। उनकी कहाँ तक गणना करें, "लीला दुर्ल्ललिताद्भुत व्यसनिने कृष्णायतुभ्यन्नमः।"

हे वज्र हृदय ! आप आर्त्त, महार्त्त, गदात, क्षुधार्त्त, लोकार्त्त, सब से अपनी धर्माधर्म दक्षिणा वसूल कर लेते हैं तब उनकी औषधि करते हैं, अतएव आप का मूलमंत्र है कि —

"टका हर्त्ता टका कर्त्ता, टका मोक्ष प्रदायकाः
टकाः सर्वत्र पूज्यन्ते बिन टका टकटकायते।"

हे प्रारब्ध भोग ! आप मनुष्य का मरे पीछे भी संग नहीं छोड़ते ! दवा के दाम, दाम, दाम, छदाम तक ले लेते। चिता तक में रोगी का पीछा नहीं छोड़ते उक्तंच:—

"चिताम्प्रज्वलितान्दृष्ट्वा वैद्यो विस्मय मागतः।
नाहंगतो न मे भ्राता कस्येदं हस्तलाघवम्।"

हे विषम परिणाम ! यदिच आप का आदि अच्छा है, पर अंत आपका बहुत बुरा है। क्योंकि—

"आदौ तु पितृवद्ज्ञेयो मध्यकाले तु भ्रातृवत्।
शेषकाले मित्रवत् स्यात् स्नानकाले तु शत्रुवत्।"

हे बहुरूप धारी ! कभी आप वैद्य, कभी डाक्टर; कभी हकीम, कभी होमियोपैथिक, कभी सथिया कभी श्याना, कभी ज्योतिषी, कभी सिद्ध, कभी पण्डित, कभी धूर्त, आप अवसरपर सब कुछ बन जाते हो। इसी से आपका यथार्थ तत्व नहीं मालूम पड़ता कि आप कौन हैं जो हो हम तो आप को भय का पिता, भानुमती का भाई, और बाजीगर का बाप जानते हैं आप से क्या माया करें !

"उपाध्याये नटे वैद्ये कुट्टिन्यामथ लम्पटे।
माया तत्र न कर्त्तव्या मायातैरेव निर्मिता।"

हे भाग्यशाली ! जब कभी देश में बिमारी पड़ती है तब सर्वत्र शोक पर आपके घर उन दिनों ही गुलछर्रे उड़ाते हैं इसी से आप यमराज के एजेन्ट है। "यमः स्वभार मिवन्यस्य त्वयि शेते महासुखी ."

हे भारत भूमि भाग्योदय ! जैसे भारत के नाश करने को और अनेक उपाय भगवान् ने रचे हैं उनमें एक आपभी हैं आप का चक्र हजारों मनुष्य नित्य मारता है अतएव आप "मृत्युधावति पञ्चमः ।"

हे सर्व दण्ड विमुक्त ! लेजिस्लेटिव् कौंसिल, सब के लिये 'एक्ट' पास करती है पर आपसे वह भी डरती है, अतएव हम तो और भी डरते हैं, एक गोली में तड़ाका । बस यह कहा सुना क्षमा ! क्षमा ! क्षमा ! अपराध क्षमा ! क्षमा ! क्षमा ! स्तवराज पाठ का पाप क्षमा ! क्षमा ! क्षमा ! राजाधिराज वैद्यराज ! त्राहिमां ! त्राहिमां ! त्राहिमां !

ओं शम् !

(सन् १८८५ ई०)

—:०:—

परिशिष्ट—१

पं० राधाचरण गोस्वामी

आप का जन्म वृन्दावन में ता० २५ फरवरी सन् १८५६ को हुआ था। आप के पिता का शुभ नाम गोस्वामी गल्लू जी उपनाम गुणमंजरी-दास था। ये स्वयं विद्वान् कवि थे। बाल्यकाल में ही पं०राधाचरण की माता का देहान्त हो गया। उस समय आप संस्कृत का अध्ययन कर रहे थे। कुछ समय में अंग्रेजी भाषा के भी अच्छे जानकार हो गये। आप ने "कविकुल कौमुदी" नाम की एक सभा खोली। भारतेन्दु के विचारों से प्रभावित हो कर तथा देशोद्धार की भावना लेकर "भारतेन्दु पत्रिका" सं० १९३७ के लगभग निकाली। गद्य पद्य की अनेक कृतियां तैय्यार किया। कई बंग भाषा की पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद किया। आप की रचनाएँ हैं:—१ श्रीदामा नाटक, २ सती चन्द्रावली, ३ अमर सिंह राठौर नाटक, ४ तन-मन-धन गोसाईं जी के अर्पण नामक प्रहसन।

गोस्वामी जी के तीन उपन्यास जाविश्री, विधवा विपत्ति और सौदामिनी हैं।

राधारमणी वैष्णव सम्प्रदाय पर लिखी पुस्तकें जैसे:—"पतित पावन श्रीगौरांग" छोटी सी जीवनी, "शिक्षामृत", "श्री वैष्णव बोधिनी" इत्यादि हैं।

मेघदूत की तरह "दामिनी-दूतिका", तथा अन्य पुस्तक "विदेशयात्रा-विचार और विधवा-विवाह-विरण" इत्यादि ग्रन्थ लिखा। आपका देहान्त दिसम्बर सन् १९२५ ई० में हुआ।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म संवत् १९०७ भाद्रपद शुक्ल ५ को काशी के प्रतिष्ठित अग्रवाल कुल में हुआ था। आप के पिता बाबू गोपालदास जी ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बचपन से ही साहित्य की ओर अग्रसर हुए। आपने केवल पैंतीस वर्ष की अल्प अवस्था में ही ईश्वर-प्रदत्त बहुमुखी प्रतिभा के कारण हिन्दी साहित्य को विविध विषयों से संपन्न बनाया। आप के समय में साहित्य की बहुमुखी उन्नति हुई। सत्रह वर्ष की अवस्था में "कवि-वचन-सुधा" [१८६८ ई०] नामक पत्रिका निकाली। कुछ समय बाद १८७३ ई० में काशी से "हरिश्चन्द्र मैगज़ीन" निकाली जिसका नाम कुछ काल बाद परिवर्तित कर "हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" रख दिया। भारतेन्दु ने स्त्री शिक्षा के लिये "बाला बोधनी" पत्रिका संवत् १९३१ में निकाली।

प्रतिभाशाली रचनाकार भारतेन्दु ने अपने काव्य ग्रंथों में अनूठापन भर दिया। घायल घनानन्द के विरहकी झलक, सूर, पद्माकर, सेनापति, केशव मतिराम, ठाकुर इत्यादि के कविताओं की छाप इनके काव्य ग्रन्थों पर पड़ी। आशु कवि ने हजारा समस्यापूर्ति की। इनके निबन्धों में रुचि, विचार, भाव और व्यक्तित्व की झलक हर स्थान पर दृष्टिगोचर होती है। कुछ निबन्ध शुद्ध अनुरञ्जन के लिये लिखे गये, जिनके बीच बीच में व्यंग, हास का सुन्दर पुट पाया जाता है।

भारतेन्दु ने प्रकृति का यथा तथ्य वर्णन किया। भारतेन्दु की रचनाओं का संग्रह "भारतेन्दु ग्रन्थावली" नामक पुस्तक में हुआ जो तीन खण्डों में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुई है।

पं० बालकृष्ण भट्ट

आप का जन्म सं० १६०१ वि० में प्रयाग के प्रतिष्ठित मालवीय कुल में हुआ था। पं० बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु के समकालीन थे। इनके निबन्ध "कविवचन सुधा" में समय समय पर निकलते रहे। आपने सं० १६३३ में "हिन्दी प्रदीप" पत्र निकाला।

भट्ट जी संस्कृत साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। अतः आप का मासिकपत्र प्राचीन धार्मिक पुस्तकों का समालोचना, ऐतिहासिक और भूगोल सम्बन्धी जानकारी, साहित्यिक निबन्ध, कविता, नाटक, प्रहसन और उपन्यास इत्यादि से परिपूर्ण रहता था। इसमें अधिकतर भट्ट जी के ही निबन्ध होते थे। आपने विषम परिस्थियों का सामना करते हुये, कठिन परिश्रम से हजारों निबन्ध लिखा। आप अपने युग के प्रगतिशील विचारवान लेखक थे। आपने मध्यम मार्ग का अनुसरण किया जैसे बाल विवाह का विरोध किया पर विधवा विवाह नहीं चाहते थे। उस युग के लेखकों में समाज सुधार की भावना भरी थी। भट्टजी ने मिथ्या चरण और बाह्य ढकोसलों का कड़ा विरोध किया। आप के साहित्यिक निबन्ध प्रचुरमात्रा में हैं। दर्जनों निबन्ध मनोविकारों से सम्बन्ध रखते हैं।

भट्ट जी ने "संयोगिता स्वयंबर" नाटक का समालोचना की, अन्य पुस्तकें लिखीं जैसे रेल का विकट खेल, बाल विवाह नाटक, सौ अजान एक सुजान, नूतन ब्रह्मचारी, कलिराज की सभा तथा चन्द्रसेन नाटक इत्यादि इत्यादि।

आप के निबन्धों का संग्रह "साहित्य सुमन" तथा भट्ट जी के भावात्मक निबन्ध "भट्ट निबन्ध-माला" नाम से प्रकाशित हुए हैं। आपका स्वर्गवास सं० १६७१ वि० में हुआ।

पं० प्रतापनारायण मिश्र

आप कानपुर के निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आप का जन्म सं० १९१३ वि० हुआ था। ये मनमौजी जीव थे। आपने बिना विषय के निबन्ध भी लिख डाले हैं कोई प्रसङ्ग न भी रहने पर बाल की खाल निकालते तथा उदाहरण दे कर किसी बात को हास्य और विनोद से भर देते थे। मिश्र जी किसी वस्तु को लिखने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। इनके निबन्धों में अनेक विचार भरे हैं। और उस युग के अनुसार मिश्र जी का नाम प्रगतिशील लेखकोंमें है। स्वदेशचिन्ता, गोरक्षा इत्यादि विषयों पर इनके निबन्ध अपनी अटपटी भाषा के साथ "ब्राह्मण" पत्रिका में दिखलाई पड़ते हैं जिसका सम्पादन पंडित जी अपने व्यक्तित्व के सहारे करते रहे। आप का फक्कड़पन, निर्भीकता और आत्मीयता व्यक्त करने वाली शैली सर्वत्र रचनाओं में दिखलाई पड़ती है। प्रतापनारायण मिश्र ने कुछ बाबू बंकिमचन्द्र के उपन्यास हिन्दी में अनुवादित किया जैसे "इन्दिरा" "राजसिंह" "राधारानी"। मिश्र जी ने कुछ नाटक और प्रहसन भी लिखे जिनमें कलि कौतुक [रूपक], भारत-दुर्दशा, हठी हम्मीर गौसंकट कलिप्रभाव [नाटक] जुआरी-खुआरी (प्रहसन) प्रमुख हैं।

शैव सर्वस्व (धार्मिक), प्रेम पुष्पावली, मन की लहर, प्रताप संग्रह, मानस विनोद इत्यादि अनेक पुस्तकें भी लिखीं।

मिश्र जी में आत्मश्लाघा अधिक थी। एक बार भारतेन्दु जी ने इनकी रचना की देख सुन्दर समालोचना की, तब से भारतेन्दु के आप अनन्य भक्त हो गये। भारतेन्दु के निधन हो जाने के बाद मिश्र जी की एक शोकपूर्ण कविता पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

बुढ़ापा, गोरक्षा, हिन्दी की हिमायत, हरगङ्गा, तृप्यंताम् इत्यादि कविताएँ आप की प्रसिद्ध हैं। कानपुर के "रसिक समाज" में बैठ कर सुन्दर समस्यापूर्तियों और शृंगारिक कविताओं को सुनाया करते थे। आप एक अच्छे लावनीबाज़ भी थे। आपके आनन्दवादी व्यक्तित्व को हिन्दी साहित्य के प्रेमी कभी भूल नहीं सकते। आपकी मृत्यु सं० १९५१ वि० में हुई।

बाबू बालमुकुंद गुप्त

आप का जन्म पंजाब के रोहतक जिले के गुरमानी ग्राम में सं० १६२२ में हुआ था। पहले आप बहुत दिनों तक उर्दू में ही लिखते रहे। इसके बाद हिन्दी जगत में आकर योग्य सम्पादक कहलाये। कलकत्ते में आप "बंगवासी" और "भारतमित्र" के सम्पादक थे। आपने सम्पादन काल में अनेक अच्छे-अच्छे निबंध लिखे जिसका संग्रह "गुप्त निबन्धा-वली" नाम से हो गया है। आपने अनेक विषयों पर सुन्दर आलोचना की। भारत की दयनीय दशा तथा राजनीतिक द्वन्दों को देख कर अनेक सुन्दर व्यंग पूर्ण प्रबंध लिखे। आप सब विषयों पर हास्य का सुन्दर आवरण चढ़ा देते थे। व्यंग और विनोद की लपेट में सब कुछ कह जाते थे। आप के प्रसिद्ध मनोरंजक प्रबन्ध "शिवशंभु का चिठ्ठा" में से एक उद्धरण दिया जाता है जो कि व्यंगात्मक शैली से परिपूर्ण है।

"भंग छान कर महाराज जी ने खटिया पर लम्बी तानी और कुछ काल सुषुप्ति के आनंद में निमग्न रहे × × × हाथ पाँव सुख में पर विचार के घोड़ों को विश्राम न था। वह ओलों की चोट से बाजुओं को बचाता हुआ परियों की तरह इधर-उधर उड़ रहा था।

गुलाबी नशे में विचारों का तार बँधा कि बड़े लाट फुरती से अपने कोठी में घुस गए होंगे। और दूसरे अमीर भी अपने-अपने घरों में चले गए होंगे। पर वह चील कहाँ गई होगी? × × × × हाँ! शिवशंभु को इन पक्षियों की चिंता है पर वह यह नहीं जानता कि इन अभ्रस्पर्शी अट्टालिकाओं से परिपूरित महानगर में सहस्रों अभागे रात बिताने को झोपड़ी भी नहीं रखते।"

आपकी मृत्यु सं० १६६४ में हुई।

श्रीबद्रीनारायण चौधरी "प्रेमघन"

प्रेमघन जी का जन्म दत्तापुर (मिर्जापुर) में भाद्रपद कृष्ण ६ सं० १६१२ वि० में हुआ था। आप के पिता पं० गुरुचरण लाल जी उपाध्याय संस्कृत साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। प्रेमघन जी को अंग्रेज़ी, फारसी, संस्कृत की शिक्षा मिली। बाल्यकाल से ही आप का अनुराग संगीत और साहित्य की ओर रहा। आप की कवितायें पहिले "कविवचन-सुधा" में प्रकाशित होती रहीं। बाद में आप ने स्वतः सं० १६३८ में "आनन्द कादंबिनी" पत्रिका मिर्जापुर से निकाला। अपनी पत्रिका को प्रेमघन जी अधिकतर अपने ही विचारों और भावों से रंग देते थे। अपनी सुन्दर लेखनी की नोक से उन्होंने कलात्मक ढंग से अपने निबंधों की रचना की। साधारण से साधारण बात को वे इस प्रकार सुन्दर ढंग और अलंकारों से चमत्कृत हो जाते थे। आपके निबंधों में कहीं भी उतावलापन नहीं दिखलाई पड़ता। वे अत्यन्त परिपक्व और परिमार्जित होते थे। अन्त में उनका एक साप्ताहिक पत्र "नागरी-नीरद" सं० १६४६ में निकलना आरंभ हुआ।

आप की पद्यात्मक रचनाएँ "प्रेमघन-सर्वस्व" प्रथम भाग में छप चुकी हैं।

इन्होंने चार रूपक भी लिखे। १–भारत सौभाग्य (अधूरा) २–प्रयाग रामागमन, ३–वृद्धविलाप, ४-वारांगना रहस्य (अधूरा)। चौधुरी जी ने हिन्दी में सर्वप्रथम बाबू गदाधर सिंह की "बंगविजेता" अनुवादित ग्रन्थ तथा लाला श्री निवास के "संयोगिता स्वयंवर" की कटु समालोचना लिखी। आप की बहुत सी रचनाएँ अभी तक पुस्तक रूप में हिन्दी पाठकों के समक्ष नहीं आई। आप का देहावसान सं० १६७६ वि० में हुआ।

—×—

परिशिष्ट—२

क्रम	निबन्ध	प्रकाशनतिथि	पत्र या ग्रंथ
१	मूषक स्तोत्र	२२ नवम्बर १८८५ ई०	भारतेन्दु मासिक पत्र
२	नापित स्तोत्र	आषाढ़ सं० १९३९ वि०	क्षत्रिय पत्रिका
३	कङ्कड़ स्तोत्र	सन् १८८२ ई०	स्तोत्रपंचरत्न (खड्ग विलास) प्रेस पटना
४	मिस्टर बूट	सन् १८८४ ई०	भारतेन्दु पत्रिका
५	अथमदिरास्तवराज	सन् १८८२ ई०	स्तोत्र पञ्चरत्न
६	श्री सेवा पद्धति	सन् १८८२ ई०	स्तोत्र पञ्चरत्न
७	अंगरेजस्तोत्र लिख्यते	सन् १८८२ ई०	स्तोत्र पञ्चरत्न
८	पाँचवें पैगम्बर	१५ दिसम्बर १८७३ ई०	हरिश्चन्द्र मैगज़ीन
९	सबैजात गोपाल की	६ नवम्बर १८७३ ई०	हरिश्चन्द्र मैगज़ीन
१०	बधूस्तवराज	जून १९०६ ई०	हिंदी प्रदीप तथा भट्ट-निबन्धावली (ना. प्र. स०)
११	पत्नीस्तव	मार्च १९०४ ई०	,, ,,
१२	कौआपरी और आशिकतन	अप्रैल १८९८ ई०	,, ,,
१३	मेला ठेला	२८ जून १८८५ ई०	भारतेन्दु पत्रिका
१४	प्रेरित पत्र	सन् १९०४ ई०	हिंदी प्रदीप
१५	पञ्च महाराज	सन् १९०३ ई०	हिन्दी प्रदीप
१६	रङ्गीला दृश्य	सन् १९०१ ई०	हिन्दी प्रदीप
१७	दो चण्डूबाजों की बातचीत	अक्टूबर १९०५ ई०	हिन्दी प्रदीप
१८	वाजिद अलीशाह		ब्राह्मण पत्रिका तथा प्रताप निकुंज

१९ कलिकोष		ब्राह्मण पत्रिका तथा प्रताप निकुंज
२० होली है		ब्राह्मण पत्रिका तथा प्रताप निकुंज
२१ मेले का ऊँट	१२ जून १९०१ ई०	शिवशम्भु का चिट्ठा, भारत मित्र
२२ मनुष्य गणना	६ मार्च १९०१ ई०	भारत मित्र
२३ एक दुराशा	१८ मार्च १९०५ ई०	भारत मित्र
२४ परिहास–प्रथम	श्रावण सं० १९४२ वि०	आनन्दकादम्बिनी।
२५ परिहास–द्वितीय	फाल्गुन-चैत १९४२ वि०	,,
२६ रेलवे स्तोत्र	१८ अगस्त १८८३ ई०	भारतेन्दु पत्रिका
२८ वैद्यराज स्तवराज	२३ अक्टूबर १८८५ ई०	भारतेन्दु पत्रिका